तन्त्र ग्रन्थमाला नं0 22

कुब्जिकातन्त्रम्

प्रदीप कुमार राय

प्राच्य प्रकाशन

वाराणसी-221002

तन्त्र ग्रन्थमाला नं० 23

कुब्जिकातन्त्रम्

(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक

प्रदीप कुमार राय

प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी

संस्करण - 2009

प्रकाशक :

प्राच्य प्रकाशन

कुश कुमार राय
पोस्ट बाक्स नं. 2037
सी 21/3-सी (होटल हिन्दुस्तान कम्पाउण्ड)
मलदहिया, वाराणसी - 221002 (भारत)

© प्रेमचन्द महताब राय शोध संस्थान
लमही, (वाया सारनाथ)
वाराणसी — 221007 (भारत)

मूल्य :— 100.00 रुपये

मुद्रक : गौतम प्रिण्टर्स, जगतगंज, वाराणसी-2

सूचीपत्र

प्रथम पटल : १ - १३

शाश्वत चरम सारतत्त्व बृहद्योनि (परमा शक्ति) का विवरण; काली, तारा प्रभृति दश महाविद्या के महामन्त्र का कथन; पितृगण कौन हैं—उनका विवरण; कलिकाल में आगमोक्त विधान से मोक्षदा कालिका देवी शीघ्र फल-प्रदा हैं; श्री गुरु के मुख से पापनाशिनी महाविद्या के मन्त्रादि का ग्रहण कर्त्तव्य है; प्रकृति के बिना ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर कोई भी कार्य करने में अक्षम हैं; कृष्ण एवं कृष्णा (काली) में अभिन्नता का वर्णन एवं दश महाविद्या के नामों के गूढ़ार्थ का कथन।

द्वितीय पटल : १४ - २२

मन्त्रार्थ कथन—क्रीं, हुं, हं, क्रूं, ह्रीं, दूं—प्रभृति बीज-मन्त्रों का अर्थविश्लेषण; महामाया के एकाक्षरी, अष्टादशाक्षरी, एकविंशत्यक्षरी प्रभृति मन्त्रादि के प्रत्येक अक्षर का विशद व्याख्यान; निर्गुण एवं सगुण-द्विविध मन्त्र के फल का कथन।

तृतीय पटल : २३ - ३५

भुवनेश्वरी, भैरवी, त्रिपुरा, कामाख्या, अन्नपूर्णा, दुर्गा प्रभृति महाशक्ति के बीजमन्त्रादि के अर्थ का विश्लेषण।

चतुर्थ पटल : ३६ - ३९

छिन्नमस्ता के परम गोपनीय बीजमन्त्रादि; बगलामुखी के मन्त्रादि एवं स्तम्भन, मारण, उच्चाटन प्रभृति कार्यों का निर्देश; मातङ्गीदेवी के मन्त्रादि का कथन।

पञ्चम पटल : ४० - ४२

मन्त्रचैतन्य-कथन—धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्षप्रदाय मन्त्र-चैतन्य की पद्धति का निरूपण; नादबिन्दुयुक्त वर्णमयी शक्ति षट्चक्र को भेद कर सनातन

चित्शक्तिरूप में प्रकाशित होते हैं—यह चैतन्य या चित्शक्ति ही योगियों की योगसाधना का विषय है; कुलकुण्डलिनी के ध्यान से ही उत्तम मन्त्र-चैतन्य का लाभ; जो सहस्रार में चित्शक्तिरूप में अवस्थिता हैं, वही मन्त्रचैतन्य स्वरुपा एवं आनन्द-दायिनी हैं; उनके ध्यानादि प्रक्रिया का वर्णन।

षष्ठ पटल : ४३ - ५३

योनिमुद्राकथन—मूलाधार से कुलकुण्डलिनी शक्ति का क्रमान्वय से स्वाधिष्ठान, मणिपूर इत्यादि चक्रों को क्रमशः भेद कर सहस्रार में आनयनकार्य को ही तन्त्र में 'योनिमुद्रा' कहा गया है; उनके ध्यानादि एवं विविध प्रकार से प्रकाशन का विवरण।

सप्तम पटल : ५४ - ६४

दिव्य, वीर एवं पशुभाव का कथन, सिद्ध पीठस्थानादि का विवरण, किन देवी की पूजा में कौन-कौन से पुष्प प्रशस्त हैं, उसका विवरण; कुलवृक्ष, कुलस्त्री एवं कुलगृह के प्रति सम्मान-प्रदर्शन एवं कुमारी-पूजादि का निर्देश।

अष्टम पटल : ६५ - ७२

मारण, उच्चाटन, मोहन एवं काम्यसिद्धि के विषय में वर्णन; किस तिथि में, किस स्थान में, किस मन्त्र से जपादि कार्यों को करने पर अभीष्ट-सिद्धि होती है, उसका विस्तृत विवरण; वीरभाव से साधन का कथन; काली की पूजा एवं होमादि का निर्देश।

नवम पटल : ७३ - ८१

मन्त्रसिद्धि का लक्षण; मन्त्रसिद्धि के उपाय एवं पञ्चाङ्ग-पुरश्चरण-विधि का विविध विवरण।

*

कुब्जिकातन्त्रम्

ॐ

।। श्री गणेशाय नमः ।।

कुब्जिकातन्त्रम्

प्रथमः पटलः

श्रीपार्वत्युवाच–

देवदेव महादेव परमेश पुरातन ।
नन्दीश सर्वभूतेश निरञ्जन परात्पर ।।१।।
किं त्वया जप्यते नाथ किमर्थं वापि तस्य च ।
केनोपायेन देवेश निरञ्जनपदं लभेत् ।।२।।
सारात् सारतरं ब्रूहि यदि मे विद्यते दया ।
समयाचारणविधिं साधनञ्च प्रकाशय ।।३।।
चैतन्यं सर्वभूतानां शब्द ब्रह्मेति यत् पुनः ।
तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि साधकानां हिताय च ।।४।।

पार्वती ने कहा— हे परमेश्वर! देवदेव, महादेव! आप ही सर्वापेक्षा आदि एवं पुरातन हैं। हे नन्दीश! हे सर्वभूतेश्वर निरञ्जन! आप ही श्रेष्ठतर से भी श्रेष्ठतम हैं ।।१।।

हे नाथ ! आप सर्वदा क्या जप करते हैं एवं किसलिए वैसा जप करते हैं तथा किस उपाय से शाश्वत पद का लाभ किया जा सकता है? उसके चरम एवं सारतत्त्व का वर्णन मेरे निकट करें ।।२।।

यदि मेरे प्रति आपकी दया है, उन समस्त विषयों की समयाचार पद्धति को भी विशदरूप से मेरे निकट प्रकट करें ।।३।।

जो सर्वभूतों के चैतन्यरूप में विद्यमान हैं एवं जो शब्दब्रह्म-स्वरूप हैं, साधकों के हित के लिए मैं उन सभी के विषय में श्रवण करने की इच्छा करती हूँ ।।४।।

यदि मे प्राणनाथ स्यात् निगूढ़ार्थं प्रकाशय ।
शपथं मे महादेव बृहद्योनिं प्रकाशय ।।५।।
वासनासिद्धिरूपञ्च भावसिद्धिं च यत् पुनः ।
वेदानां सारगम्यञ्च तत्सारं मे प्रकाशय ।।६।।

श्रीसदाशिव उवाच–

साधु साधु त्वया देवि यदुक्तं तत् शृणुष्व मे ।
सारात् सारतरं देवि परादपि परं परम् ।।७।।
नित्यानन्दात् परानन्दं, शब्द ब्रह्म स्वरूपकम् ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं, सत्यं सत्यं पुनः पुनः ।।८।।
न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कदाचन ।
इदं तु परमं गुह्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।।९।।
यज् ज्ञात्वा च महादेवि योगीशोऽस्मि सदाशिवः ।
जन्मान्तरसहस्रेण कथितुं नैव शक्यते ।।१०।।

यदि आप मेरे प्राणनाथ हैं, तो इन समस्त विषयों के निगूढ़ार्थ को मेरे निकट प्रकाशित करें। हे महादेव! मेरी शपथ है, आप मेरे निकट बृहद्योनि (परमाशक्ति) को प्रकाशित करें ।।५।।

जो परमाशक्ति वासनासिद्धिरूपा हैं, एवं भावसिद्धि के विषय हैं, जो वेदों के सारगम्य हैं, उसके सारांश को मेरे निकट प्रकाशित करें ।।६।।

श्रीसदाशिव ने कहा— हे देवि! आपने जिन अति उत्तम प्रश्नों को किया है, उनका उत्तर दे रहा हूँ, श्रवण करें। हे देवी! जो सार से भी सारतर है एवं श्रेष्ठतर से भी श्रेष्ठतम सत्ता है, वह नित्यानन्द से भी श्रेष्ठतर आनन्द है एवं शब्दब्रह्म ही उसका स्वरूप है। यह शाश्वत सत्य है, पुनः पुन; सत्य है एवं निश्चित सत्य है ।।७-८।।

इस तथ्य को कदापि किसी भी प्रकार से प्रकाशित न करें। त्रिभुवन में यह तथ्य परम गोपनीय एवं दुर्लभ है ।।९।।

हे महादेवि ! इस तत्त्वज्ञान के फलस्वरूप ही मैं योगीश्वर सदाशिव हूँ। सहस्र जन्मान्तर काल पर्यन्त इसका वर्णन करने पर भी मैं इस तत्त्व को सम्पूर्ण रूप से विवृत करने में समर्थ नहीं होऊँगा ।।१०।।

तव स्नेहान्महादेवि कथयिष्यामि तच्छृणु ।
गोपितव्यं गोपितव्यं गोपितत्वं त्वया पुनः ।।११।।
न प्रकाश्यं महादेवि पशोरग्रे कदाचन ।
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं योनिमुद्रां न वेत्ति यः ।।१२।।
न सिद्ध्यति वरारोहे कल्पकोटिशतै रपि ।
कथयामि महामन्त्रं मन्त्रार्थं त्वं सुरेश्वरि ।।१३।।
येन विज्ञानमात्रेण सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ।
केवलं भावशुद्ध्या च मन्त्रार्थं प्राण वल्लभे ।।१४।।
केवलं ज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो ध्रुवं नरः ।
काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी ।।१५।।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्याधूमावती प्रिये ।
बगला चैव मातङ्गी कमला च प्रकीर्त्तिता ।।१६।।
ब्रह्मविष्णु महेशाद्यैश्चतुर्वेदै र्नमस्कृता ।
भोगदा मोक्षदा देवी कोटि-ब्रह्माण्डगोपिता ।।१७।।

हे महादेवि ! आपके प्रति स्नेहवश इस समस्त तत्त्वों को मैं विवृत कर रहा हूँ, श्रवण करें। आप सर्वप्रयत्न से सर्वदा इन समस्त विषयों को गोपन करें।।११।।

हे महादेवि ! पशु के निकट अर्थात् पश्वाचारी साधक के निकट कदापि इसे प्रकाशित न करें। हे वरारोहे! जो व्यक्ति मन्त्रार्थ, मन्त्रचैतन्य एवं योनिमुद्रा को अवगत नहीं है, शतकोटि कल्पों में भी उसे मन्त्रसिद्धि-लाभ नहीं होता है। हे सुरेश्वरि! मैं आपको महामन्त्र एवं मन्त्रार्थ को बता रहा हूँ ।।१२-१३।।

इस महामन्त्र एवं मन्त्रार्थ के ज्ञानलाभ मात्र से ही साधक सर्वसिद्धियों का लाभ करता है। हे प्राणवल्लभे! केवल भावशुद्धि मात्र का ही नाम मन्त्रार्थ है।।१४।।

इस विषय में सम्यक् ज्ञानलाभ करने पर, मानव निश्चय ही जीवन्मुक्ति का लाभ करता है। काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गी एवं कमला—ये सभी महाविद्या (दशमहाविद्या) के नाम से अभिहिता हैं ।।१५-१६।।

दशमहाविद्या के रूप में प्रकीर्तिता परमाशक्ति ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर के द्वारा एवं चतुर्वेदों में वन्द्यनीया हैं। वह महादेवी भोग एवं मोक्षदायिनी हैं एवं उनमें अनन्त ब्रह्माण्ड गुप्तरूप में अवस्थित हैं। अर्थात् कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड प्रकाशित होने पर भी एवं वह तत्समुदय के प्रकाश के कारण होने पर भी, ब्रह्माण्ड में भी उनका अवस्थान अतिशय गुप्त है ।।१७।।

चतुर्वर्गप्रदा देवी निर्वाण-पददायिनी।
देव देव प्राणमयी सर्वदेव-स्वरूपिणी।।१८।।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां ध्यानगम्या जगन्मयी।
सृष्टिस्थितिकरी देवी विष्णुरूपा महेश्वरी।।१९।।
मणिमण्डपसंस्था च महाकाल-निवासिनी।
अस्याः श्रवणमात्रेण जीवन्मुक्तश्च साधकः।।२०।।
कोणत्रयसमुद्भूतां कालीं साधितमुद्यता।
तत् श्रुत्वा पितरः[1] सर्वे नृत्यन्ति हृष्टमानसाः।।२१।।
नृत्यन्ति किन्नराः सर्वे गाथां गायन्ति गायकाः।
अतिगोप्यापि सा विद्या कलौ पूर्णफलप्रदा।।२२।।

वह (परमाशक्ति) चतुर्वर्ग-प्रदायिनी एवं निर्वाणपद प्रदायिनी हैं। वह देवादि देव के भी प्राणस्वरूपा एवं सर्वदेवस्वरूपिणी हैं ॥१८॥

वह जगन्माता ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर के ध्यानगम्या हैं अर्थात् ध्यानयोग के व्यतिरेक से ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर भी उन्हें जानने में सक्षम नहीं हैं। सृष्टि एवं स्थितिकारिणी-रूप में देवी महाशक्ति ब्रह्मा एवं विष्णुशक्तिरूपा हैं एवं प्रलयात्मिका-रूप में वह मणिमण्डपमध्यस्थ महाकाल के शक्तिरूप में विराजमान हैं। उनके विषय में श्रवण-मात्र से ही साधक जीवन्मुक्ति का लाभ करता है ॥१९-२०॥

कोई कोणत्रय-समुद्भूता काली (आद्याशक्ति) के साधन में उद्यत हुआ है, ऐसा श्रवण करने पर उत्फुल्लचित्त से पितृगण एवं किन्नरगण नृत्य करने लगते हैं एवं गायकगण विविध गाथाओं का गान करने में प्रवृत्त हो जाते हैं। यह काली साधना अतिशय गोपनीय है एवं कलियुग में यह शीघ्र फलदायक होता है ॥२१-२२॥

---

१. पितृगण अर्थात् साधक के पितृपुरुषगण। यथा-पिता, पितामह, प्रपितामह, वृद्धप्रपितामह इत्यादि। 'वायुपुराण' के ७१वें अध्याय में देव-पितृगण के सम्बन्ध में निम्नलिखित वर्णन उपलब्ध होता है—

शांसपायन ने जिज्ञासा की—"पितृगण कौन हैं या किन लोगों को कहा जाता है? वे किनके सन्तान हैं? वे कहाँ निवास करते हैं एवं किस पितृ-परिचय से वे परिचित हैं? जो पितृगण देवताओं के भी पितृस्थानीय हैं, उनकी उत्पत्ति के विषय में सुनने के लिए हम अभिलाषी हैं। किस-किस श्राद्ध में पिता, पितामह एवं प्रपितामह के नामोल्लेखपूर्वक पिण्डत्रय-प्रदान करने का प्रयोजन है एवं कौन पितृगण स्वर्गलोक में तथा पितृगणों में कौन

नरक (लोक) में वास करते हैं? पितृगणों के उद्देश्य से जो समस्त पिण्ड-दान किया जाता हे, वे सभी किस प्रकार उन समस्त पितृगणों के समीप उपस्थित होता है एवं नरक में अवस्थानकारी पितृगण किस प्रकार, श्राद्ध में प्रदत्त पिण्ड-फल को प्राप्त होते हैं? स्वर्गस्थित देवगण भी तदीय पितृगणों का यजन करते हैं—यह मैंने सुना है। आप इन समस्त प्रश्नों के उत्तर मुझे विस्तृतरूप में प्रदान करें ॥''

इसके उत्तर में सूत कहने लगे—''मन्वन्तरों में पितृगण जन्मलाभ करते हैं। पितृगण देवता नहीं हैं। अतीत एवं भविष्यत् के कालभेद से पितृगणों में ज्येष्ठत्व एवं कनिष्ठत्व का निर्द्धारण किया जाता है। पूर्ववर्ती मन्वन्तर में जो-जो पितृगण अतीत हो चुके हैं एवं वर्तमान मन्वन्तर में जिन समस्त पितृगणों ने जन्मलाभ किया है, उनका विवरण प्रदान कर रहा हूँ। मानवगण श्रद्धा के साथ इनके उद्देश्य से जो कुछ प्रदान करते हैं, वही इनका (अर्थात् इनके लिए किया गया) श्राद्ध है। भगवान् ब्रह्मा ने जब प्रथमतः देवताओं का सृजन किया था, तब वे (= ब्रह्मा) उनका (= देवताओं का) दर्शन कर, किसी प्रकार उनका अभिनन्दन नहीं किया था। इसलिए देवगणों ने ब्रह्मा की उपेक्षा कर, स्वयं ही फलभोग की कामना से अपने अभिलाषा के अनुसार सृष्टि करना प्रारम्भ कर दिया। ऐसा देखकर ब्रह्मा ने देवगणों को इस प्रकार अभिशाप प्रदान किया—''आप सभी मूढ़ एवं (आप सभी) नष्ट हो जायेंगे एवं किसी भी विषय में आपलोगों को यथार्थ ज्ञान नहीं होगा।'' इस अभिशाप को श्रवण कर, देवगणों ने अपराधों की क्षमा के लिए ब्रह्मा के निकट प्रार्थना करना प्रारम्भ किया। तब उनकी प्रार्थना के उत्तर में ब्रह्माजी उनसे कहने लगे—''आपलोगों को आपके द्वारा कृत पाप के लिए प्रायश्चित्त करना होगा, क्योंकि आपने व्यभिचार किया है। आप लोगों के द्वारा सृजित पुत्रगणों को पूछने पर, वे ही आप लोगों को प्रायश्चित्त के विधान के सम्बन्ध में उपदेश देंगे एवं उसके द्वारा ही आपलोग प्रकृत ज्ञानलाभ करेंगे।'' तब देवगणों ने ब्रह्मा के उपदेश के अनुसार, उनके पुत्रों से प्रायश्चित्त के विधान के सम्बन्ध में पूछने पर, उनलोगों ने देवताओं से कहा—''काय (कर्म), मन एवं वाक्य के द्वारा प्रायश्चित्त को सम्पन्न करना है।'' पुत्रों के इस उत्तर से देवगणों को ज्ञानोदय हो गया। तब उन लोगों ने पुत्रों से कहा—''चूंकि तुमलोगों ने हमें ज्ञान प्रदान कर हमें प्रबुद्ध किया है, इसलिए तुमलोग ही हमारे पिता हो।'' तब ब्रह्मा ने देवगणों से कहा—''आपलोगों के इस कथन की अन्यथा या व्यतिक्रम नहीं होगा।'' ब्रह्मा की इस उक्ति के फलस्वरूप देवगणों के द्वारा सृष्ट पुत्रगणों ने 'पितृत्व' का लाभ किया एवं पितृगणों (= देवगणों) ने 'पुत्रत्व' का लाभ किया। देवसृष्ट ये पुत्रगण ही 'पितृगण' नाम से परिचित हैं। पितृगण ही देवता हैं एवं देवगण ही पितृगण हैं। ये परस्पर के पिता हैं।

स्वर्ग में 'सान्तानिक' नाम से एक दीप्त लोक विद्यमान हैं। उस लोक में 'वैराज' नाम से देवतागणों के भी आदि देवता निवास करते हैं। भगवान् ब्रह्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में इन देवताओं को अपनी योग एवं तपस्या के बल से सृष्ट किया था। ये 'आदिदेव' नाम से परिचित हैं। ये संख्या में सात हैं एवं ये त्रिभुवनवासी सुर, नर, देवताप्रभृति सभी के लिए पूज्य हैं। ये अपने योग के बल से सोम को वर्द्धित करते हैं। इसके अतिरिक्त वायुपुराण के ५६वें अध्याय में तथा ब्रह्माण्ड पुराण के ६१वें अध्याय में अन्यान्य पितृगणों के सम्बन्ध में उल्लेख किया गया है।

श्रुतिस्मृतिविधानेन पूजा कार्या जगत्त्रये।
आगमोक्तविधानेन कलौ देवान् यजेत् सुधीः ।।२३।।
नहि देवा प्रसीदन्ति कलौ चान्यविधानतः।
कालिका मोक्षदा देवि कलौ शीघ्रफल प्रदाः ।।२४।।
गुरोर्मुखान्महाविद्यां गृह्णयात् पापनाशिनीम्।
ब्रह्माणी कुरुते सृष्टिं न तु ब्रह्मा कदाचन।।२५।।
अतएव महेशानि ब्रह्मा प्रेतो न संशयः।
पालनं वैष्णवी देवी न तु विष्णुः कदाचन।।२६।।
अतएव महेशानि विष्णुः प्रेतो न संशयः।
रुद्राणी कुरुते ग्रासं न तु रुद्रः कदाचन।।२७।।
अतएव महेशानि रुद्रः प्रेतो न संशयः।
ब्रह्मविष्णुमहेशाद्या जडाश्चैव प्रकीर्त्तिता।।२८।।

सत्य, त्रेता एवं द्वापर-इन युगत्रय में श्रुति-स्मृति के विधान के अनुसार देवता की पूजा करें। किन्तु धीमान् व्यक्ति कलियुग में आगमोक्त विधन के अनुसार देवता की उपासना करें। अन्य विधान के अनुसार पूजा करने पर कलियुग में देवता प्रसन्न नहीं होते हैं। मोक्षदायिनी कालिका देवी ही कलियुग में अतिशीघ्र फल प्रदान करती हैं ॥२३-२४॥

गुरु के निकट से इस पापनाशिनी महाविद्या की शिक्षा को प्राप्त करें। ब्रह्मा की शक्ति की सृष्टि ब्रह्माणी ही करतीं हैं। शक्तिहीन अकेले ब्रह्मा कदापि कुछ भी सृष्टि नहीं करते हैं ॥२५॥

हे महेशानि ! इसी कारण ब्रह्मा को निःसन्देह रूप से मृत (शक्तिहीन) कहा जा सकता है। वैष्णवी देवी अर्थात् विष्णु की शक्ति ही इस ब्रह्माण्ड-रूप सृष्टि का पालन करती हैं। शक्तिहीन अकेले विष्णु कदापि कुछ भी प्रतिपालन नहीं करते हैं ॥२६॥

हे महेशानि ! इसी कारण शक्तिहीन विष्णु को भी निःसन्दिग्ध-रूप से मृत (कर्मशक्तिहीन) कहा जा सकता है। रुद्राणी अर्थात् रुद्र की शक्ति ही प्रलय के समय सृष्टि को ग्रास कर लेतीं हैं। अकेले शक्तिहीन रुद्र कदापि इन कार्यों में कुछ भी नहीं करतें हैं ॥२७॥

हे महेशानि ! इसीलिए शक्तिहीन अकेले रुद्र भी निःसंशय-रूप से मृत हैं। इस विषय में कोई सन्देह नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर—इनमें से प्रत्येक **ही अकेले एवं शक्तिविहीन होने पर 'जड़' अर्थात् 'मृत' कहे जाते हैं ॥२८॥**

प्रकृतिञ्च विना देवि सर्वकार्याक्षमी ध्रुवम् ।
धर्माधर्मादिकं यस्मात् कुरुते साधकोत्तमः ।।२९।।
तत् सर्वमनुगृह्णाति वामिका च न संशयः ।
सम्प्रदाय-विधानेन कर्त्तव्यञ्च महेश्वरि ।।३०।।
सम्प्रदायविहीनानां फलं न स्यान्महेश्वरि ।
या तु कृष्णा सैव कृष्णास्तथा ब्रह्म प्रकीर्त्तितः ।।३१।।
अभेदं चिन्तयेद् यस्तु मुक्तिस्तस्य करे स्थिता ।
विभिन्नं चिन्तयेद् यस्तु मूढबुद्धिः स पातकी ।।३२।।
भेदको नरकं गच्छेद् यावदिन्द्राश्चतुर्दश ।
अभेदं चिन्तयेद् यस्तु स योगी नात्र संशयः ।।३३।।
कलौ कृष्णत्वमासाद्य वृन्दावनविहारिणी ।
वंशीनाद-विनोदेन मोहयत्यखिलं जगत् ।।३४।।

प्रकृति-वर्जित-रूप में ये देवता-त्रय किसी भी कार्य को करने में सक्षम नहीं हैं। साधक धर्माधर्म—जो कुछ भी करें, धर्माधर्म-रूप समस्त कार्यों की फलग्रहणकारिणी भी प्रकृतिरूपिणी महाशक्ति ही हैं। इस विषय में कुछ भी सन्देह नहीं है। अतः, प्रत्येक साधक को स्व-स्व सम्प्रदाय में कथित विधान के अनुसार महाशक्ति की साधना करनी चाहिए ।।२९-३०।।

हे महेश्वरि ! जो (पद्धति) किसी भी सम्प्रदाय की साधनापद्धति नहीं है, एवं विध सम्प्रदाय बहिर्भूत पद्धति से साधना करने पर, उसके द्वारा सिद्धि-लाभ नहीं किया जा सकता है। जो कृष्णा अर्थात् काली हैं, वही कृष्ण हैं एवं वही ब्रह्मा (अन्य मत में, ब्रह्म) हैं ।।३१।।

इस प्रकार जो उक्त दशमहाविद्याओं में अभेद की कल्पना करते हैं, मुक्ति या मोक्ष उनके करतलगत हैं। जो मूढ़ उन समस्त महाविद्याओं में पार्थक्य (विभिन्नता या प्रभेद) की कल्पना करते हैं, वे हीनबुद्धि व्यक्ति पातकी बन जाते हैं।।३२।।

एवं विध भेदबुद्धि-परायण व्यक्ति, यावत्कालपर्यन्त चतुर्दश इन्द्र राज करते हैं, तावत्काल-पर्यन्त नरक में वास करते हैं एवं जो उन दशमहाविद्याओं को अभिन्न, भेदरहित, एक-ज्ञान से अभेद बुद्धि से चिन्तन करते हैं, वह व्यक्ति ही प्रकृत योगी हैं, इस विषय में किञ्चिन्मात्र भी सन्देह नहीं है ।।३३।।

जो काली हैं, वही कलियुग में कृष्ण-रूप का परिग्रहण कर, वृन्दावन में लीला-विहार किये एवं स्वीय वंशीध्वनि से त्रिजगत् को मोहित किये थे ।।३४।।

कालिका दुःखहन्त्री च दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ।
कलौ कृष्णत्वमासाद्य शुक्लापि नीलरूपिणी ।।३५।।
लीलया वाक्प्रदा चैव तेन नीलसरस्वती ।
तारकत्वात् सदा तारा तारिणी च प्रकीर्त्तिता ।।३६।।
सृष्टिस्थितिकरी देवी भुवनेशी च कथ्यते ।
श्रीदात्री च यदा देवी श्रीविद्या सा प्रकीर्त्तिता ।।३७।।
निर्गुणा च महादेवी षोडशी परिकीर्त्तिता ।
भैरवी दुःखसंहन्त्री यमदुःख-विनाशिनी ।।३८।।
कालभैरव-भार्या च भैरवी परिकीर्त्तिता ।
त्रिशक्ति-कायदा देवी छिन्ना चैव सुरेश्वरि ।।३९।।
त्रिगुणा च महादेवी मोहिनी मोक्षदा ध्रुवम् ।
धूमावती महामाया धूम्रासुर-निसूदिनी ।।४०।।
धूमरूपा महादेवी चतुर्वर्गप्रदायिनी ।
जगन्माता जगद्धात्री जगतामुपकारिणी ।।४१।।

कालिकारूप में जो दुःखहन्त्री हैं, वह ही दुर्गा-रूप में दुर्गतिनाशिनी हैं। जो दुर्गा हैं, वह ही शुक्लवर्णा सरस्वती हैं एवं वह ही कलियुग में लीलावश कृष्णवर्णा, वाक्प्रदा (कवित्वदायिनी), नीलसरस्वती की मूर्त्ति का परिग्रहण की हैं ।।३५।।

जीवों का त्राण करने के कारण वह सर्वदा ही 'तारा' एवं 'तारिणी' नाम से अभिहिता होतीं हैं ।।३६।।

वह ही सृष्टि एवं स्थिति-कारिणी 'भुवनेश्वरी' नाम से अभिहिता होती हैं एवं श्रीदात्री-रूप में वह ही 'श्रीविद्या' के नाम से कहीं जातीं हैं ।।३७

निर्गुणा होने पर भी वह ही गुणसम्पन्ना षोडशी के नाम से अभिहिता होतीं हैं। पुनः वह ही भैरवी-रूप में कालभैरव-भार्या, जीवगणों के दुःखहन्त्री एवं यमदुःख-विनाशिनी बन जाती हैं। हे सुरेश्वरि! वह ही त्रि-शक्ति की आधारभूता छिन्न-मस्तक 'छिन्नमस्ता' हैं ।।३८-३९।।

वह ही त्रिगुणात्मिका मोहिनी हैं, वह ही ध्रुव मोक्षदायिनी हैं एवं वह ही धूम्रासुर-विनाशिनी, धूमरूपा-चतुर्वर्ग-प्रदायिनी, महादेवी महामाया हैं। वह ही जगत् के हितकारिणी जगन्माता जगद्धात्री हैं ।।४०-४१।।

व-कारे वारुणी देवी ग-कारे सिद्धिदा स्मृता ।
ल-कारे पृथिवी चैव चैतन्यात्मा प्रकीर्त्तिता ।।४२।।
मातङ्गी मदशीलत्वात् मतङ्गा सुरनाशिनी ।
सर्वापत्तारिणी देवी मातङ्गी परिकीर्त्तिता ।।४३।।
वैकुण्ठवासिनी देवी कमला च प्रकीर्त्तिता ।
पातालवासिनी देवी लक्ष्मीरूपा च सुन्दरी ।।४४।।
एता दश महाविद्या सिद्धविद्या च कथ्यते ।
धर्मार्थमोक्षदा नित्यं चतुर्वर्ग-फलप्रदा ।।४५।।
येन केन प्रकारेण कलौ पूर्णफलप्रदा ।
निर्धने कृपणे चैव विशेषात् पापमोचनी ।।४६।।
पाषण्डे च शठे चैव निर्गुणे चैव निन्दके ।
अभक्तेषु पुत्रेषु आज्ञाहीनेषु सुन्दरि ।।४७।।
न प्रकाश्यमिदं भद्रे शपथं में ध्रुवं सदा ।
सर्वलक्षणयुक्ताय दद्याच्चैव महेश्वरि ।।४८।।

वह ही वगलारूपिणी चित्शक्ति हैं एवं वह ही आत्मारूपिणी हैं। व-कार के द्वारा वारुणी देवी (वरुण की शक्ति) हैं। ग-कार के द्वारा सिद्धिदायिनी शक्ति हैं एवं ल-कार के द्वारा पृथिवी अर्थात् पार्थिव जड़शक्ति का निर्देशन करती हैं। अर्थात् वगलारूप में आद्याशक्ति, चित् एवं पाञ्च भौतिक शक्ति इन उभयाविध शक्ति होने पर, सिद्धि-प्रदान करती हैं ।।४२-४३।।

वह आद्याशक्ति वैकुण्डवासिनी-रूप में 'कमला' नाम से कही जाती हैं। पातालवासिनी-रूप में वह ही 'परमासुन्दरी लक्ष्मी' नाम से अभिहिता होती हैं।।४४।।

इन दश महाविद्याओं को 'सिद्धविद्या' नाम से अभिहित किया जाता है। इनमें से प्रत्येक (महाविद्या) ही सर्वकाल में धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष—इन चतुर्वर्ग फलों को प्रदान करतीं हैं ।।४५।।

जिस किसी भी विधान से आराधना करने पर ही, कलियुग में ये पूर्णसिद्धि प्रदान करती हैं। विशेषरूप से निर्धन एवं कृपण व्यक्तियों को ये पूर्णफल प्रदान करतीं हैं एवं पापियों के पापों का मोचन करतीं हैं ।।४६।।

हे सुन्दरी ! मेरी शपथ है—आप कदापि पाषण्ड, शठ, निर्गुण, निन्दुक, भक्तिहीन व्यक्ति एवं अनाज्ञावाही पुत्र के निकट इस साधना को प्रकट न करें। हे महेश्वरि! मात्र सर्वसुलक्षणों से युक्त गुणी व्यक्ति के निकट इस महाशक्ति की साधना को प्रदान (प्रकाशित) करें ।।४७-४८।।

आसाञ्चैव समाना हि नास्ति त्रिभुवनेध्रुवम् ।
एकोच्चारण मात्रेण सर्वपापात् प्रमुच्यते ।।४९।।
स्मरणेनैव देवेशि मुच्यते भवबन्धनात् ।
निर्गुणः सगुणो ब्रह्म शिवो ज्ञेयः सनातनः ।।५०।।
निर्गुणाच्चैव संजाता बिन्दवस्त्रयः एव च ।
ब्रह्मबिन्दुर्विष्णुबिन्दु रुर्द्रबिन्दुर्महेश्वरि ।।५१।।
आद्य बिन्दुस्ततो नादो नादाच्छक्तिसमुद्भवः ।
नादरूपा महेशानि चिदरूपा परमाकला।।५२।।
नादाच्चैव समुत्पन्ना अर्द्धबिन्दुर्महेश्वरि ।
सार्द्धत्रितयबिन्दुभ्यो भुजङ्गी कुलकुण्डली ।।५३।।
निर्गुणा सगुणा देवी ब्रह्मरूपा सनातनी ।
चैतन्यरूपिणी देवी सर्वभूत-प्रकाशिनी ।।५४।।
सर्वतत्त्वमयी देवी सर्वतत्त्व प्रकाशिनी ।
त्रिगुणा च महेशानि! त्रिगुणस्य प्रकाशिनी ।।५५।।

त्रिभुवन में उक्त महाविद्या के साधन के समतुल्य अन्य कोई साधना नहीं है। इनके मन्त्र एकबार मात्र उच्चारण करने पर ही साधक सर्वपापों से मुक्ति लाभ कर लेता है ।।४९।।

इन (महाविद्याओं) के मन्त्र का स्मरण-मात्र करने से ही साधक भवबन्धन से मुक्ति-लाभ कर लेता है। हे देवेशि! ब्रह्म निर्गुण होने पर भी सगुण, शिवरूपी (कल्याणरूपी) एवं सनातन हैं ।।५०।।

हे महेश्वरि ! निर्गुणत्व से ब्रह्मबिन्दु, बिष्णुबिन्दु एवं रुद्रबिन्दु—ये बिन्दुत्रय उत्पन्न हुये हैं ।।५१।।

उन त्रिबिन्दुओं में आद्यबिन्दु नादरूपी हैं एवं नाद से ही शक्ति उद्भूत हुईं हैं। हे महेशानि! जो शक्ति नादरूपा हैं, वही चित्रूपिणी परमा कला हैं ।।५२।।

हे महेश्वरि ! नाद से अर्द्धबिन्दु समुत्पन्न हुआ है। भुजङ्गी कुलकुण्डलिनी सार्द्धत्रितय बिन्दरूपिणी हैं ।।५३।।

देवी महामाया निर्गुणा होने पर भी सगुणा, ब्रह्मरूपा एवं सनातनी (शाश्वत सत्तारूपिणी) हैं। वह ही चैतन्यरूपिणी एवं सर्वभूतप्रकाशनी हैं ।।५४।।

देवी आद्याशक्ति सर्वतत्त्वमयी एवं सर्वतत्त्व-प्रकाशिनी हैं। त्रिगुणा-रूप में वह गुणत्रय-प्रकाशिनी हैं ।।५५।।

निर्गुणा सा च विज्ञेया ब्रह्मरूपा च केवला।
षड्गुणा च महादेवी षट्चक्राणां प्रकाशिनी।।५६।।
चतुर्गुणा महेशानि चतुर्वेद-प्रभाविनी।
चन्द्रसूर्यात्मिका सा च चन्द्रसूर्य प्रकाशिनी।।५७।।
सर्वगुणा महादेवी सर्वविश्व प्रभाविनी।
अष्टगुणा महेशानि अष्टसिद्धि-प्रकाशिनी।।५८।।
ब्रह्मविष्णुशिवादीनां जननी सुरसुन्दरी।
मन्त्रस्थानात्मिका देवी सर्वमन्त्रमयी सदा।।५९।।
एकगुणा महादेवी एकाक्षर स्वरूपिणी।
द्विगुणा तु महादेवी द्व्यक्षरस्य प्रसूतिका।।६०।।
त्रिगुणा तु महादेवी त्र्यक्षरी परिकीर्त्तिता।
चतुर्गुणा तु सा देवी चतुरक्षर-प्रसूतिका।।६१।।
नवगुणा महादेवी नवाक्षर-प्रकाशिनी।
दशमेकादशे चैव दशैकादशरूपिणी।।६२।।

केवल ब्रह्मरूप में वह सम्पूर्ण निर्गुणा हैं। महादेवी आद्याशक्ति षट्चक्र-प्रकाशिनी-रूपमें षट्गुणा हैं ।।५६।।

चतुर्वेद के प्रकाशिनी-रूप में परमाशक्ति चतुर्गुण सम्पन्ना हैं। चन्द्र एवं सूर्य के प्रकाशिनी-रूप में वह ही चन्द्रात्मिका एवं सूर्यात्मिका स्वीय भाव-गुणसम्पन्ना हैं ।।५७।।

सर्वविश्व के प्रकाशिनी-रूप में महादेवी महामाया सर्व-गुणसम्पन्ना हैं। अष्टसिद्धियों के प्रकाशिनी-रूप में वह अष्ट-गुणसम्पन्ना हैं ।।५८।।

वह ब्रह्मा, विष्णु, शिव प्रभृति की भी जननी सुर-सुन्दरी हैं। वह मन्त्रस्थानात्मिका एवं सर्वदा सर्वमन्त्रमयी हैं ।।५९।।

एकगुणा महादेवी, एकाक्षर स्वरूपिणी हैं अर्थात् ॐकार स्वरूपिणी, प्रणवात्मिका हैं। द्वि-गुणा-रूप में वह द्व्यक्षर मन्त्र की प्रसूति हैं अर्थात् प्रसविनी जननी हैं ।।६०।।

त्रिगुणा-रूप में वह ही त्र्यक्षर-मन्त्ररूपिणी हैं। चतुर्गुणमयी-रूप में वह ही चार अक्षरों से युक्त मन्त्र की प्रसवित्री जननी हैं ।।६१।।

नवगुणा-रूप में वह ही नवाक्षर-मन्त्र-प्रकाशिनी हैं। दश एवं एकादश-गुणा रूपिणी वह ही दश एवं एकादश-अक्षर-मन्त्र-रूप में प्रकाशिता हैं ।।६२।।

द्वादशत्रयोदशे चैव द्वादशी त्रिदशात्मिका ।
चतुर्दशात्मिका सा तु चतुर्दश-प्रकाशिनी ।।६३।।
पञ्चदशात्मिका देवी पञ्चदश-प्रकाशिनी ।
षोडशी परमेशानि षोडशेन समुद्भवा ।।६४।।
सप्तदश-गुणोपेता सप्तदशार्णा प्रकीर्त्तिता ।
अष्टादश-महाविद्या अष्टादशगुणात्मिका ।।६५।।
अष्टाविंश-गुणोपेता परमाराध्यरूपिणी ।
विंशत्यर्णा महाविद्या परमानन्दरूपिणी ।।६६।।
विंशत्यर्णाधिका मन्त्रा मालामन्त्रः प्रकीर्त्तिता ।
एकविंश-गुणोपेता एकविंश-गुणान्विता ।।६७।।
द्वाविंशति-गुणोपेता द्वाविंशति-समन्विता ।
त्रयोविंश-चतुर्विंश-पञ्चविंशः प्रकीर्त्तिता ।।६८।।
षड्विंशति-गुणोपेता षड्विंशति-गुणात्मिका ।
अष्टाविंशति-गुणोपेता अष्टाविंश-प्रकीर्त्तिता ।।६९।।

द्वादश, त्रयोदश एवं चतुर्दशगुणमयी वह ही द्वादश, त्रयोदश एवं चतुर्दशाक्षर-मन्त्र-रूप में प्रकाशिता हैं ।।६३।।

हे परमेशानि ! देवी पञ्चदश गुणसम्पन्ना-रूप में पञ्चदशाक्षर मन्त्र में एवं षोडश गुणसम्पन्ना-रूप में षोडशाक्षर मन्त्र में समुद्भूता होतीं हैं ।।६४।।

देवी सप्तदश गुणसम्पन्ना होने पर सप्तदशाक्षर मन्त्र में एवं अष्टादश गुणसम्पन्ना होने पर अष्टादशाक्षर मन्त्र में प्रकाशिता होतीं हैं ।।६५।।

देवी का अष्टाविंशति अक्षरयुक्त मन्त्र परमाराध्यरूपिणी एवं विंशत्यक्षर-मन्त्र परमानन्दरूपिणी हैं ।।६६।।

विंशति अक्षरों से अधिक संख्यायुक्त मन्त्र को मालामन्त्र के नाम से अभिहित किया जाता है। देवी एकविंशतिगुणयुक्ता होने पर एकविंशत्यक्षर मन्त्र में एवं द्वाविंशतिगुणयुक्ता होने पर द्वाविंशत्यक्षर मन्त्र में प्रकाशिता होतीं हैं ।।६७।।

इसप्रकार द्वाविंश, त्रयोविंश, चतुर्विंश, पञ्चविंश, षड्विंश, अष्टाविंश या ऊनत्रिंशत् संख्यक गुणसम्पन्ना होने पर, महाविद्या महादेवी तत्तत्संख्यक मन्त्र में यथाक्रम से प्रकाशिता होती हैं। त्रिंशत् से चतुःषष्टि (६४) अक्षर पर्यन्त मन्त्रों को 'दीर्घमन्त्र' कहा जाता है ।।६८-७०)

ऊनत्रिंशन्महाविद्या महादेवी प्रकीर्त्तिता ।
त्रिंशदाद्या चतु:षष्टि दीर्घमन्त्रा प्रकीर्त्तिता ।।७०।।
नपुंसकास्त्रथा मन्त्राः हूं फडन्ताश्च केवलाः ।
स्वाहायुक्ताश्च ये मन्त्राः शक्तिमन्त्राश्च पार्वति ।।७१।।
एषामन्यतमो मन्त्रः पुरुषः परिकीर्त्तितः ।।७२।।
इति कुब्जिकातन्त्रे पार्वती-शिव-संवादे प्रथमः पटलः ।।१।।

हे पार्वती ! जिस मन्त्र के अन्तभाग में 'हूं' या 'फट्' शब्द विद्यमान है, उस मन्त्र को 'नपुंसक मन्त्र' कहा जाता है एवं जिस मन्त्र के अन्तभाग में स्वाहा शब्द विद्यमान है, उसे 'शक्ति मन्त्र' कहा जाता है एवं उक्त द्विविध मन्त्रों से भिन्न अन्यान्य समस्त मन्त्रों को ही 'पुरुष मन्त्र' कहा जाता है ॥७१-७२॥

कुब्जिकातन्त्र में पार्वती-शिव-संवाद में
'प्रथम पटल' समाप्त
।।१।।

द्वितीयः पटलः

अथ मन्त्रार्थकथनम्

शिव उवाच–

अथ वक्ष्ये महेशानि मन्त्रार्थं सारमुत्तमम्।
विना येन न सिद्ध्येत जपपूजादिकं क्वचित्।।१।।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन श्रूयतां गिरिजात्मजे।।२।।

(क्रीं)

ककारः कामदः प्रोक्तो रेफः पापस्य नाशकः।
ईकारः शम्भुवनिता नादबिन्दु-समन्वितः।।३।।
नादरूपा महादेवी निर्गुणा ब्रह्मरूपिणी।
धर्मार्थदः क-कारश्च सर्वसिद्धि-प्रदायकः।।४।।
ब्रह्मरूपो मकारश्च सगुणो निर्गुणश्च सः।
तेज:पुञ्जो म-कारश्च ब्रह्महत्यादि-नाशकः।।५।।
दुर्गारूपा ई-कारश्च चतुर्वर्ग-फलप्रदा।
एकाक्षरी महाविद्या सर्वविद्यास्वरूपिणी।।६।।

अधुना मन्त्रार्थ का कथन किया जा रहा है–

शिव ने कहा— हे पार्वति! इसके अनन्तर मैं मन्त्रार्थ का कथन कर रहा हूँ। यही मन्त्र का सार या श्रेष्ठ अंश है। मन्त्र के अर्थज्ञान के बिना जप एवं पूजा, होम प्रभृति कार्य कदाचित् ही सिद्ध नहीं होता है। हे गिरिजे! इसीलिए सर्वप्रयत्न से मन्त्रार्थ का श्रवण करें ॥१-२॥

क-कार (अर्थात् 'क' वर्ण) कामनासिद्धिदायक, र-कार पापनाशक तथा नादबिन्दु से युक्त (अर्थात् ँ से युक्त) ई-कार शम्भुवनिता (आद्याशक्ति) स्वरूपिणी (क्रीं) हैं ॥३॥

नादरूपा महामाया महादेवी निर्गुणब्रह्मस्वरूपा हैं। क-कार धर्म, अर्थ एवं सर्वसिद्धियों के प्रदायक हैं ॥४॥

म-कार सगुण एवं निर्गुण— इन उभयात्मक ब्रह्मरूप है। म-कार तेज:पुञ्जरूपी हैं एंवं यह ब्रह्महत्यादि पापों के नाशक हैं ॥५॥

ई-कार दुर्गारूपिणी हैं एवं चतुर्वर्ग-फलप्रदा हैं। 'क्रीं' वह एकाक्षरी महामन्त्र सर्वविद्या-स्वरूपिणी अर्थात् सर्वमन्त्र स्वरूपिणी हैं। ('क्रीं' यह कालीबीज है)॥६॥

क-कारे वरुणः प्रोक्तो जगतः प्राणकारकः।
रेफे च शङ्करो ज्ञेयः सर्वेषां शङ्करः सदा।।७।।
ई-कारे तारिणी देवी भवसंसार-तारिणी।
क-कारे केशवः प्रोक्तो निर्वाणपदहेतुकः।।८।
र-कारो वह्निरुपोऽयं भवदुःखस्य दाहकः।
ई-कारे मातृकादेवी चतुर्वर्ग-फलप्रदा।।९।।
सगुणा च यदा देवी सर्वसिद्धि-प्रदायिनी।

(ह्रूं)

ह-कारस्तु शिवः प्रोक्तो ज्ञानरूपी सनातनः।।१०।।
निर्वाण-मुक्तिदो देवः सर्वसिद्धि-प्रदायकः।
रेफे सूर्य प्रतिकाशो ह्यत्यन्तं पापदाहकः।।११।।
ऊ-कारे भैरवी देवी सर्वसङ्कटतारिणी।
नादरूपा महेशानि निर्गुणा परिकीर्त्तिता।।१२।।
ह-कारे च महाविष्णुर्महापातकनाशनः।
रेफे चन्द्रस्वरूपी च अमृतत्त्व-प्रदायकः।।१३।।

(ह्रुं)

उ-कारे मोहिनी देवी जगन्मोहनकारिणी।
महादुःखव्याधिहन्त्री ब्रह्महत्यादि-नाशिनी।(ह्रुं)।।१४।।

क-कार जगत् के प्राणकारक वरुण हैं, र-कार सर्वभूतों की शङ्का का अपहरणकारी शङ्कर हैं एवं ई-कार भवसंसार-तारिणी तारा या तारिणी देवी हैं। क-कार निर्वाणदाता केशव हैं, र-कार भवदु:ख दाहक वह्नि हैं एवं ई-कार चतुर्वर्गफलप्रदा मातृका देवी (क्रीं) हैं ॥७-९॥

मातृकादेवी सगुणा होने पर सर्वसिद्धियों को प्रदान करती हैं। 'ह'-कार शिवस्वरूप, सनातन एवं परम ज्ञानरूपी हैं। 'ह'-कार निर्वाण-मुक्ति एवं सर्वसिद्धियों के प्रदायक हैं 'र'-कार सूर्यरूपी हैं एवं दुरन्त पापों के दायक हैं ॥१०-११॥

'ऊ'-कार सर्वसङ्कत-तारिणी भैरवी हैं। हे महेशानि! 'नाद' निर्गुणा परमाशक्ति के नाम से कही जाती हैं। ॥ हूं ॥ ह्रूं ॥१२॥

'ह'-कार महापातक-विनाशन महाविष्णु हैं, 'र'-कार चन्द्रस्वरूप हैं एवं अमृतत्व के प्रदायक हैं ॥१३॥

उ-कार महादु:ख, व्याधि एवं ब्रह्महत्यादि (जनित पापों) की नाशिनी, जगन्मोहन-कारिणी मोहिनी या महामाया हैं। 'हुं, ह्रुं' ॥१४॥

(हुं)

सदाशिवः ह-कारे स्यादुकारे ब्रह्म चैव हि ।
निर्गुणो नादबिन्दुश्च निर्वाणपद केवलम् ।(हुं)।।१५।।
अस्य स्मरणमात्रेण अश्वमेधायुतं लभेत् ।
ह-कारः शम्भुरित्युक्तो रेफे चैव विभूषितः ।।१६।।
ई-कारे परमा देवी गुणत्रयमयी सदा ।
द-कारः सर्वदेवश्च सर्वदुर्ग-निवारकः ।।१७।।
क्ष-कारः क्षेत्रदो विष्णुर्महापातकनाशनः ।
इ-कारे देवताः सर्वाः सर्वकामार्थदाः पुनः ।।१८।।
ण-कारे चण्डिका देवी चण्डदैत्यविनाशिनी ।
ए-कारे योनिरूपा च विश्वस्य बीजमुत्तमम् ।।१९।।
क-कारे मेदिनी प्रोक्ता सशैलवनकानना ।
आ-कारे सकला देवी सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।।२०।।
ल-कारे पृथिवी देवी पृथ्वीदानफलप्रदा ।
इ-कारे सकला देवी सकलेश्वरकारिणी ।।२१।।

ह-कार सदाशिव एवं उ-कार ब्रह्मरूपी हैं। नादबिन्दु निर्वाणपद-सूचक निर्गुण ब्रह्म हैं। 'हुं'।।१५।।

नादबिन्दु या निर्गुण ब्रह्म के स्मरणमात्र से ही अयुत अश्वमेध-यज्ञ-सम्पादन के फल का लाभ होता है। र-कार-युक्त ह (अर्थात् 'ह्र'। स्वयं शम्भु हैं एवं ई-कार सत्त्व, रज एवं तम—इन त्रिगुणमयी महामाया (ह्रीं) हैं। द-कार सर्वदेवमयात्मक एवं सर्वदुर्गति-निवारक (दुं, दूं, द्रीं) हैं ।।१६-१७।।

क्ष-कार महापातक-नाशक, क्षेत्र (=देह या सृष्टि) के अधीश्वर विष्णु हैं। इ-कार सर्वदेवमय एवं सर्वकामार्थदायक हैं ।।१८।।

ण-कार चण्डदैत्य-विनाशिनी चण्डिका हैं। ए-कार विश्वबीज एवं योनिरूपा हैं । (दक्षिणे) ।।१९।।

क-कार सशैलवनकानना मेदिनी हैं एवं आ-कार सर्व-कला-समन्विता सर्व-सिद्धि-प्रदायिनी महामाया (का) हैं ।।२०।।

ल-कार पृथिवीदान फलप्रदा पृथिवी देवी हैं एवं इ-कार सर्वकला-समन्विता तथा सर्वजीवों के मङ्गल विधायिनी महामाया (लि) हैं ।।२१।।

क-कारे सुन्दरी देवी ए-कारे योनिरूपिणी।
धर्मार्थकामदा देवी दुष्टदैत्यविनाशिनी।।२२।।
परा च परमा चैव परमात्मा कला पुनः।
क-कारे च महाब्रह्मा क-कारे विष्णुरूपकः।।२३।।
क-कारे च महादेवो ब्रह्माणी रेफ एव च।
वैष्णवी मध्यरेफः स्यात् रुद्राणी रेफ उत्तमः।।२४।।
ई-कारः कामदः कान्तो नादबिन्दु-विभूषितः।
ह-कारः काम एवासौ ह-कारः सूर्यरूपकः।।२५।।
ऊ-कारः षोडशी देवी ऊ-कारो भुवनेश्वरी।
नादबिन्दु-समायुक्ता महामन्त्राः प्राकीर्त्तिताः।।२६।।
ह-कारो योगनिद्रा च ह-कारः परमो विभुः।
ई-कारः कामदा माया रेफः परशिवो मतः।।२७।।
रेफश्चैव महादेवी नादबिन्दु-विभूषितः।
स्वाहा चैव महेशानि तेजःपुञ्जः प्रकीर्त्तिता।।२८।।
एकाक्षरी महाविद्या ब्रह्मविद्या सनातनी।
त्र्यक्षरी च महाविद्या त्रिगुणा परिकीर्त्तिता।।२९।।

क-कार देवी त्रिपुरासुन्दरी-स्वरूपा हैं एवं ए-कार योनिस्वरूपा, धर्मार्थकामदात्री, दुष्ट दैत्य विनाशिनी परा एवं परमाशक्ति तथा परमात्मा एवं कलारूपिणी (कालिके) हैं। क-कार महाब्रह्मा एवं विष्णुरूपी हैं ॥२२-२३॥

क-कार महादेव हैं एवं र-कार ब्रह्माणीरूपा सृष्टिशक्ति, वैष्णवीरूपा पालनशक्ति एवं ध्वंसरूपा श्रेष्ठ रुद्रशक्ति या रुद्राणी हैं ॥२४॥ नादबिन्दु-विभूषित ई-कार कामनासिद्धिदायक हैं एवं ह-कार कामरूपी एवं सूर्यस्वरूप हैं ॥२५॥

ऊ-कार देवी षोडशी एवं भुवनेश्वरी-स्वरूपा हैं एवं नादबिन्दु-युक्त होने पर (हूं) उक्त वर्णसमुदय महामन्त्र के रूप में प्रकीर्त्तित होता है (क्रीं, हूं, हूं, क्रूं, ह्रीं, दूं) ॥२६॥

ह-कार योगनिद्रारूपी महामाया हैं एवं ह-कार परमब्रह्मरूपी हैं। ई-कार कामदायिनी माया हैं एवं 'र' परमशिव-स्वरूप हैं। नादबिन्दुयुक्त र-कार महामाया-स्वरूपा (ह्रीं) हैं। हे महेशानि! स्वाहा को तेजः — पुञ्जरूप में अभिहित किया जाता है (स्वाहा) ॥२७-२८॥

महामाया का एकाक्षरी महामन्त्र सनातनी ब्रह्मविद्या हैं एवं तीन अक्षरों के मन्त्र को (यथा-क्रीं क्रीं क्रीं अथवा क्रीं स्वाहा) 'त्रिगुणा मन्त्र' कहा जाता है ॥२९॥

अष्टाक्षरी महाविद्या साक्षान्मोक्ष फलप्रदा ।
विंशत्यर्णा महाविद्या अष्टसिद्धिः प्रकीर्त्तिता ।।३०।।
एकविंशा महाविद्या प्राणवाद्या महेश्वरी ।
अ-कारेण उ-कारेण म-कारेण सुरेश्वरी ।।३१।।
ब्रह्मविष्णुमहेशाद्यैर्मन्त्रमेतत् प्रकीर्त्तितम् ।
एकाक्षरो महामन्त्रश्चिदानन्द-स्वरूपकः ।।३२।।
प्रणवे पुटिता विद्या सेतुरित्यभिधीयते ।
सिद्धकाली महामन्त्रः कामश्च सिद्धिः स्मृतः ।।३३।।
ह-कारः सच्चिदानन्दो रेफो निर्वाणदायकः ।
ऊ-कारः शम्भुवनिता शिवशक्तिस्वरूपिणी ।।३४।।
कामेन मायया चैव पुटितं कामबीजकम् ।
तदा कामेश्वरो मन्त्रः सर्वकाम फलप्रदः ।।३५।।
नवाक्षरे कामबीजं चिद्रूपं शम्भुरुत्तमः ।
नवाक्षरे कूर्चबीजं ब्रह्मरूपः सनातनः ।।३६।।

महाशक्ति की अष्टाक्षरी महाविद्या (क्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा) साक्षात् मोक्षप्रदायक है एवं विंशत्यक्षर महामन्त्र अष्टसिद्धि-प्रदायक है ।।३०।।

उन विंशत्यक्षर महामन्त्र के आदि में 'प्रणव' का योग करने पर, वह महेश्वरी का एकविंशत्यक्षर मन्त्र बन जाता है। हे सुरेश्वरि! अ, उ, म, (ॐ) यह मन्त्र (प्रणव) ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र-स्वरूप कहा जाता है। 'ॐ' यह एकाक्षर महामन्त्र चिदानन्द-स्वरूप है ।।३१-३२।।

किसी भी मन्त्र को प्रणव के द्वारा पुटित करने पर अर्थात् मन्त्र के पूर्व में एवं अन्त में— इन दोनों स्थानों में प्रणव का योग करने पर, उसे 'सेतु' कहते हैं। सिद्धकाली महामन्त्र सर्वकामनाओं की सिद्धि प्रदान करती हैं ।।३३।।

ह-कार सच्चिदानन्द एवं र-कार निर्वाण का प्रदायक है। ऊ-कार शम्भुवनिता शविशक्ति-स्वरूपिणी (हूं) हैं ।।३४।।

कामबीज (क्लीं) एवं मायाबीज (ह्रीं) के द्वारा कामबीज को पुटित करने पर, वह सर्वकामफलप्रद 'कामेश्वर मन्त्र' बन जाता है। (क्लीं ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं) ।।३५।।

नवाक्षर मन्त्र होने पर, वह 'कामबीज' चित्रूपी स्वयम्भू बन जाता है। नवाक्षर मन्त्र होने पर, कूर्चबीज (हूं) सनातन ब्रह्मस्वरूप बन जाता है ।।३६।।

नवाक्षरे दक्षिणेति कालिका परमार्थदा ।
चतुर्दशे कामबीजं वैष्णवी परिकीर्त्तिता ।।३७।।
एकादशे कामबीजं भवेत् संसारतारकम् ।
नमः-पदं भोगदञ्च राज्यभोग फलप्रदम् ।।३८।।
पञ्चदशी - महामन्त्रं सर्वकाम फलप्रदम् ।
मायाबीजं क्रोधबीजं केवलं शिवरूपकम् ।।३९।।
गुह्यकाली षोडशार्णा केवलं ब्रह्मरूपिणी ।
सृष्टिस्थितिकरी देवी शत-भेदा जगन्मयी ।।४०।।
नवाक्षरी महाविद्या कामबीजोपरि स्थिता ।
गुह्येति मोक्षदा लोके चतुर्वर्ग-प्रदायिनी ।।४१।।
वाग्देवी देवता सर्वदा ऐ-कार रूपिणी परा ।
ई-कारः शम्भुवनिता फट्कारा चक्ररूपिणी ।।४२।।
कामाख्या भुवनेशी च केवला कामरूपिणी ।
भद्रकाली महादेवी भुवनेशी भुजङ्गिनी ।।४३।।
महाभुजङ्गरूपेण पृथिवी-धारिणी सदा ।
कामबीजं महेशश्च अष्टमूर्त्तिः सनातनः ।।४४।।

नवाक्षर कालिकामन्त्र परमार्थदायक है। चतुर्दशाक्षर मन्त्र होने पर, कामबीज 'वैष्णवी शक्ति' के नाम से अभिहित होता है ।।३७।।

एकादशाक्षर मन्त्र होने पर, कामबीज भवसमुद्र त्राणकारी बन जाता है एवं 'नमः' पद विविध विलास एवं राज्यभोग को प्रदान करता है ।।३८।।

पञ्चदशाक्षर महामन्त्र सर्वकाम-फलप्रद है। मायाबीज (ह्रीं) एवं क्रोधबीज (हूं) स्वयं शिवस्वरूप हैं ।।३९।।

गुह्यकाली का षोडशाक्षर मन्त्र स्वयं ब्रह्मरूपी है। गुह्यकाली जगत् की माता हैं एवं अनन्त भेदान्तक जगत् की सृष्टि एवं स्थितिकारिणी हैं ।।४०।।

गुह्यकाली का कामबीजयुक्त नवाक्षर महामन्त्र मोक्ष एवं चतुर्वर्ग फलप्रदायिनी है। 'ऐं' बीज वाक्देवीरूपिणी पराशक्ति हैं। ई-कार शम्भुवनिता (परमाशक्ति)-रूपिणी हैं एवं फट् चक्ररूपिणी हैं ।।४१-४२।।

कामाख्या एवं भुवनेशी (भुवनेश्वरां) केवल कामरूपिणी हैं। परमाशक्ति भद्रकाली हैं एवं भुवनेशी भुजङ्गिनी (कुलकुण्डलिनी)-स्वरूपा हैं ।।४३।।

महाभुजङ्गरूप में परमाशक्ति सर्वदा इस पृथिवी (जीवदेह) को धारण की हुई हैं। कामबीज (क्लीं) अष्टमूर्त्ति महेश्वररूपी सनातन हैं ।।४४।।

कूर्चबीजं महाविष्णुः फट्कारः पापनाशनः ।
श्मशानकालिका मन्त्रः पञ्चार्णः परिकीर्त्तितः ।।४५।।
कामबीजं कलानाथः केवलं कामरूपधृक् ।
मायाबीजं महेशानि मायाच्छेदन कारिणी ।।४६।।
कूर्चबीजं महेशानि महापुण्य-प्रदायकम् ।
ई-कारे परमा शक्तिर्योगिनां मोक्षदायिनी ।।४७।।
क्ष-कारश्च महेशानि क्षेत्रज्ञः परिकीर्त्तितः ।
अ-कारश्च महेशानि पृथिवी परिकीर्त्तिता ।।४८।।
अस्याः स्मरणमात्रेण जीवन्मुक्तश्च साधकः ।
एकोच्चारणमात्रेण अश्वमेधायुतं फलम् ।।४९।।
लभते शृणु कल्याणि स्मरणेनैव यत् फलम् ।
ब्रह्महत्यादिकं सर्वं नाशयामीति निश्चितम् ।।५०।।
कोटि-कोटि-महातीर्थमश्वमेधायुतं फलम् ।
प्राप्नुयात् साधकश्रेष्ठः किं पुनर्जनने भुवि ।।५१।।

कूर्चबीज महाविष्णुरूपी हैं एवं 'फट्' पापनाशक हैं। श्मशानकालिका मन्त्र पञ्चाक्षर मन्त्र हैं ।।४५।।

कामबीज सर्वकलाओं के अधीश्वर हैं एवं मूर्त्तिमान् कामस्वरूप हैं। हे महेशानि! 'मायाबीज' मायापाश छेदनकारिणी हैं ।।४६।।

हे महेशानि! कूर्च बीज महापुण्य प्रदायक है। ई-कार योगियों के लिए मोक्षदात्री परमाशक्ति है ।।४७।।

हे महेशानि! क्ष-कार क्षेत्रज्ञ (परमात्मा) के नाम से कहा जाता है। हे महेशानि! अ-कार पृथिवीरूपी है— इस प्रकार कहा जाता है ।।४८।।

कालिकामन्त्र के स्मरणमात्र से ही साधक जीवन्मुक्ति का लाभ करता है एवं एकबार मात्र उच्चारण किये जाने पर अयुत अश्वमेध यज्ञ-सम्पादन के फल का लाभ कर सकते हैं ।।४९।।

हे कल्याणि! अ-कार मात्र के स्मरण करने पर, जिस फल का लाभ होता है, उसका श्रवण करें। इसके स्मरणमात्र से ही मैं साधक के ब्रह्महत्यादि समस्त पापों का नाश कर देता हूँ ।।५०।।

एवं साधक कोटि-कोटि महातीर्थों की सेवा का एवं अयुत अश्वमेध के फल का लाभ करता है। पृथिवी पर उसका और पुनर्जन्म नहीं होता है ।।५१।।

जपे चैव महेशानि वक्तुं नैव च शक्यते ।
तारेण पुटिता विद्या मायया पुटितापि वा ।।५२।।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा गजान्तक-सहस्रकम् ।
मन्त्रस्य दोषशान्त्यर्थं जपेत्तु सुरसुन्दरि ।।५३।।
निर्गुणः सगुणो मन्त्रो द्विधाचैव महेश्वरि ।
येन तेन प्रकारेण सर्वसिद्धिफलं लभेत् ।।५४।।
मातृकापुटितं कृत्वा अष्टोत्तरशतं जपेत् ।
सहस्रं वा जपेद्देवि मन्त्रदोषोपशान्तये ।।५५।।
अनुलोम-विलोमेन मातृकायां जपेत् सुधीः ।
अष्टवर्गा भवेत् सिद्धिः सर्वकामफलं लभेत् ।।५६।।
तारायाश्च महादेव्या महाविद्याः प्रकीर्त्तिता ।
पञ्चाक्षरी महाविद्या पञ्चभूत-प्रकाशिनी ।।५७।।
पञ्चरश्मिर्महाविद्या पञ्चरश्मि-समन्विता ।
कालिका तारिणीमन्त्रमभेदेन सुरेश्वरि ।।५८।।

हे महेशानि! कालिका-मन्त्र के जप के फल के वर्णन का अन्त नहीं किया जा सकता है (अर्थात् अनन्त फल है)। कालीमन्त्र को प्रणव या मायाबीज से पुटित करके, मन्त्र-दोष की शान्ति के निमित्त अष्टोत्तरशत या अष्टोत्तर सहस्रबार जप करें ।।५२-५३।।

हे महेश्वरि! मन्त्र सगुण एवं निर्गुण के भेद से द्विविध है। निम्नोक्त जिस किसी भी प्रकार से मन्त्र का जप करने पर मन्त्रसिद्धि का लाभ होता है। मन्त्रदोष-शान्ति के निमित्त, मन्त्र को अनुलोम में एवं विलोम में मातृकावर्णों से पुटित करके, अष्टोत्तरशत या अष्टोत्तर सहस्र बार जप करें। (तत्पर साधक केवल मन्त्र-जप करते रहें)। इसके फलस्वरूप अष्टवर्गसिद्धि का लाभ होता है एवं सुधी साधक सर्वाभीष्ट फलों का लाभ करता है ।।५४-५६।।

महादेवी तारा का पञ्चाक्षर मन्त्र ही 'महामन्त्र' या 'महाविद्या' के नाम से कहा जाता है। तारा का पञ्चाक्षर महामन्त्र पञ्चभूत-प्रकाशिनी है ।।५७।।

महामन्त्ररूपी प्रणव पञ्चरश्मि से समन्वित होकर विराजित होता है। हे सुरेश्वरि! सृष्टि के प्रकाश में जगन्माता अनन्त-भेद-समन्विता होने पर भी काली एवं तारा का मन्त्रार्थ सम्पूर्ण रूप से अभेदात्मक है— ऐसा जानें। जो काली हैं, वही तारा हैं एवं इन दोनों में, एक का मन्त्र ही दूसरे के मन्त्र के रूप में कथित होता है ।।५८-५९।।

मन्त्रार्थञ्च विजानीयात् शतभेदा जगन्मयी।
यथा काली तथा तारा तथा मन्त्राः प्रकीर्त्तिताः ।।५९।।
साधनं मन्त्रतन्त्रञ्च मन्त्रार्थञ्च सुरेश्वरि।
तव स्नेहात् प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमाद्भुतम् ।।६०।।

इति कुब्जिकातन्त्रे पार्वती-परमेश्वर-संवादे द्वितीयः पटलः ।।२।।

हे सुरेश्वरि! मन्त्रार्थ एवं मन्त्रतन्त्र के इस परमाश्चर्य साधनरहस्य को केवल आपके प्रति स्नेहवश ही मैंने प्रकाशित किया है ।।६०।।

कुब्जिकातन्त्र में पार्वती-परमेश्वर-संवाद में
'द्वितीय पटल' समाप्त
।।२।।

तृतीयः पटलः

अथ मन्त्रार्थकथनम्

श्रीशिव उवाच—

अथ वक्ष्ये महेशानि मन्त्रार्थं महदुत्तमम्।
भुवनेशी महाविद्या सर्वाम्नायैर्नमस्कृता ।।१।।
ह-कारो ब्रह्मरूपश्च सर्वविश्व-प्रकाशकः।
रेफश्चन्द्रमसो ज्योतिः ई-कारः परमः पुनः ।।२।।
निर्गुणो नादबिन्दुश्च परमाह्लाद-कारकः।
ब्रह्मणोपासिता विद्या शापग्रस्ता वरानने ।।३।।
ऐ-कारात् पृथिवी देवी विश्वरूपा सनातनी।
योनिरूपा मह्यदेवी महापातक-नाशिनी ।।४।।
ह-कारः परमो बिन्दुः रेफोऽयं परिपालकः।
ई-कारेण महादेवि सकलार्थ-प्रदायिनी ।।५।।
शिवेनोपासिता विद्या परमार्थ-प्रदायिनी।
आं-कारात् सूर्यरूपा च माया विश्व प्रकाशिनी ।।६।।

शिव ने कहा— हे महेशानि! इसके अनन्तर मैं सर्वाम्नाय-नमस्कृता महाविद्या भुवनेश्वरी के मन्त्र के महान एवं अत्युत्तम मन्त्रार्थ को बता रहा हूं, श्रवण करें ।।१।।

'ह'-कार सर्वविघ्न-प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप है, 'र'-कार चन्द्रज्योति-स्वरूप है एवं ई-कार ब्रह्मस्वरूप है। नादबिन्दु परमानन्दमय निर्गुण चित्शक्तिस्वरूप है। यह ब्रह्मा का उपासिता मन्त्र शाप ग्रस्ता है (ह्रीं) ।।२।।

ऐ-कार देवी धरित्री हैं एवं महापातकनाशिनी योनिरूपा आद्याशक्ति (ह्रैं) हैं ।।३।।

ह-कार परमबिन्दु या नाद एवं 'र' उसका परिपालक है। हे महादेवि! ई-कार सकलार्थ-प्रदायिनी (ह्रीं) हैं ।।५।।

यह मन्त्र शिवोपासिता विद्या है। यह परमार्थप्रदायक है। 'आं'- यह सूर्यस्वरूपा एवं विश्वप्रकाशिनी महामाया है ।।६।।

क्रों-कारं जनिकाशक्तिः कामाख्या मोक्षदा स्मृता ।
श-कारः कृष्णरूपोऽसौ सर्वजन्तु हिते रतः ।।७।।
ई-कारे स्थितिरूपा च रेफो नित्यं सनातनः ।
चिद्रूपा नादशक्तिश्च परमाह्लाददायिनी ।।८।।
लक्ष्मीरूपा महादेवी चतुर्वर्ग-प्रदायिनी ।
ह-कारो वासुदेवश्च रेफः सृष्टि-प्रदायकः ।।९।।
ई-कारो त्रिपुरादेवी नादबिन्दु-शिवात्मिका ।
ल-कारे पालिकाशक्तिर्मकारे नाशकारिणी ।।१०।।
नमश्च कामदः प्रोक्तः सर्वार्थसाधनोत्तमः ।
भ-कारे तारिणी देवी विश्वस्य प्राणवल्लभे ।।११।।
उ-कारे भगवती देवी व-कारे वरुणात्मिका ।
ई-कारे मातृकादेवी जगतां जननी स्मृता ।।१२।।
म-कारे शिवरूपा च शिवं विश्वस्य दायिनी ।
अ-कारे रुद्ररूपा च विश्वस्य नाशरूपिणी ।।१३।।
ई-कारे योगिनी देवी योगीनां योगरूपिणी ।
ए-कारे जननी देवी विश्वोत्पन्ना तु मातृका ।।१४।।

'क्रों' कामरूपी एवं मोक्षदायिनी कामाख्या-स्वरूपा है। श-कार सर्वभूतहित में रत कृष्णरूपी है ।।७।।

ई-कार स्थितिरूपा वैष्णवी शक्ति है। 'र'-नित्य एवं सनातन सत्तास्वरूप है। 'नाद' चित्स्वरूपा एवं परमाह्लाद-दायिनी है (श्रीं) ।।८।।

हे महादेवि! 'श्रीं' बीज लक्ष्मीस्वरूपा एवं चतुर्वर्ग प्रदायिनी है, 'ह'-कार वासुदेव हैं एवं 'र'-कार सृष्टि-प्रदायक है ।।९।।

ई-कार स्वयं त्रिपुरा देवी हैं एवं 'नादबिन्दु' शिव-शक्तिरूपिणी हैं (ह्लीं)। 'न'-कार पालिका शक्ति हैं एवं 'म'-कार सर्वविनाशिनी रुद्रशक्ति है। 'नमः' यह काम एवं सर्वार्थदायक है (नमः)। हे विश्वप्राणवल्लभे! भ-कार स्वयं तारिणी देवी हैं ।।१०-११।।

उ-कार देवी भगवती हैं एवं व-कार वरुणात्मिका शक्ति हैं। ई-कार जगज्जननी मातृकारूपा हैं ।।१२।।

म-कार शिवरूपा एवं विश्वकल्याण-दायिनी हैं। अ-कार विश्वध्वंसी नाशरूपा रुद्राणी हैं ।।१३।।

इ-कार स्वयं योगिनी देवी एवं योगियों की योगरूपिणी हैं। ए-कार में, **विश्वोत्पन्ना जननी मातृकादेवी हैं ।।१४।।**

शकारे विश्वशक्तिश्च व-कारे परिपालिनी ।
रेफे च ज्ञानदादेवी सर्वज्ञान-प्रकाशिनी ।।१५।।
ई-कारे च महादेवि चैतन्यानन्द-वर्द्धिनी ।
आशु शृणु महादेवि! रेफे च प्राणवल्लभः ।।१६।।
न-कारे नन्दिनी देवी सर्वेषां नन्दर्धिनी ।
स्वाहा चैव महाविद्या अग्निजिह्वा प्रकीर्त्तिता ।।१७।।
प्रणवाद्या महाविद्या ज्ञानिनां ज्ञानदा मता ।
मायाबीजं यदा देवि चतुर्वर्ग-प्रदायिनी ।।१८।।
श्रीबीजाद्या यदा देवी तदा सम्पत्ति दायिनी ।
प्रणवे पुटितां विद्यां सहस्रं प्रजपेत् सुधीः ।।१९।।
सर्वदोषोपशान्त्यर्थं फलदः परिकीर्त्तितः ।
भुवनेशी यदा देवी चान्नपूर्णा तथा पयम् ।।२०।।
सरस्वतीं तथा पद्मां विद्याञ्चैव त्रिशक्तिकाम् ।
आद्याञ्चैव महादेवीं जानीतात् सुरसुन्दरि ।।२१।।

श-कार विश्वशक्ति है, व-कार परिपालिनी शक्ति है, 'र'-कार ज्ञानप्रकाशिनी ज्ञानदा देवी हैं ॥१५॥

हे महादेवि! ई-कार चैतन्य एवं आनन्द-वर्द्धिनी हैं। हे महादेवि! सम्प्रति श्रवण करें। र-कार प्राण वल्लभ हैं ॥१६॥

न-कार सर्वभूतों की आनन्दवर्धक नन्दिनी देवी हैं। 'स्वाहा' अग्निजिह्वारूपी महाविद्या है ॥१७॥

इस मन्त्र के आदि में प्रणव का योग करने पर, वह ज्ञानियों के ज्ञानदायिनी महामन्त्र के रूप में कहा जाता है। इस मन्त्र के आदि में मायाबीज (ह्रीं) का योग करने पर,वह चतुर्वर्ग-प्रदायक बन जाता है ॥१८॥

इस मन्त्र के आदि में श्रीबीज (श्रीं) का योग करने पर, वह सम्पत्तिदायिनी बन जाती हैं। सुधीसाधक मन्त्रदोष के शोधनार्थ पहले उक्त मन्त्र को प्रणवपुटित कर, उसके बाद अष्टोत्तर सहस्र जप करें। वैसा करने पर, मन्त्र यथायथ फलदायक बन जाता है। जो भुवनेशी (भुवनेश्वरी) हैं, वही पराशक्तिरूपिणी देवी अन्नपूर्णा हैं ॥१९-२०॥

जो भुवनेश्वरी हैं, वही सरस्वती हैं एवं वहीं पद्मावती (लक्ष्मी) हैं। भुवनेश्वरी—अन्नपूर्णा, सरस्वती एवं लक्ष्मी— इन त्रिशक्ति-रूप में प्रकाशिता हैं। हे सुरसुन्दरी! भुवनेश्वरी को आद्याशक्ति के रूप में जानें ॥२१॥

त्रिपुटाञ्च तथा दुर्गां त्वरितां भुवनेश्वरीम् ।
जानीयात्तु महादेवीं सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् ।।२२।।
त्रिपुटायां कामबीजं केवलं कामनार्थदम् ।
श्रीबीजञ्च महादेवि! श्रीदेवी परिकीर्त्तिता ।।२३।।
त्वरिताया महादेवि मायाबीजं स्वबीजकम् ।
त्रिशक्तिः प्रणवो देवि मुक्तिदो भास्वतोपमः ।।२४।।
खेचरं च महादेवि! खेचरं परिकीर्त्तितम् ।
वधूबीजं महेशानि! अस्त्ररूपं प्रकीर्त्तितम् ।।२५।।
दुर्गायाश्च महामन्त्रो महादुर्गस्य तारकः ।
प्रणवो ब्रह्मरूपश्च मायाबीजं च मुक्तिदम् ।।२६।।
ह्रीं बीजञ्च महेशानि सर्वदुर्गतितारकम् ।
दुर्गादुर्गस्य हन्त्री च ऐं-कारो विश्व-रूपकः ।।२७।।
नमो मोक्षप्रदाता च महामन्त्रः प्रकीर्त्तितः ।
महिषमर्द्दिनी देवी दुर्गावत् परिकीर्त्तिता ।
आराधनेन देवेशि चतुर्वर्गफलं लभेत् ।।२८।।

इस बात को सुनिश्चित एवं ध्रुव सत्य जानें कि जो महादेवी भुवनेश्वरी हैं, वही त्रिपुटा, त्वरिता एवं दुर्गा हैं ।।२२।।

त्रिपुरामन्त्र में कामबीज है, यह काम एवं अर्थ प्रदायक है। हे महादेवि! 'श्रीं' बीज श्रीदेवी-रूप में कीर्त्तिता होती हैं ।।२३।।

हे महादेवि! त्वरितामन्त्र में मायाबीज (ह्रीं) को त्वरिताबीज जानें। हे देवि! त्रिशक्ति (ह्रीं, श्रीं, क्लीं)-युक्त प्रणव (ॐ) परम ज्योति-स्वरूप एवं मोक्षदाता हैं ।।२४।।

हे महादेवि! 'ह स ख फ्रें' यह खेचरी री-बीज के नाम से अभिहित होता है। हे महेशानि! वधूबीज (स्त्रीं) अस्त्ररूपी है ।।२५।।

दुर्गा का महामन्त्र महादुर्गति नाशक है। प्रणव ब्रह्मस्वरूप है एवं मायाबीज (ह्रीं) मोक्षदायक है ।।२६।।

हे महेशानि! ह्रीं बीज सर्वदुर्गतियों से त्राण करता है एवं दुर्गा सर्वदुर्गतियों का हरण करते हैं। ऐं बीज विश्वरूपक है ।।२७।।

'नमः' मोक्षप्रदायक है। (ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः) यह दुर्गा का महामन्त्र कहा गया। हे देवि! महिषमर्दिनी की आराधना के द्वारा भी दुर्गामन्त्र के समान चतुर्वर्ग फल की प्राप्ति होती है ।।२८।।

अथ वक्ष्ये महामन्त्रं निर्गुणं परमं पुनः ।।२९।।
श्रीदेव्याश्च महेशानि मन्त्रार्थं मन्त्रमुत्तमम् ।
ह-कार केवलः देवि निर्गुणः परमाक्षरः ।।३०।।
श्रूयतां सावधानेन निर्वाण-पददायकम् ।
स-कारे निर्गुणा देवी ई-कारे निर्गुणा सदा ।।३१।।
ण-कारे निर्गुणा सा तु श्रूयतां गिरिनन्दिनि ।
मायाबीजन्तु सगुणं शिवशक्ति-युतं प्रिये ।।३२।।
ह-कारः परमब्रह्म निर्गुणश्च सनातनः ।
स-कारः शम्भुरित्युक्तो निगुणश्च निरञ्जनः ।।३३।।
ल-कारे निर्गुणा देवी निर्लेपा निष्कला परा ।
मायाबीजन्तु देवेशि निर्गुणं परमात्मकम् ।।३४।।
स-कारः शान्तिदो देवः सर्वशान्ति-प्रदायकः ।
केवलं ब्रह्मरूपश्च सत्यं देवि न संशयः ।।३५।।
क-कारः कामदेवोऽसौ सर्वेषां कामदः स्मृतः ।
ल-कारे कामिनी देवी सर्वेषां कामरूपिणी ।।३६।।
मामाख्या मोक्षदात्री च कामस्य पालिनी सदा ।
भुवनेशी महाबीजं चैतन्या नन्दवर्द्धकम् ।।३७।।

हे महेशानि! इसके अनन्तर मैं निर्गुण एवं परमाशक्ति श्रीविद्या के महामन्त्र के मन्त्रार्थ को बता रहा हूँ। ह-कार केवल निर्गुण परमाक्षर-स्परूप है।।२९-३०।।

हे पार्वति! एकाग्रचित्त से निर्वाणपद-प्रदायक बीजों का श्रवण करें। स-कार एवं ई-कार-दोनों ही निर्गुणा आद्याशक्ति हैं। हे गिरिनन्दिनि! हे प्रिये! ण-कार भी आद्याशक्ति के निर्गुणात्मक अभिव्यक्ति है। किन्तु मायाबीज सगुणात्मक एवं शिवशक्तिमय है ।।३१-३२।।

ह-कार सनातन निगुर्ण परमब्रह्मस्वरूप है। स-कार स्वयं शम्भूरूपी निगुर्ण निरञ्जन है ।।३३।।

ल-कार में देवी निर्गुणा, निर्लेप एवं निष्कलारूप में प्रकाशिता हैं। हे देवेशि! मायाबीज निर्गुण परमात्मारूपी हैं ।।३४।।

हे देवि! ह-कार सर्वशान्ति-प्रदायक एवं केवल ब्रह्मरूपी है। यह ध्रुव सत्य है एवं इस विषय में कोई सन्देह नहीं है ।।३५।।

क-कार कामदेवस्वरूप हैं एवं सभी के कामना-प्रदायक हैं। ल-कार सभी के कामरूपिणी कामिनी हैं ।।३६।।

कामाख्या मोक्षदात्री एवं काम-प्रतिपालिका है। भुवनेश्वरी का महाबीज (ह्रीं) चैतन्य एवं आनन्दवर्द्धक है ।।३७।।

पञ्चदशाक्षरी विद्या कामेनोपासिता ध्रुवम् ।
ई-काराद्या महाविद्या ह-काराद्या महेश्वरि ।।३८।।
अगस्त्योपासिता विद्या भुवनत्रय दुर्ल्लभा ।
त्रिकूटाद्यै ई-कारोऽयं स-कारश्च त्रिकूटके ।।३९।।
ह-कारो ज्योतिरूपोऽयं श्रूयतां वरवर्णिनि ।
क-कारे च महादेवि केवलं कामनार्थकः ।।४०।।
ह-कारश्च महेशानि शम्भुर्देवो महेश्वरि ।
ए-कारे नवदुर्गा च ई-कारे शम्भु-मातृका ।।४१।।
केवलं मोक्षदा देवि ल-कारे विश्वरूपिणी ।
मायाबीजं महेशानि त्रिशक्तिः परिकीर्त्तिता ।।४२।।
ह-कारे च क-कारे च ए-कारे च महेश्वरि ।
ब्रह्माणी वैष्णवी देवी रुद्राणी परिकीर्त्तिता ।।४३।।
ई-कारे च म-कारे च मायाबीजेन सुन्दरि ।
ब्रह्माविष्णुर्महेशश्च सत्यं देवि न संशयः ।।४४।।

भुवनेश्वरी का पञ्चदशाक्षर मन्त्र कामदेव का ध्रुव उपास्य है। हे महेश्वरि! इस मन्त्र के आदि में ई-कार एवं ह-कार का योग करने पर, वह भुवनत्रय-दुर्लभ अगस्त्योपासित भुवनेश्वरी मन्त्र बन जाता है। इस मन्त्र के आदि में ह-कार एवं स-कार का योग करने पर, वह 'त्रिकूटा मन्त्र' बन जाता है ।।३८-३९।।

हे वरवर्णिनि! हे महादेवि! श्रवण करें। ह-कार ज्योतिःस्वरूप है एवं क-कार काम एवं अर्थ-प्रदायक है ।।४०।।

हे महेशानि! हे महेश्वरि! ह-कार देवता शम्भुस्वरूप है, ए-कार नवदुर्गा है एवं ई-कार शम्भु (नव) मातृकारूपी है ।।४१।।

हे देवि! ल-कार विश्वरूपिणी एवं मोक्षदायिनी है। हे महेशनि! मायाबीज (ह्रीं) त्रिशक्तिरूपिणी हैं ।।४२।।

हे महेश्वरि! ह-कार, क-कार एवं ए-कार— यथाक्रम से ब्रह्माणी, वैष्णवी एवं रुद्राणी-रूप में कही जातीं हैं ।।४३।।

हे देवि! ई-का, म-कार एवं मायाबीज (ह्रीं) यथाक्रम से ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर-स्वरूप हैं। यह ध्रुव सत्य है एवं इस विषय में बिन्दुमात्र भी सन्देह नहीं है ।।४४।।

स-कारे च क-कारे च ए-कारे च सुरेश्वरि।
ब्रह्मशक्ति विष्णुशक्ति महेशी च प्रकीर्त्तिता।।४५।।
मनुप्रतिष्ठिता विद्या चतुर्वर्ग-फलप्रदा।
निष्कला च महेशानि सकला परिकीर्त्तिता।।४६।।
स-काराद्या महाविद्या मायाद्या च सुरेश्वरि।
सर्वसम्पत् प्रदा देवी चन्द्रलोके प्रतिष्ठिता।।४७।।
ह-काराद्या महेशानि ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका।
मायान्ता च महेशानि त्रिशक्तिः परिकीर्त्तिता।।४८।।
ब्रह्मरूपा महाविद्या कुबेरोपासिता ध्रुवम्।
धनदात्री महादेवी त्रिवर्ग-फलदायिनी।।४९।।
ह-काराद्या क-काराद्या स-काराद्या सुरेश्वरि।
पूर्णरूपा महारूपा महामाया प्रकीर्त्तिता।।५०।।
मायान्ता च महादेवी निर्गुणा सगुणा सती।
लोपामुद्रा महेशानि विष्णुलोके सुदुर्लभा।।५१।।

हे सुरेश्वरि! स-कार, क-कार एवं ए-कार यथाक्रम से ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र की शक्ति-रूप में कही जातीं हैं ।।४५।।

हे महेशानि! मनु ने इस मन्त्र की प्रतिष्ठा की है। यह चतुर्वर्गफलप्रदा एवं निष्कला होने पर भी सकला-रूप में वर्णिता होती हैं ।।४६।।

हे सुरेश्वरि! आदि में स-कार एवं मायाबीज (ह्रीं) युक्त यह मन्त्र सर्वसम्पत्प्रदा है। यह मन्त्र चन्द्रलोक में प्रतिष्ठित है ।।४७।।

हे महेशानि! आदि में ह-कार युक्त होने पर,वह ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवात्मक बन जाता है एवं इस मन्त्र के अन्त में ह्रीं रहने पर,वह त्रिशक्ति-स्वरूपिणी बन जाती है ।।४८।।

त्रिशक्ति (ह्रीं) युक्त यह महामन्त्र कुबेराराधित मन्त्र है। यह मन्त्र धन एवं त्रिवर्ग-फल को प्रदान करता है ।।४९।।

हे सुरेश्वरि! मन्त्र के आदि में ह, क एवं स रहने पर, वह पूर्णाङ्गी महामाया का महारूप के नाम से कही जाती है ।।५०।।

हे महेशानि! मन्त्र के अन्त में मायाबीज ह्रीं रहने पर वह महादेवी का निर्गुणात्मक मन्त्र बन जाने पर भी, सगुणात्मक-रूप में परिगणित होता है। इसे 'लोपामुद्रा मन्त्र' कहते हैं। यह विष्णुलोक में भी सुदुर्लभ है ।।५१।।

त्रिकूटा च महादेवि श्रूयतां वरवर्णिनि ।
स-काराद्या महेशानि सृष्टिस्थितिलयात्मिका ।।५२।।
मायान्ते च महादेवी ब्रह्माणी वैष्णवी शिवा ।
मङ्गलोपासिता विद्या सर्वेषामानन्दवर्द्धिनी ।।५३।।
ज्ञानदात्री महादेवी पूर्णरूपा फलप्रदा ।
क-कारे च ए-कारे च ई-कारे च सुरेश्वरि ।।५४।।
पालनी-कारिणी देवी नाशिनी च सुरेश्वरि ।
स-कारे भीमरूपा च माया चैव सनातनी ।।५५।।
त्रिकूटस्थं कामबीज-महायोग-स्वरूपकम् ।
सर्वस्मिन्नेव मन्त्रे तु नादश्चैतन्यरूपकम् ।।५६।।
बिन्दुर्ब्रह्म महादेवि सत्यं सत्यं न संशयः ।
सूर्येणोपासिता विद्या आयुरारोग्यवर्द्धिनी ।।५७।।
कामाख्या मोक्षदा देवि ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका ।
मोक्षदा नादशक्तिश्च केवलं ब्रह्मरूपकम् ।।५८।।

हे वरवर्णिनि! त्रिकूटा महादेवी के मन्त्र को श्रवण करें। हे महेशानि! आदि में स-कार से युक्त होने पर, वह सृष्टि, स्थिति एवं लयात्मक बन जाता है ।।५२।।

मन्त्र के अन्त में मायाबीज ह्रीं रहने पर, वह ब्रह्माणी, वैष्णवी एवं रुद्राणी-रूपिणी शक्ति के रूप में कही जाती है। वह मङ्गल के द्वारा उपासित विद्या है एवं सभी के आनन्दवर्द्धनकारिणी है ।।५३।।

त्रिकूटा महादेवी ज्ञानदात्री एवं पूर्णफलप्रदा हैं। हे सुरेश्वरि! क-कार, ए-कार, एवं ई-कार यथाक्रम से पालिनी, सृष्टि एवं नाशिनी शक्ति हैं। स-कार भीम-रूपा हैं एवं माया (ह्रीं) सनातनी आद्याशक्ति है ।।५४-५५।।

त्रिकूटस्थ कामबीज (क्लीं) महायोग-स्वरूप है। उक्त समस्त मन्त्रों में ही नाद चैतन्यरूपी है ।।५६।।

हे महादेवि! बिन्दु (चन्द्रबिन्दु) ब्रह्मस्वरूप है। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। यह ध्रुव सत्य है। यह सूर्य के द्वारा उपासिता विद्या है। यह आयु एवं आरोग्यवर्द्धक है ।।५७।।

हे देवि! कामाख्या (काली) मोक्षदायिनी हैं एवं ये ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवात्मिका हैं। ये नादशक्ति एवं मोक्षदायिनी हैं तथा केवल ब्रह्मस्वरूप हैं ।।५८।।

बीजद्वये सुरेशानि धनेशी च प्रकीर्त्तिता ।
बीजत्रये महादेवि! ब्रह्माणी वैष्णवी शची ।।५९।।
क-कारे कालिका देवीं ए-कारे वाक्यरूपिणी ।
ई-कारे भैरवी माया देवी निर्वाणरूपिणी ।।६०।।
ह-कारे वैष्णवी देवी स-कारे च सरस्वती ।
क-कारे कमला देवी ह-कारे हाकिनी तथा ।।६१।।
ल-कारे निर्गुणा देवी साक्षान्मोक्ष प्रदायिनी ।
बीजान्यन्यानि देवेशि भुक्तिदं मुक्तिदं स्मृतम् ।।६२।।
यति र्वा भूपतिर्वापि नान्यः शक्तः सुरेश्वरि ।
शूद्रश्चापि महेशानि न कुर्यान्मन्त्रचिन्तनम् ।।६३।।
राज्यं देयं महेशानि न दद्यात् षोडशाक्षरम् ।
शिरो देयं महेशानि न प्रकाश्यं सुरेश्वरि ।।६४।।
तव स्नेहान्महादेवि कथितं वरवर्णिनि ।
अथ वक्ष्ये जगद्धात्रि! भैरव्या मन्त्रमुत्तमम् ।।६५।।

हे सुरेशानि! उक्त बीजद्वय को 'धनेशी' कहा जाता है। हे महादेवि! उक्त बीजत्रय में ब्रह्माणी, वैष्णवी एवं शचीशक्ति विद्यमाना है ।।५९।।

क-कार स्वयं कालिका देवी हैं। ए-कार वाक्शक्तिरूपिणी हैं। ई-कार निर्वाण-रूपिणी माया एवं भैरवी देवी हैं ।।६०।।

ह-कार वैष्णवीरूपिणी हैं, स-कार देवी सरस्वती हैं। क-कार कमला (लक्ष्मी) देवी हैं एवं ह-कार हाकिनी शक्ति हैं ।।६१।।

ल-कार साक्षात् मोक्षप्रदायिनी निर्गुणा शक्ति है। हे देवेशि! अन्यान्य बीजों को भी भोगप्रद एवं मोक्षप्रद जानें ।।६२।।

हे सुरेश्वरि! केवल यति एवं नरपति ही इस मन्त्र के साधन में सक्षम है। अन्य कोई इस मन्त्र के साधन में सक्षम नहीं है। हे महेशानि! शूद्र कदापि इस मन्त्र का चिन्तन न करें ।।६३।।

हे महेशानि! राज्य को प्रदान कर दें अथवा भले ही अपने शिर भी प्रदान कर दें, किन्तु कदापि इस षोडशाक्षर मन्त्र को किसी के भी निकट प्रकाशित न करें ।।६४।।

हे वरवर्णिनि! आप के प्रति स्नेहवश इस षोडशाक्षर मन्त्र को प्रकाशित किया हूँ। इसके अनन्तर जगद्धात्री भैरवी के उत्तम मन्त्र को बता रहा हूँ ।।६५।।

यस्य विज्ञानमात्रेण राज्यभोगफलं लभेत् ।
मुक्तिदं कामदं देवि परमानन्द कारकम् ।।६६।।
ह-कारश्च स-कारश्च र-कारश्च महेश्वरि ।
शिवः पराशिवश्चैव परापरः शिवः पुनः ।।६७।।
ए-कारः शक्तिरूपा च नाद-बिन्दुः सनातनी ।
ह-कारश्च स-कारश्च क-कारश्च महेश्वरि ।।६८।।
परा च परमा चैव ईश्वरी परिकीर्त्तिता ।
र-कारश्च ई-कारश्च भैरवी भयनाशिनी ।।६९।।
सम्पत्प्रदा यदा देवी तदा सम्पत्प्रदायिनी ।
चैतन्यभैरवी मन्त्रं केवलं मोक्ष साधनम् ।।७०।।
कामेश्वरीमहामन्त्रं नादबिन्दुस्वरूपकम् ।
चतुर्वर्गप्रदं देवि शृणुष्व हरवल्लभे ।।७१।।
षट्कूटा भैरवी देवी षट्-कर्म-फलदायिनी ।
ब्रह्माणी वैष्णवी चैव रुद्राणी परिकीर्त्तिता ।।७२।।
भोगदा मोक्षदा देवी प्रथमे भोगदायिनी ।
मध्यमे भोगदा प्रोक्ता अन्ते च मोक्षदा स्मृता ।।७३।।

इस मन्त्र का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर, राज्यभोगरूप फल का लाभ होता है। यह मन्त्र काम्यफलदाता, मुक्तिदाता एवं परमानन्ददायक है ।।६६।।

हे महेश्वरि! ह-कार, स-कार एवं र-कार यथाक्रम से शिव, पराशिव एवं परापर शिव-रूपी हैं ।।६७।।

ए-कार शक्तिस्वरूपा हैं एवं नादबिन्दु सनातनी आद्याशक्ति हैं। हे महेश्वरि! ह-कार, स-कार एवं क-कार यथाक्रम से पराशक्ति, परमाशक्ति एवं ईश्वरी नाम से कही जाती है। र-कार एवं ई-कार यथाक्रम से भैरवी एवं भयविनाशिनी हैं ।।६८-६९।।

जब देवी सम्पत्प्रदा बनती हैं तब र-कार एवं ई-कार सम्पत्प्रदायिनी बन जाती हैं। चैतन्यभैरवी मन्त्र मोक्षप्रदायक है ।।७०।।

कामेश्वरी महामन्त्र नादबिन्दु-स्वरूप है। हे देवि! हे हरवल्लभे! चतुर्वर्ग फलप्रदा, षट्कर्मफलदायिनी, षट्कूटा भैरवी के मन्त्र को बता रहा हूँ, श्रवण करें। षट्कूटा भैरवी एकाधार में ब्रह्माणी, वैष्णवी एवं रुद्राणी के नाम से अभिहिता होतीं हैं ।।७१-७२।।

षट्कूटा भैरवी भोग एवं मोक्ष प्रदायिनी है। वह पहले एवं मध्यभाग में भोग प्रदान करती हैं तथा अन्तिमकाल में मोक्ष प्रदान करतीं हैं ।।७३।।

नादबिन्दु - समायोगाच्चतुर्वर्ग - फलप्रदा ।
रुद्राणी वैष्णवीमन्त्र-श्चतुर्वर्ग फलप्रदः ।।७४।।
ह-कारे च स-कारे च ख-कारे च महेश्वरि ।
फ-कारे च र-कारे च नादबिन्दु समन्विता ।।७५।।
हाकिनी शाकिनी चैव डाकिनी च महेश्वरि ।
प्रेतबीज-समायोगात् पञ्चप्रेताः प्रकीर्त्तिताः ।।७६।।
भुवनेशी-भैरवीणां मन्त्रश्च भूप्रदायकः ।
ह स कामस्वरूपश्च कलरी राज्यभोग्यदा ।।७७।।
प्रेतबीजं महादेवः सर्वदुर्गतिनाशकः ।
नादः शक्तिकला चैव बिन्दुरूपः सदाशिवः ।।७८।।
त्रिपुरा-बालिका-मन्त्रं शृणुष्व हरवल्लभे ।
अष्टावर्गप्रदो मन्त्रः साधको मन्त्रनायकः ।।७९।।
ऐं-कारो विश्वजननी क्लीं-कारो बिन्दुमातृका ।
औ-कारेण स-कारेण रसनासंयुतो प्रिये ।।८०।।
अष्टवर्गप्रदो मन्त्रो भैरव्याः सुरसुन्दरी ।
वाग्भवं कामबीजञ्च सौ-कारश्च महेश्वरि ।।८१।।
ई-कारश्च सदा रुद्रो महारुद्रः प्रकीर्त्तितः ।
केवलं कालिकायाश्च मनुं शृणु नितम्बिनि ।।८२।।

नादबिन्दु के सहयोग से यह मन्त्र चतुर्वर्गफल को प्रदान करता है। यह एकाधार में चतुर्वर्गफलप्रद रुद्राणी एवं वैष्णवी मन्त्र है ।।७४।।

हे महेश्वरि! नादबिन्दु-समन्वित ह-कार, स-कार, ख-कार, फ-कार एवं र-कार— ये हाकिनी, शाकिनी, एवं डाकिनी शक्ति हैं। प्रेतबीज (हे सौ) के योग से ये 'पञ्चप्रेत' के नाम से कही जातीं हैं भुवनेशी-भैरवी का मन्त्र पृथिवी-प्रदायक है। ह स— ये वर्णद्वय कामस्वरूप हैं एवं कलरी राज्यभोग-प्रदायक हैं ।।७५-७७।।

प्रेतबीज सर्वदुर्गति विनाशक है। नाद ही शक्ति एवं कालरूपी हैं एवं बिन्दु ही सदाशिव है ।।७८।।

हे हरवल्लभे! अधुना 'बाला त्रिपुरा' मन्त्र का श्रवण करें। इस मन्त्र से साधक अष्टवर्गफल का लाभ करता है ।।७९।।

ऐं विश्वजननी है एवं क्लीं बिन्दुमातृकारूपिणी है। हे प्रिये! इनके साथ औ-कार, स-कार एवं रसना (क्रीं) संयुक्त होने पर, सुरसुन्दरी भैरवी का मन्त्र अष्टवर्गप्रद बन जाता है। हे महेश्वरि! वागभवबीज (ऐं), कामबीज (क्लीं), सौ-कार एवं ई-कार— ये सर्वदा रुद्र एवं महारुद्र के नाम से कही जाती हैं। हे नितम्बिनि! कालिका मन्त्र का श्रवण करें ।।८०-८२।।

आ-कारात् शिवशक्तिश्च हसरै रुद्ररूपिणी ।
हसकारान्महादेवि मायाबीजञ्च बीजकम् ।।८३।।
नादशक्ति-समायोगात् चैतन्यानन्दवर्द्धिनी ।
कलबीजं महादेवि वर्गे सः परिकीर्त्तितः ।।८४।।
क्रोंकारा प्राणरूपा च हसरौं मोक्षदायिनी ।
दशाक्षरी महाविद्या सर्वेषां सिद्धिदा स्मृता ।।८५।।
प्रणवाद्या महादेवी षोडशी परिकीर्त्तिता ।
नवकूटा महाविद्या नवसिद्धि-फलप्रदा ।।८६।।
कूटत्रये त्रिशक्तिश्च मूलदानन्द-मोहिनी ।
नवाक्षरी भैरवी च नवसिद्धि-प्रदायिनी ।।८७।।
नादशक्ति-समायोगे ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका ।
ऐं-कारं मायया देवि पुटितं शतगुणं जपेत् ।।८८।।
तेजस्वी भावमाप्नोति सर्वकामफलं लभेत् ।
क्लिन्नेति मोक्षदा-मन्त्रो महामन्त्रः प्रकीर्त्तितः ।।८९।।

आ-कार शिव एवं शक्ति-स्वरूप है एवं हसरै रुद्ररूपिणी हैं। हे महादेवि! ह स एवं मायाबीज (ह्रीं) नादशक्ति के योग से चैतन्य एवं आनन्दवर्द्धिनी बन जाती है। हे महादेवि! 'कल' बीज को स-वर्ग नाम से अभिहित किया जाता है ।।८३-८४।।

'क्रों' बीज प्राणस्वरूपा है एवं हसरौं मोक्षदायिनी है। यह दशाक्षरी महामन्त्र सब सिद्धियों को प्रदान करता है ।।८५।।

इस मन्त्र के आदि में प्रणव युक्त होने पर, वह महादेवी षोडशी का मन्त्र बन जाता है। नवकूटा महामन्त्र नवसिद्धियों को प्रदान करता है ।।८६।।

'त्रिकूटा' मूल त्रिशक्ति है एवं आनन्द तथा मोहिनीरूपा है। नवाक्षरा भैरवीमन्त्र नवसिद्धियों को प्रदान करता है ।।८७।।

नाद एवं शक्ति के समायोग से ये मन्त्राक्षर समूह ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवात्मिका बन जाती है। हे देवि! पहले मन्त्र को 'ऐं' एवं 'ह्रीं' बीज के द्वारा पुटित कर, अष्टोत्तर शत बार मन्त्र-जप करें ।।८८।।

'ऐं' एवं 'ह्रीं' बीज के द्वारा पुटित करके मन्त्र का जप करने पर, मन्त्र तेजस्वीभावापन्न बन जाता है। उस तेजसम्पन्न मन्त्र का जप करने पर, सर्वप्रकार काम्य-फलों का लाभ होता है। 'क्लिन्ना' देवी का महामन्त्र है। यह मोक्षप्रदायक कहा जाता है ।।८९।।

अन्नपूर्णेश्वरी देवी भैरवी परिकीर्त्तिता ।
अन्नदा मोक्षदा देवी भैरवी सा ध्रुवं प्रिये ।।९०।।
ब्रह्माणी वैष्णवी देवी रुद्राणी च सरस्वती ।
नमो भगवती देवी सर्वकाम-फलप्रदा ।।९१।।
महेश्वरि महादेवि पञ्चरुद्रः प्रकीर्त्तितः ।
श्रीबीज-पुटितेनैव शतमष्टोत्तर जपेत् ।।९२।।
यदा चैव महेशानि मन्त्रोऽयं फलदः स्मृतः ।
किञ्चिच्चैव महेशानि कथितं प्राणवल्लभे ।
न प्रकाश्यं महादेवि पशोरग्रे कदाचन ।।९३।।

इति कुब्जिकातन्त्रे पार्वती-परमेश्वर-संवादे श्रीविद्याया भैरव्याश्च मन्त्रव्याख्या नाम तृतीयः पटलः ।।

देवी, अन्नपूर्णा एवं भैरवी नामों से भी अभिहिता होतीं हैं। हे प्रिये! देवी अन्नपूर्णा अन्न एवं मोक्षदायिनी हैं एवं वही शक्तिस्वरूपा भैरवी हैं ।।९०।।

जो ब्रह्माणी, वैष्णवी, रुद्राणी एवं सरस्वतीरूपा हैं, सर्वकामफलप्रदा हैं, उन देवी भगवती को नमस्कार करता हूँ ।।९१।।

हे महेश्वरि! जो महादेवी हैं, वहीं 'पञ्चरुद्र' के नाम से कही जाती हैं। हे महेशानि! पहले "श्रीं" बीज से पुटित कर, उसके बाद अष्टोत्तर शत मन्त्र का जप करें। वैसा करने पर, मन्त्र फलप्रसू होता है। हे महेशानि! मैं आपके निकट कुछ ही परिमाण में मन्त्रार्थ को प्रकाशित किया हूँ। हे प्राणवल्लभे! पशु-साधक के समीप इसे कदापि प्रकाशित न करें ।।९२-९३।।

कुब्जिकातन्त्र में पार्वती-परमेश्वर-संवाद में
श्रीविद्याभैरवी-मन्त्र-व्याख्या नामक
'तृतीय पटल' समाप्त ।।३।।

चतुर्थः पटलः

श्री शिव उवाच–

प्रचण्डचण्डिका-मन्त्रं शृणु पार्वति यत्नतः।
न प्रकाश्यं महादेवि न प्रकाश्यं कदाचनः।।१।।
रहस्यं परमं देवि त्रिषु लोकेषु गोपितम्।
देव्याश्चक्षुः क-कारेण ल-कारेण च तारिका।।२।।
ई-कारेण भ्रूवोर्मध्यं नादबिन्दुः शिखा ध्रुवम्।
कूर्चबीजं कपालञ्च वाग्भवं वाक्यमेव च।।३।।
भुनेशी नासिका च वज्रकण्ठः प्रकीर्त्तितम्।
त्रयो नादाः शक्तिरूपा जिह्वाञ्च रोचनीयकम्।।४।।
यच्चैव दन्तपङ्क्तिञ्च कूर्चबीजं च मानसम्।
कूर्चं प्राणमयं देवि फट्-कारं स्तनयुग्मकम्।।५।।
अघोरः स्वाहया चैव जानीयात् सुरपूजिते।
पञ्चाक्षरी महाविद्या डाकिनी परिकीर्त्तिता।।६।।
एकादशाक्षरी विद्या वर्णिनी परिकीर्त्तिता।
धनदा मोक्षदा देवी सर्वकामफलप्रदा।।७।।

शिव ने कहा— हे पार्वति! एकाग्रचित्त से प्रचण्डचण्डिका (छिन्नमस्ता या मस्तका) मन्त्र का श्रवण करें। हे महादेवि! इस मन्त्र को कदापि प्रकाशित न करें ।।१।।

हे देवि! यह त्रिभुवन में गोपित परम रहस्य है। क-कार देवी का चक्षु है एवं ल-कार त्राणकारिणी शक्ति है ।।२।।

ई-कार भ्रू-मध्यस्थित नादबिन्दु शिखास्वरूप है। कूर्चबीज (हूं) ललाटस्वरूप है एवं वाग्भवबीज (ऐं) वाक्यरूपी है। भुवनेशी बीज (ह्रीं) उनकी नासिका एवं वज्रकण्ठ है। तीन नाद उनकी शक्ति एवं जिह्वा-रोचनीयक है ।।३-४।।

जो देवी की दन्तपङ्क्ति है, वही कूर्चबीच रूपी मन है। हे देवि! कूर्चबीच ही देवी का प्राण है एवं 'फट्' उनके स्तनद्वय हैं ।।५।।

हे सुरपूजिते! 'स्वाहा' के योग से यह अघोरमन्त्र बन जाता है। इस पञ्चाक्षरी महामन्त्र को डाकिनीमन्त्र कहा जाता है ।।६।।

एकादशाक्षरी मन्त्र को वर्णिनी कहा जाता है। प्रचण्डचण्डिका देवी धन, मोक्ष एवं सर्वकामफल प्रदान करतीं हैं ।।७।।

अस्यैव पूजाकाले च भुवनेषु च सुन्दरि ।
यति र्वा भूपति र्वापि नान्योऽस्ति पूजकः पुनः ।।८।।
आराधने महादेव्याः शस्त्राघातं लभेद् ध्रुवम् ।
शस्त्राघातात् भवेन्मुक्तिः सत्यं सत्यं सुरेश्वरि ।।९।।
शृणु देवि सदामत्ते भक्तानां त्राणकारिणीम् ।
धूमावतीं महाविद्यां महायोग-प्रभाविनीम् ।।१०।।
तस्या मन्त्रं प्रवक्ष्यामि शृणुष्व हरवल्लभे ।
ध-कारे सर्वधर्माणि ऊ-कारे पालिनी स्मृता ।।११।।
चैतन्यरूपिणीदेवी महाकाल-नितम्बिनी ।
धू-कारे नाशिनी देवी महाप्रलय-कारिणी ।।१२।।
म-कारे कामरूपा च आ-कारे रतिसुन्दरी ।
व-कारे कामरूपा च ती-कारे तीक्ष्णधारिणी ।।१३।।
स्वाहा चैव महाविद्या तस्या मन्त्रं शृणु प्रिये ।।१४।।
तस्य विज्ञानमात्रेण कृतकृत्यो भवेन्नरः ।
प्रणवं निर्गुणं देवि ला सा चैव त्रिशक्तिका ।।१५।।

हे सुन्दरि! प्रचण्डचण्डिका की पूजा में केवल यति या नरपति ही अधिकारी हैं। इसे छोड़कर अन्य कोई इस पूजा का अधिकारी नहीं है ।।८।।

हे सुरेश्वरि! प्रचण्डचण्डिका की आराधना करने पर, साधक अवश्य शस्त्राघात प्राप्त होता है। उस शस्त्राघात के फलस्वरूप साधक मुक्ति-लाभ करता है। यह ध्रुव (निश्चित) सत्य है ।।९।।

हे देवि! महायोग-प्रभाविनी एवं भक्तों की त्राणकारिणी धूमावती के महामन्त्र का श्रवण करें ।।१०।।

हे हरवल्लभे! धूम्रावती के मन्त्र को बता रहा हूँ, श्रवण करें। ध-कार सर्वधर्मरूपी है एवं ऊ-कार पालिनी शक्ति है ।।११।।

देवी धूमावती चैतन्यरूपिणी हैं एवं वह महाकाल की शक्ति हैं। धू-कार महाप्रलय कारिणी नाशिनी-शक्ति है ।।१२।।

म-कार कामरूपा हैं एवं आ-कार रतिदेवी हैं। व-कार कामस्वरूप हैं एवं ती-कार तीक्ष्णगुणरूपिणी हैं ।।१३।।

हे महेशानि! 'स्वाहा मन्त्र' 'भैरवी' नाम से अभिहिता होती है। हे प्रिये! दश महाविद्या की अन्यतमा बगला के महामन्त्र को बता रहा हूँ, श्रवण करें। इस मन्त्र के ज्ञान-लाभ मात्र से मानव सर्वकाम-सिद्धि का लाभ करता है। हे देवि! प्रणव निर्गुण है एवं 'ला' त्रिशक्तिरूपिणी है ।।१४-१५।।

बगला विष्णु-रुद्राणी ल-कारश्च हरः प्रिये।
मुखीति देवताः सर्वाः सर्वदैत्य विनाशिनी।।१६।।
सर्वः सर्वेश्वरः प्रोक्तो दुष्टानां दुष्टनाशिनी।
वाणीवाक्य-स्वरूपा च मुखं मोहनकारिणी।।१७।।
स्तम्भयति वशीरूपा जगतां वशकारिणी।
जिह्वा चैव महामाया जिह्वारूपा प्रकीर्त्तिता।।१८।।
कीलय कीलय चेति जगत्क्षोभणकारिणी।
बुद्धिं च बुद्धिरूपा सा नाशय नाशकारिणी।।१९।।
माया च प्रणवश्चैव सर्वेषां ज्ञानकारिणी।
स्वाहा चैव महाविद्या यज्ञरूपा हविर्भुजः।।२०।।
मातङ्गी च महाविद्या सर्वतन्त्रे प्रतिष्ठिता।
शृणु देवि महाभद्रे भक्तानां त्राणकारिणी।।२१।।
श्रीबीजं विश्वरूपञ्च मायाबीजं च कामदम्।
क्षं क्षेत्रदञ्चैव मातङ्गी मदनातुरा।।२२।।
स्वाहा च ब्रह्मरूपैव ब्रह्मणा च प्रतिष्ठिता।
अथ वक्ष्य महेशानि कमलामन्त्रमुत्तमम्।।२३।।

'बगला' विष्णु एवं रुद्राणी हैं तथा 'ल'-कार शिव है। हे प्रिये! 'मुखि' सर्वदैत्यविनाशिनी, सर्वदेवतास्वरूपा दुर्गा हैं ।।१६।।

'मुखि' सर्वदुष्ट-विनाशिनी सर्वेश्वर, वाणीरूपा, वाक्स्वरूपा एवं वाक्यस्तम्भनकारिणी है ।।१७।।

बगलामुखी स्तम्भनरूपा एवं जगत् स्तम्भनकारिणी हैं एवं वशीकरणशक्ति के प्रभाव से जो जगत्-वशकारिणी हैं, वही महामाया एवं जिह्वा-शक्ति (वाक्य) की अधिष्ठात्री हैं ।।१८।।

"कीलय कीलय" शब्द जगत् क्षोभण-कारिणी है। बगलामुखी बुद्धिस्वरूपा हैं। "नाशय नाशय" शब्द जीवों के बुद्धि-नाशकारिणी हैं ।।१९।।

मायाबीज (ह्रीं) एवं प्रणव सर्वभूतों के ज्ञानदात्री हैं एवं "स्वाहा" यज्ञस्वरूपा एवं हविर्भोजी हैं ।।२०।।

हे देवि! हे महाभद्रे! सर्वतन्त्रोल्लिखित भक्तत्राणकारिणी महाविद्या मातङ्गी के मन्त्र का श्रवण करें ।।२१।।

श्रीबीज (श्रीं) विश्वरूपी हैं एवं मायाबीज (ह्रीं) कामसिद्धिदाता हैं। 'क्षं' क्षेत्रदानकारी है एवं मातङ्गी मदनातुरा हैं ।।२२।।

'स्वाहा' ब्रह्मस्वरूप है एवं ब्रह्म के द्वारा ही प्रतिष्ठित है। हे महेशानि! इसके अनन्तर मैं उत्तम कमलामन्त्र को बता रहा हूँ ।।२३।।

यस्य विज्ञानमात्रेण समृद्धिं लभते ध्रुवम्।
भोगदा मोक्षदा देवी लक्ष्मीरूपा प्रकीर्त्तिता ।।२४।।
श्रीबीजं केवलं लक्ष्मीर्नादो मोक्षस्य दायकः।
एकाक्षरी महाविद्या सर्वकाम प्रदायिनी ।।२५।।
वाग्भवाद्या महादेवी वागीशत्व प्रदायिनी।
लज्जाबीजं महेशानि ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।।२६।।
कामबीजन्तु देवेशि लक्षीर्माया सरस्वती।
नादश्चैतन्यरूपोऽसौ विष्णुः परशिवो मतः ।।२७।।
मन्त्रव्याख्या महेशानि संक्षेपात् कथिता प्रिये।
न प्रकाश्यमिदं देवि पशोरग्रे कदाचन ।।२८।।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले देवाश्च सिद्धिदायिकाः।
प्रशंसन्ति सदा सर्वे तं दृष्ट्वा साधिकोत्तमम् ।।२९।।

इति कुब्जिकातन्त्रे पार्वती-परमेश्वर संवादे चतुर्थः पटलः ।।४।।

इस मन्त्र के ज्ञान का लाभ करने पर, साधक निश्चय ही समृद्धि का लाभ करता है। कमला देवी लक्ष्मीस्वरूपा हैं एवं भोग तथा मोक्ष-प्रदायिनी हैं ॥२४॥

श्री-बीज लक्ष्मी हैं एवं 'नाद' मोक्ष प्रदान करता है। 'श्रीं' इस एकाक्षरी महामन्त्र के सर्व-आदि में बाग्भवबीज 'ऐं' प्रदान करने पर, (ऐं श्रीं) यह मन्त्र वागीशत्व को प्रदान करता है। हे महेशानि! लज्जाबीज (ह्रीं) ब्रह्मा-विष्णु-शिवात्मक है ॥२५-२६॥

हे देवेशि! कामबीज (क्लीं) लक्ष्मीस्वरूपा है एवं मायाबीज (ह्रीं) सरस्वतीरूपिणी है। 'नाद' चैतन्यस्वरूप है एवं विष्णु भी परमशिवरूपी हैं ॥२७॥

हे प्रिये! संक्षेप में मैंने इस मन्त्र की व्याख्या कर दिया है। पशु-साधक के निकट कदापि इस मन्त्र को प्रकाशित न करें ॥२८॥

स्वर्ग में, मर्त्त्य में एवं पाताल में देवतागण ही मन्त्रसिद्धि को प्रदान करते हैं। जो साधक पशुभाव से आराधनाकारी के निकट इस मन्त्र को प्रकट नहीं करता है, देवतागण उस साधकश्रेष्ठ का दर्शन करने पर सर्वदा (उनकी) प्रशंसा करते हैं ॥२९॥

कुब्जिकातन्त्र में पार्वती-परमेश्वर-संवाद
में चतुर्थ पटल समाप्त ।।४।।

पञ्चमः पटलः

अथ मन्त्रचैतन्यकथनम् ।

श्रीपार्वत्युवाच ।।

भगवन् देवदेवेश लोकानां हितकारक ।
चतुर्वर्गप्रदं देव चैतन्यं मे प्रकाशय ।।१।।

श्रीशिव उवाच–

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि चैतन्यं परमाद्भुतम् ।
रहस्यं परमं गुह्यं गोपनीयं त्वया पुनः ।।२।।
चित्शक्त्या ध्वनितं देवि परिणामक्रमेण तु ।
वर्णभावं समाश्रित्य निर्गुणं सद्गुणात्मकम् ।।३।।
षट्चक्रञ्च तथा भित्वा शब्दरूपं सनातनम् ।
नादबिन्दु-समायुक्तं चैतन्यं परिकीर्त्तितम् ।।४।।
अथवान्य प्रकारेण श्रूयतां पद्मलोचने ।
विना येन न सिध्यन्ति जपपूजादिकानि च ।।५।।

अधुना मन्त्रचैतन्य का कथन कहा जा रहा है —

पार्वती ने कहा— हे भगवन्! आप देवतागणों के ईश्वर हैं एवं सर्वलोक हितकारक हैं। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्षप्रदायक मन्त्रचैतन्य-पद्धति को आप मेरे निकट प्रकाशित करें ।।१।।

शिव ने कहा— हे देवि! मैं परमाद्भुत मन्त्रचैतन्य का वर्णन कर रहा हूँ, श्रवण करें। यह अत्यन्त रहस्यपूर्ण एवं गोपनीय है। आप भी इसे सर्वप्रयत्न से गोपन करें ।।२।।

हे देवि! मूलाधार से सहस्रार पर्यन्त षट्चक्र में सभीवर्ण चित्शक्ति में अवस्थान कर रहे हैं। चित्शक्ति निर्गुण होने पर भी वर्णभावाश्रय के कारण वह गुणात्मकरूप से प्रकाशित हो रहा है ।।३।।

नादबिन्दुयुक्त वर्णमयी शक्ति जब षट्चक्रों का भेदन कर उत्थित होता है, तभी वह सनातन चित्शक्ति-रूप में प्रकाशित होता है ।।४।।

हे कमललोचने! जिस मन्त्र-चैतन्य के बिना जप-पूजा प्रभृति कुछ भी सिद्ध नहीं होता है, मैं उसके प्रकारान्तर विधान को बता रहा हूँ, श्रवण करें ।।५।।

अनाहतस्य मध्ये तु ग्रथितं वर्णमुत्तमम् ।
सुषुम्नावर्त्मना देवि कण्ठदेश-विनिर्गतम् ।।६।।
चैतन्यञ्च महेशानि योगीनां योगरूपकम् ।
सहस्रारे वर्णरूपं परिणाम क्रमेण तु ।।७।।
कर्णिकामध्यसंस्थे तु नादबिन्दु समन्वितम् ।
एवं संचिन्तयेद् देवीं चैतन्यमुत्तमं पुनः ।।८।।
मन्त्राक्षराणि चित्शक्तौ ग्रथितानि महेश्वरि ।
तानि संचिन्तयेद्देवि सहस्रारे दले सदा ।।९।।
चैतन्यमन्त्ररूपा सा चैतन्यानन्ददायिनी ।
चैतन्यं नादशक्तिश्च चैतन्यं वर्णरूपकम् ।।१०।।
मणिपुरे सदा चिन्त्यं मन्त्राणां प्राणरूपकम् ।
अथवान्य प्रकारेण श्रूयतां वरवर्णिनि ।।११।।
कामबीजं रमाबीजं शक्तिबीजं सुरेश्वरि ।
एतानि पूर्वमुच्चार्य मातृकां तदनन्तरम् ।।१२।।

हे देवि! अनाहत पद्म में उत्तमवर्ण ग्रथित है। सुषुम्नावर्त्म में कण्ठदेश से वह बहिर्गत होता है ।।६।।

हे महेशानि! चैतन्य या चित्शक्ति ही योगिगणों की योगसाधना का विषयवस्तु है। वह चित्शक्ति ही सहस्रार में वर्णरूप में, परिणाम में (अर्थात् विलीन अवस्था में) कर्णिका के मध्य में नादबिन्दु-संयुक्त होकर अवस्थान कर रही है। इस रूप में देवी का (कुलकुण्डलिनी का) ध्यान करने पर उत्तम मन्त्रचैतन्य का लाभ होता है ।।७-८।।

हे महेश्वरि! मन्त्राक्षरसमूह सर्वकाल में चित्शक्ति में ग्रथित अवस्था में है। सहस्रार में सहस्रदल कमलदलसमूह में उन समस्त मन्त्राक्षरों का चिन्तन करें। जो सहस्रार में चित्शक्ति-रूप में अवस्थिता हैं, वही मन्त्रचैतन्य-स्वरूपा हैं, वहीं चैतन्य एवं आनन्द दायिनी हैं। चैतन्य ही नादरूपी शक्ति हैं एवं चैतन्य ही वर्णरूपी हैं ।।९-१०।।

मणिपुर में सर्वदा मन्त्र के प्राणरूपी चैतन्य का ध्यान करें। हे वरवर्णिनि! प्रकारान्तर से मन्त्र-चैतन्य (विधान) का श्रवण करें ।।११।।

हे सुरेश्वरि! कामबीज (क्लीं), रमाबीज (श्रीं) एवं शक्तिबीज (ह्रीं) को मातृकावर्ण के पूर्व में युक्त करें। उसके बाद, उक्त बीजत्रय-संयुक्त मातृकावर्ण के

पुटितं मूलमन्त्रञ्च शतमष्टोत्तरं जपेत् ।
कोटि-कोटि-गुणं तच्च लभते नात्र संशयः ।।१३।।
अथवान्यप्रकारेण चैतन्यं शृणु पार्वति ! ।
येन विज्ञानमात्रेण परमं पश्यति ध्रुवम् ।।१४।।
सूर्यमण्डलमध्यस्थं चिन्तयेन्मूलमन्त्रकम् ।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा मूलमन्त्र-स्वरूपकम् ।।१५।।
गुरुं संचिन्तयेत्तत्र शिवरूपं सनातनम् ।
शक्तिञ्च चिन्तयेत्तत्र ब्रह्मरूपां सनातनीम् ।।१६।।
एवं संचिन्तयेत् यस्तु जपेद्वापि सुरेश्वरि ।
नासाध्यं तस्य लोकेऽस्मिन् मुक्तिर्देवि करे स्थिता ।।१७।।

इति कुब्जिकातन्त्रे पार्वती-परमेश्वर-संवादे पञ्चमः पटलः ।।५।।

द्वारा मन्त्र को पुटित कर पहले अष्टोत्तरशत जप करें। (एवं उसके बाद यथाविधिनियम से केवल मन्त्र-जप करते रहें।) इसप्रकार मन्त्रजप करने पर, उसके द्वारा कोटि-कोटि गुण जपफल का लाभ होता है। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ॥१२-१३॥

हे पार्वति! अन्य प्रकार की मन्त्र-चैतन्य-विधि को बता रहा हूँ, श्रवण करें। इस पद्धति के ज्ञानलाभ मात्र से साधक निश्चय ही इष्टदर्शन का लाभ करता है ॥१४॥

सूर्यमण्डल के मध्य में मूलमन्त्र अवस्थित है— इस प्रकार चिन्तन करते हुए अष्टोत्तर शतबार मूलमन्त्र का जप करें। उसके बाद मूलमन्त्रस्वरूप सनातन एवं शिवरूपी गुरु को उस सूर्यमण्डल के मध्य में चिन्तन करें। उन परमशिव के साथ सूर्यमण्डल के मध्य में ब्रह्मरूपा सनातनी आद्याशक्ति का भी ध्यान करें । हे सुरेश्वरि! जो व्यक्ति इस प्रकार ध्यान करता है या मन्त्र का जप करता है, त्रिभुवन में उसके लिए असाध्य कुछ भी नहीं रहता एवं मुक्ति भी उसके करतलगत हो जाती है ॥१५-१७॥

कुब्जिकातन्त्र में पार्वती-परमेश्वर-संवाद में
पञ्चम पटल समाप्त ।।५।।

षष्ठः पटलः

योनिमुद्राकथनम्।

श्रीशिव उवाच—

अथ वक्ष्ये महेशानि शरदिन्दुनिभानने ।
अतीवपरमं गुह्यं न प्रकाश्यं कदाचन ।।१।।
रहस्यं परमं गुह्यं सर्वदेवेषु वन्दितम् ।
चतुर्वेदैरगम्यन्तु संसारार्णव - तारकम् ।।२।।
सर्वाम्नायै र्महादेवि वन्दितं सुरसुन्दरि ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं महेश्वरि ।।३।।

सम्प्रति योनिमुद्रा का कथन कहा जा रहा है —

(मूलाधार से कुलकुण्डलिनी शक्ति को क्रमान्वय से स्वाधिष्ठान, मणिपुर इत्यादि चक्र का एक के बाद एक का भेदन कर, उनको सहस्रार में आनयन-कार्य को ही तन्त्र में 'योनिमुद्रा' नाम से कहा गया है। योनिमुद्रा के सहयोग से मन्त्र का जप करने पर, मन्त्र अतिशीघ्र फल प्रदान करता है। तोड़लतन्त्र के नवम उल्लास में,षट्चक्र के किस चक्र में जप के द्वारा किस-किस फल को प्राप्त किया जा सकता है, वह वर्णित हुआ है। इस पटल में कुलकुण्डलिनी शक्ति को, विभिन्न चक्रों में स्थापित करते समय, उनके विभिन्न प्रकार के ध्यान का विषय वर्णित हुआ है। जो वेदान्त की माया है, वही तन्त्र की आद्याशक्ति है, वही कुलकुण्डलिनी हैं एवं वही दक्षिणाकालिका हैं। 'दक्षिणा' शब्द कालिका का विशेषण-मात्र है। पूर्व अध्याय में उक्त हुआ है कि—मातृकावर्णसमूह चैतन्यरूपी है एवं चैतन्यशक्ति में वे अवस्थान करते हैं। अत: चैतन्यरूपिणी कुलकुण्डलिनी के उत्थापन के साथ अभीष्ट मन्त्र का जप करने पर, वह द्रुत सिद्ध होता है, इस विषय में आश्चर्य क्या है?)

शिव ने कहा—हे महेशानि, हे शरदिन्दु-निभानने! इसके अनन्तर मैं चतुर्वेद के भी अगम्य संसारार्णव-त्राणकारी, सर्वदेववन्दित, अतिशय रहस्यजनक एवं परम गोपनीय तथ्य को बता रहा हूँ। यह परमतत्त्व अतीव गोपनीय है। कदापि किसी के भी निकट इसे प्रकट न करें ॥१-२॥

हे महादेवि, हे सुरसुन्दरि! यह परम गुह्यतत्त्व सर्वाम्नाय-वन्दित है अर्थात् यह गुह्यतत्त्व ही सर्वतन्त्रों में श्रेष्ठ एवं सारतत्त्व है। हे महेश्वरि! सर्वदा सर्वप्रयत्न से इसे गोपन करें ॥३॥

न प्रकाश्यं महादेवि स्वयोनिरिव पार्वति ।
निशीथे नग्नकेशस्तु नग्नशक्ति-समन्वितः ।।४।।
चिन्तयेदिष्टदेवीं च योगिनां योगरूपिणीम् ।
गुह्यदेशे नामपाद-गुल्फं संयोजयेत् सुधीः ।।५।।
शरीरं च स्थिरीकृत्य जिह्वायां तालुकां न्यसेत् ।
नासाग्र-नेत्रयुग्मञ्च कर्त्तव्यं च महेश्वरि ।।६।।
कण्ठासमं तथा कृत्वा चिन्तयेत् वाहिनीं शिवाम् ।
भुजङ्गरूपिणीं देवीं मूलाधार-निवासिनीम् ।।७।।
प्रातराधार-कमले हुतभुङ्मण्डले स्थिताम् ।
चतुर्भुजां महादेवीं परमामृत-बृंहिताम् ।।८।।
श्यामवर्णां महादेवीं महापद्मासनस्थिताम् ।
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणे धारिणीं सदा ।।९।।
खड्गं मुण्डं वामभुजे धारयन्तीं सनातनीम् ।
मुक्तकेशीं स्मितमुखीं श्मशानालय वासिनीम् ।।१०।।
दन्तुरां दक्षिणे व्यापि मुक्तकेशीं दिगम्बरीम् ।
शवानां करसंघातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम् ।।११।।

हे महादेवि! यह गुह्यतत्त्व स्व-योनिवत् गोपनीय है। निशीय में नग्नकेश एवं नग्नशक्ति-समन्वित साधक योगिगणों के योगरूपिणी स्वीय इष्टदेवी का चिन्तन करें। (इस स्थल पर 'इष्टदेवी' शब्द से 'कालिकादेवी' को समझना चाहिए।) हे महेश्वरि! गुह्यदेश में वामपद के गुल्फ का संयोग कर देह को स्थिर-रूप में रक्षा करें। उसके बाद सुधी साधक तालुमूल में जिह्वाग्र का संयोग करके, नासाग्र में उभय चक्षुओं की दृष्टिओं को सन्निबद्ध कर, अवस्थान करें ।।४-६।।

उसके बाद कण्ठदेश को समभाव (ऋजुभाव) में रक्षा कर, मूलाधार-निवासिनी भुजङ्गरूपिणी परम शिवारूपिणी आद्याशक्ति का चिन्तन करें ।।७।।

(मूलाधार में देवी का ध्यान इस प्रकार है) — प्रात:काल आधारकमल पर अग्निमण्डल में स्थिता, परमामृत में वर्द्धिता, महादेवी आद्याशक्ति, श्यामवर्णा, महापद्मासनस्थिता हैं। वह चतुर्भुजा हैं। वह सर्वदा दक्षिण (दाहिने) दिशा के ऊर्ध्वहस्त में अभय (मतान्तर में अभयमुद्रा) एवं निम्नहस्त में वर (मतान्तर में वरमुद्रा) को धारण की हुई हैं ।।८-९।।

वह वामदिशा के ऊर्ध्वहस्त में खड्ग एवं निम्न हस्त में नरमुण्ड को धारण की हुई हैं। वह सनातनी, महामाया, मुक्तकेशी, स्मितहास्यमुखी एवं श्मशानालयवासिनी हैं ।।१०-११।।

लम्बमानां मुण्डमालां धारयन्तीं सदा शिवाम् ।
शवस्य हृदये चैज दक्षपादं निवेशिताम् ।।१२।।
महाकालेन रत्यर्थमत्यन्तलालसां पराम् ।
चन्द्र-सूर्य-बह्निरूप-लोचनत्रय-संयुताम् ।।१३।।
अर्द्धचन्द्रधरां देवीं पीनोन्नत-पयोधराम् ।
शिवाभिर्घोररावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।।१४।।
चतुर्वेदैरपाराञ्च सर्वदेव-विभूषिताम् ।
कामदां कामरूपाञ्च भक्तानां त्राणकारिणीम् ।।१५।।
चतुर्वर्गप्रदां भीमां वन्दे दक्षिणकालिकाम् ।
स्वाधिष्ठाने महादेवि चिन्तयेद् बिन्दुरूपकम् ।।१६।।
तत्र देवीं च संचिन्त्य निर्मलां विश्वरूपिणीम् ।
अभयं वरदञ्चैव हस्तञ्च सुरसुन्दरि ।।१७।।
धनुर्बाणधरां देवीं पाशाङ्कुशधरां पुनः ।
बाणलिङ्ग-समायुक्तां नीलवर्णानल-प्रभाम् ।।१८।।

परम शिवानी, गलदेश में लम्बमान मुण्डमाला को धारण कर, शव के हृदय पर, उनके दक्षिण पद को स्थापित कर, दण्डायमान हैं ॥१२॥

वह महाकाल के साथ रमण करने के लिए अत्यन्त लालसा परायणा बनकर अवस्थिता हैं। वह त्रिनयना हैं। उनका नयनत्रय चन्द्र, सूर्य एवं वह्नि स्वरूप हैं ॥१३॥

देवी अर्द्धचन्द्रधारिणी, पीनोन्नतपयोधरा एवं चतुर्दिशाओं में घोररावा शिवाकुलपरिवेष्टिता हैं ॥१४॥

सर्वदेव-विभूषिता, चतुर्वेद-के द्वारा उपासिता, कामदायिनी, कामरूपा एवं भक्तों के त्राणकारिणी, चतुर्वर्गप्रदा, भीमा, दक्षिणा कालिका की वन्दना कर रहा हूँ। (इस रूप में, मूलाधारचक्र में परमशिवा का ध्यान करें। इसके अनन्तर स्वाधिष्ठानचक्र में कुलकुण्डलिनी को ध्यान को कहा जा रहा है)— हे महादेवि! स्वाधिष्ठान में परमा शिवा का बिन्दुरूप में ध्यान करें ॥१५-१६॥

स्वाधिष्ठान में विश्वरूपिणी निर्मलादेवी का चिन्तन करें। हे सुरसुन्दरि! स्वाधिष्ठान में देवी चतुर्भुजा हैं। उनके एक हस्त में वरमुद्रा है (मतान्तर में, वर है) एवं अपर हस्त में अभयमुद्रा (मतान्तर में, अभय) है। देवी धनुर्बाण, पाश एवं अङ्कुश-धारिणी, बाणलिङ्ग समायुक्ता, नीलवर्णा एवं अनलप्रभामयी हैं ॥१७-१८॥

लोलजिह्वां महादेवीं विष्णुरूपां सनातनीम् ।।
बाणयुग्म-लसत्वर्णां दुष्टासुर-निसूदनीम् ।।१९।।
व्याघ्रचर्म-परिधानां ब्रह्मरन्ध्र-निवासिनीम् ।
अतिप्रसन्नवदनां स्मेरानन-सरोरुहाम् ।।२०।।
मणिपुरे चिन्तयेत्तु तेजःपुञ्ज-सनातनीम् ।
दिगम्बरीं करालास्यां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् ।।२१।।
रक्तवर्णां महादेवीं रक्तवस्त्र विधारिणीम् ।
पद्मासनां महादेवीं सर्वनाग-विभूषिताम् ।।२२।।
शङ्खचक्रगदापद्म-धारिणीं सुरपूजिताम् ।
धर्मार्थदायिनीं देवीं भक्तानां त्राणकारिणीम् ।।२३।।
सर्वसिद्धिप्रदां देवीं जगतां मोहिनीं पुनः ।
महामायां मोहिनीञ्च ज्ञानिनां ज्ञानदां सतीम् ।।२४।।
सुन्दरीं रमणीं वामां चतुर्वर्ग-फलप्रदाम् ।
शान्तां शान्तप्रिया-मुग्रदैत्य-विनाशिनीम् ।।२५।।

सनातनी महादेवी विष्णुरूपा लालजिह्वा, बाणयुग्मधारिणी, अत्युज्ज्वल-वर्णा एवं दुष्टासुर-विनाशिनी हैं ॥१९॥

उनके परिधान में व्याघ्रचर्म है एवं ब्रह्मरन्ध्र में उनका वास है। वह अत्यन्त प्रसन्नवदना, पङ्कजनयना एवं स्मितहास्यमुखी हैं ॥२०॥

(अधुना मणिपुर चक्र में देवी कुलकुण्डलिनी के ध्यान का कथन कहा जा रहा है) —

मणिपुर में सनातनी महादेवी महामाया को तेज:पुञ्जरूपिणी, दिगम्बरी, करालास्या, मुक्तकेशी एवं चतुर्भुजा, रक्तवर्णा, रक्तवस्त्रपरिधाना, पद्मासना, सर्वनागविभूषिता, शङ्खचक्रगदापद्मधारिणी एवं सुरगण-पूजिता, धर्मार्थदायिनी एवं भक्तगणों की त्राणकारिणी-रूप में चिन्तन करें ॥२१-२३॥

मणिपुरचक्र में देवी सर्वसिद्धिप्रदा, जगन्मोहिनी महामाया एवं ज्ञानियों के ज्ञान-सम्मोहिनी, सती, सुन्दरी रमणी-रूप में वह चतुर्वर्गफलप्रदा, शान्ता, शान्तप्रिया एवं उग्रदैत्य विनाशिनी हैं ॥२४-२५॥

मधुमांसप्रियां कृष्णां यशोदानन्द-वर्द्धिनीम् ।
भक्तिगम्यां महादेवीं महाकाल-निवासिनीम् ।।२६।।
सर्वेषां जननीं नित्यां चिन्तयेत् सुरपूजिताम् ।
अनाहते महादेवीं चिन्तयेत् परदेवताम् ।।२७।।
अष्टभुजां महादेवीं रक्तवर्णां त्रिशक्तिकाम् ।
धनुर्बाणञ्च खड्गञ्च चक्रञ्च दधतीं शिवे ।।२८।।
पाशाङ्कुशधरां देवीं ब्रह्मादि-सुरवन्दिताम् ।
अर्द्धचन्द्रधरां देवीं पीनोन्नत-पयोधराम् ।।२९।।
पद्मासनां महामायां महापद्मासनस्थिताम् ।
एवं संचिन्तयेद्देवीं ब्रह्ममार्गेण गामिनीम् ।।३०।।
विशुद्धे च महाचक्रे चिन्तयेत् परमेश्वरीम् ।
दशभुजां महादेवीं पीतवर्णां सनातनीम् ।।३१।।
कपालं खेटकं खड्गं दर्पणं चामरं तथा ।
दक्षिणे विभ्रतीं देवीं कामराजोपरि स्थिताम् ।।३२।।

देवी मधुमांसप्रिया एवं यशोदानन्दवर्द्धिनी कृष्णास्वरूपिणी हैं। वह केवल भक्तिगम्या हैं। वह महाकालनिवासिनी महादेवी हैं एवं सभी के लिए जननीस्वरूपा, सुरपूजिता एवं नित्या हैं। इस प्रकार, मणिपुर में देवी का ध्यान करें। उसके बाद अनाहत चक्र में परदेवतारूपिणी नित्यास्वरूपा महादेवी का चिन्तन करें ॥२६-२७॥

(अनाहत चक्र में कुलकुण्डलिनी के ध्यान का कथन कहा जा रहा है)—

हे शिवे! अनाहतचक्र में महादेवी अष्टभुजा, रक्तवर्णा एवं त्रिशक्तिरूपिणी हैं। वह धनुर्बाण, खड्ग, चक्र, पाश एवं अङ्कुश-धारिणी, ब्रह्मादि देवगण वन्दिता, अर्द्धचन्द्रधारिणी, पीनोन्नतपयोधरा, पद्मासना एवं महापद्मासन पर अवस्थिता हैं। ब्रह्ममार्गगामिनी, कुलकुण्डलिनी देवी का ध्यान, इसी प्रकार से अनाहत चक्र में करें ॥२८-३०॥

(इसके अनन्तर विशुद्ध-चक्र में देवी के ध्यान को बताया जा रहा है)—

उसके बाद विशुद्ध-चक्र में महादेवी सनातनी परमेश्वरी को पीतवर्णा एवं दशभुजा-रूप में ध्यान करें। वह अपने दक्षिण के पञ्चहस्तों में नरकपाल, खेटक, खड्ग, दर्पण एवं चँवर को धारण करके कामराज के ऊपर अवस्थान कर रही हैं ॥३१-३२॥

वामे खड्गं महापद्मं कर्त्तृकां पाशमङ्कुशम् ।
धारयन्तीं महादेवीं महासिंहासन स्थिताम् ।।३३।।
दिव्यवस्त्र परिधानां जटामुकुट मण्डिताम् ।
ब्रह्मविष्णुमहादेव-वन्दितां सुरसुन्दरीम् ।।३४।।
आज्ञाचक्रे महेशानि द्विभुजां चिन्तयेत् सुधीः ।
सिंहस्कन्ध समारूढ़ां द्विभुजां सुमनोहराम् ।।३५।।
वराभय-धरां चैव नानामणि-विभूषिताम् ।
जटामुकुट संयुक्ता-मर्द्धचन्द्र विभूषिताम् ।।३६।।
रत्नकाञ्ची-समायुक्तां रत्नमाला-सुशोभिताम् ।
रक्तवस्त्र परिधानां कमलापति-सेविताम् ।।३७।।
संसार-दुःख-शमनीं संसारार्णव-तारिणीम् ।
सुषुम्नावर्त्मना देवि चिन्तयेत् ध्यानरूपिणीम् ।।३८।।
षट्चक्रभेद योगेन चिन्तयेत् परमेश्वरीम् ।
सहस्रारे दले चैव चिन्तयेद् जगदीश्वरीम् ।।३९।।

(अपने) वाम दिशा के पञ्च हस्तों में यथाक्रम से खड्ग, महापद्म, कर्त्तृका, पाश एवं अङ्कुश को धारण करके, महादेवी सनातनी महासिंहासन पर अवस्थान कर रही हैं ।।३३।।

उनके परिधान में दिव्यवस्त्र हैं, उनका मस्तक जटामुकुट-मण्डित है। वह ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं सुरसुन्दरीगणों के द्वारा पूजिता-रूप में विराजमाना हैं ।।३४।।

(इसके अनन्तर आज्ञाचक्र में कुलकुण्डलिनी के ध्यान का कथन कहा जा रहा है)—

हे महेशानि! आज्ञाचक्र में देवी को द्विभुजा-रूप में चिन्तन करें। देवी (यहां पर) द्विभुजा, अति मनोहर मूर्त्ति, सिंहस्कन्धसमारूढ़ा, वर एवं अभयमुद्रा (मतान्तर में वर एवं अभय) — धारिणी, नाना मणि-विभूषिता, जटामुकुट-संयुक्ता, अर्द्धचन्द्र-विभूषिता, रत्नकाञ्ची-समायुक्ता, रत्नमाला-सुशोभिता, रक्तवस्त्र-परिधाना, कमलापति-सेविता, संसारदुःख-शमनी (निवारण, प्रशमन या दमनकारिणी), संसारार्णवतारिणी एवं सुषुम्ना के मध्य में विराजमाना हैं। इस रूप में, आज्ञाचक्र में देवी का ध्यान करें ।।३५-३८।।

इस प्रकार षट्चक्रभेदक्रम से परमेश्वरी का चिन्तन करें। उसके बाद सहस्रार में, सहस्रदलकमल के मध्य में जगदीश्वरी का ध्यान करें ।।३९।।

कामं भ्रमन्तं तन्मध्ये पञ्चबाण विभूषितम् ।
गङ्गादिसर्वतीर्थञ्च अमृतं प्रतिपत्रके ।।४०।।
बसन्तादि महादेवि सर्वर्त्तुपरि शोभितम् ।
श्वेतवर्णं महादेवि सहस्रदलमुत्तमम् ।।४१।।
सर्वदेव समायुक्तं सर्वशक्ति समन्वितम् ।
सर्वमन्त्रमयं देवि चतुर्वेद विभूषिताम् ।।४२।।
एकादशमहादेवं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।
कर्णिका स्वर्णवर्णाञ्च तत्र देवीं विचिन्तयेत् ।।४३।।
चिन्मयं परमं शिवं ध्यानगम्यं सनातनम् ।
सारात् सारतरं परादपि परं वचोऽगोचरम् ।।४४।।
नित्यानन्द-निरन्तरं निरूपमं वेदैरपारं परम् ।
शिवशक्तिमयं देवि निर्गुणं सगुणात्मकम् ।।४५।।
प्रदीपकलिकाकारं योगिनां ध्यानरूपिणम् ।
चैतन्यरूपिणं देवं परमामृतबृंहितम् ।।४६।।

उस सहस्रदल-पद्म के मध्य में काम सर्वदा पञ्चबाण-विभूषित होकर विचरण कर रहे हैं। उस सहस्रदल-पद्म के प्रति पत्र में गङ्गादि सर्वतीर्थ एवं अमृत विद्यमान है ।।४०।।

हे महादेवि! उस सहस्रदलपद्म के पत्रसमूह अत्यन्त श्वेतवर्ण हैं एवं उसके प्रत्येक पत्र में वसन्तादि ऋतुसमूह विद्यमान हैं ।।४१।।

हे देवि! उस सहस्रदलपद्म में सर्वदेव-समायुक्त, सर्वशक्तिसमन्वित, सर्वमन्त्रमय एवं चतुर्वेद-विभूषित ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवात्मक एकादश महादेव विद्यमान हैं, उनका तथा उसकी कर्णिका में स्वर्णवर्णा देवी का चिन्तन करें ।।४२-४३।।

चिन्मय परमशिव, सनातन एवं ध्यानगम्य हैं। वह सार से भी सारतर हैं, परम से भी परमतर हैं एवं वाक्य के अगोचर अर्थात् वाक्यातीत हैं ।।४४।।

वह नित्यानन्द, निरन्तर एवं निरूपम हैं, वह वेद के अनधिगम्य परम सत्ता हैं। वह शिवशक्तिमय एवं निर्गुण होने पर भी सगुणात्मक हैं ।।४५।।

वह योगिगणों के ध्यानगम्य परमशिव प्रदीपकलिकाकार, चैतन्य एवं परमामृत-स्वरूप हैं। उस चित्रूपी परमामृत के मध्य में त्रिगुणात्मक देवी सनातनी का ध्यान निम्नोक्तरूप में करें।

देवी घोरदंष्ट्रा, करालवदना, लोलजिह्वा, चतुर्भुजा हैं। देवी के वामदिशा के

तन्मध्ये चिन्तयेद्देवीं त्रिगुणाञ्च सनातनीम् ।
घोरदंष्ट्रां करालास्यां लोलजिह्वां चतुर्भुजाम् ।।४७।।
सद्यश्छिन्न-शिरः-खड्ग-वामाधोर्ध्व-कराम्बुजाम्।
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणाधोर्ध्व-पाणिकाम् ।।४८।।
नीलमेघप्रभां तन्वीं घोररूपां दिगम्बरीम् ।
कण्ठावसक्तमुण्डानीं गलद्रुधिर चर्चिताम् ।।४९।।
कर्णावतंशतानीत शवयुग्म भयानकाम् ।
बालार्कमण्डलाकार-लोचनत्रय-भषिताम् ।।५०।।
सृक्वद्वयगलद्रक्त-धाराविस्फुरिताननाम् ।
मुक्तकेशीं स्मितमुखीं श्मशानालय वासिनीम् ।।५१।।
शवानां करसंघातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम् ।
शवरूप-महादेव-हृदयोपरि-संस्थिताम् ।।५२।।
महाकालेन रत्यर्थमुपविष्टां स्मरातुराम् ।
शिवाभिर्घोररावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।।५३।।
अति प्रसन्न वदनां स्मेरानन सरोरुहाम् ।
अनाहतन्तु तत्रैव तड़ित्कोटि समप्रभाम् ।।५४।।

निम्न हस्त में सद्यस्छिन्न नरमुण्ड एवं वामोद्ध्र्व-हस्त में खड्ग है। वह दक्षिण दिशा के ऊर्ध्वहस्त में वरमुद्रा एवं निम्न हस्त में अभय मुद्रा को धारण कर अवस्थान कर रही हैं ।।४६-४८।।

देवी नीलमेघप्रभा, तन्वी, घोररूपा, दिगम्बरी, रुधिरस्रावी नरमुण्ड उनके कण्ठदेश में विलम्बित हैं ।।४९।।

देवी उत्फुल्लवदना हैं। उनके ओष्ठद्वय के दोनों प्रान्तदेशों से रक्तधारा विगलित हो रही है। वह मुक्तकेशी, स्मितमुखी, श्मशानालयवासिनी, शवहस्त-कृतकाञ्ची परिधाना (=मृतों के हस्तों के द्वारा रचित कटिहार को जिन्होंने धारण किया है) एवं शवरूप महादेव के हृदय के ऊपर अवस्थिता हैं ।।५१-५२।।

महाकाल के साथ रति की लालसा में वह वहाँ पर कामातुर होकर अनस्थन कर रही हैं। उनकी चारों दिशाओं में घोर-निनादकारी शिवासमूह विद्यमान हैं ।।५३।।

उनका वदनमण्डल अतिशय प्रसन्न तथा कमललोचनद्वय लज्जापूर्ण हैं। अनाहत-चक्र में देवी कोटिविद्युत्प्रभामयी हैं एवं अनाहत-चक्र के ऊर्ध्वदेश में

तस्योर्ध्वे तु शिखा तन्वी चिद्रूपा परमाकला।
तया सहितमात्मानं एकीभूतं विचिन्तयेत् ।।५५।।
गच्छन्तं ब्रह्ममार्गेषु लिङ्गभेद क्रमेण तु ।
सूर्यकोटि प्रभाकारं चन्द्रकोटि सुशीतलम् ।।५६।।
अमृतं तद्धि सङ्गस्थं परमानन्द लक्षणम् ।
गत्वा कुलाकुलं दिव्यं पुनरेव विशेत् कुलम् ।।५७।
एवमभ्यस्यमानस्य अहन्यहनि निश्चयात् ।
जरामरणदुःखाद्यैर्मुच्यते भवबन्धनात् ।।५८।।
चतुर्विधा तु सृतय अस्यां योनौ प्रवर्त्तते ।
योनिमुद्रेयमाख्याता सर्वसिद्धिप्रदायिका ।।५९।।

कुलकुण्डलिनी परमकलारूपिणी, चित्रूपा, तन्वी शिखा मात्र हैं। उन शक्तिस्वरूपा परमकला के साथ आत्मा के एकत्व का चिन्तन करें ।।५४-५५।।

चित्रूपिणी परमकला मूलाधार के षट्चक्रस्थ लिङ्गसमूह को भेद के क्रम से, सुषुम्नावर्त्म से (मार्ग से) सहस्रार में गमन करती हैं। वह कोटि सूर्यों के समान प्रभामयी एवं कोटि चन्द्रों के समान स्निग्ध द्युति-सम्पन्ना हैं ।।५६।।

वह सहस्रार-स्थित अमृत के साथ युक्त होने पर, परमानन्द का लक्षण प्रकाशित होने लगता है। इस प्रकार देवी कुलकुण्डलिनी कुल (मूलाधार) से दिव्य अकूल (सहस्रार) में गमन करती हैं। उसके बाद, पुनः कुल में प्रवेश करती हैं ।।५७।।

जो व्यक्ति इस प्रकार कुलकुण्डलिनी को प्रतिदिन मूलाधार से सहस्रार में उत्थापन एवं पुनः सहस्रार से मूलाधार में आनयन करता है, वह व्यक्ति निश्चय ही जरा, मृत्यु प्रभृति दुःखों से मुक्ति लाभ कर, अन्त में भवबन्धन से भी मुक्त हो जाता है ।।५८।।

चतुर्विध सृष्टि इनकी योनि से प्रवर्त्तित होती है। इस योनिमुद्रा को सर्वसिद्धि-प्रदायक कहा जाता है। मूलाधार-कमल में सुमनोहर त्रिकोण है, उसके मध्य में

विशेष—'कुल' किसे कहते हैं—इसे 'महानिर्वाणतन्त्र' के सप्तम उल्लास में इस प्रकार कहा गया है—

"जीवप्रकृति तत्त्वञ्च दिक्कालाकाशमेव च ।
क्षित्यप्तेजोवायवश्च कुलमित्यभिधीयते ।।९७।।"

जीव, प्रकृति, तत्त्व (पञ्चविंशति तत्त्व) दिक्, काल, आकाश, पृथिवी, जल, तेज एवं वायुको 'कुल' नाम से अभिहित किया जाता है। **'अकुल' अर्थात् परमशिव ।**

मूलाधारसरोजे तु त्रिकोणं सुमनोहरम् ।
कामं भ्रमन्तं तन्मध्ये बालार्ककोटि सन्निभम् ।।६०।।
तदूर्ध्वे कुण्डलीशक्तिं तडित्कोटि समप्रभाम् ।
प्रसुप्तभुजगाकारां सार्द्धत्रिवलयान्विताम् ।।६१।।
मूलाधारे त्रिकोणे तां भावयेत् सुरसुन्दरीम् ।।६२।।
आरोप्यारोप्य शक्तिं कमलज-निलया-मात्मसाक्षात्क्रमेषु ।
स्थानेष्वाज्ञावसाने प्रणिहितहृदय-श्चिन्तयेत्तत् क्रमेण ।।६३।।
नित्यानन्दावसानं खड्गमुद्गर-महा-पद्ममध्यान्तरस्थाम् ।
ध्यायेच्चैतन्यरूपा-मभिनवजलदां मोक्षमार्गैकमार्गाम् ।।६४।।
साक्षाल्लाक्षा-रसाभां गगनगता-महा-पद्मसंस्थाच्च हंसात् ।
पीत्वा दिव्यामृतौघं पुनरपिच विशेन्मध्यदेशं कुलस्य ।।६५।।
चक्रे चक्रे क्रमेणामृतसरसि सरं-स्तर्पयेद्देवतास्ता ।
हाकिन्याद्याः समस्ताः सकलकुल-गतां तर्पयेत् कुण्डलीं ताम् ।।६६।।
इन्दौ तदूर्ध्वे बोधिन्यां नादनादान्त एव च ।
शक्तौ पुनर्व्यापिकायां सुपुष्पमणि गोचरे ।।६७।।

कोटि बालसूर्य-तुल्य काम भ्रमण कर रहे हैं। उनके ऊर्ध्व में कोटि विद्युत् की प्रभा के समान, निद्रित, सर्पाकार, सार्द्ध त्रिवलययुक्त, कुण्डलिनी शक्ति अवस्थान कर रही हैं। मूलाधार के त्रिकोण में उन सुरसुन्दरी की भावना करनी चाहिए ।।५९-६२।।

आत्मा के साथ साक्षत्-क्रम से ब्रह्मा के आश्रय-रूप इन शक्ति का बारम्बार आरोपण कर, उनके आदेश से हृदय में स्थापित कर, क्रम से उनका चिन्तन करना चाहिए ।।६३।।

जो नित्य आनन्दमयी, खड्ग, मुद्गर, महापद्म में अवस्थानकारिणी, चैतन्यरूपा, अभिनव मेघतुल्या, मोक्षमार्ग के एकमात्र पथस्वरूपा गगनगत महापद्मस्थ हंस से दिव्यामृत का पान कर जो साक्षात् लाक्षारस-तुल्या बन गयी हैं, उनका ध्यान करें। वह (देवी कुलकुण्डलिनी) पुन: कुल में प्रवेश कर जाती हैं ।।६४-६५।।

अमृत सरोवर-रूप प्रतिचक्र में हाकिनी प्रभृति देवीगणों का तर्पण करें एवं सकल कुल-गता उन कुलकुण्डलिनी का तर्पण करें ।।६६।।

इन्दु एवं उसके ऊर्ध्व में नाद-नादान्त की प्रकाशिका शक्ति में एवं सुपुष्प तथा मणियुक्त व्यापिका-रूप चित्शक्ति में मन्त्र के सभी अक्षर निहित हैं। परम अमृत-युक्त परमव्योम में उस चित्-शक्ति का चिन्तन करें एवं पूजा होमादि के

मन्त्राक्षराणि चित्शक्तौ प्रोतानि परिभावयेत् ।
तामेव परमव्योम्नि परमामृतबृंहिते ।।६८।।
दर्शयेदात्मसम्भावं पूजा होमादिकं विना ।
एवं संचिन्तयेन्मन्त्री स योगी नात्र संशयः ।।६९।।
सर्वपापात् विनिर्मुक्त इष्टदेवीं प्रपश्यति ।
षण्मासे सर्वसिद्धिः स्याद्दुर्गतिश्च प्रणश्यति ।।७०।।
अष्टादश महासिद्धिर्वत्सरान्ते भविष्यति ।
एवं संचिन्तयेद्देवीं परमात्मस्वरूपिणीम् ।।७१।।
स एव शङ्करः साक्षात् स एव विष्णुरण्ययः ।
स एव परमं ब्रह्म स एव देवतोत्तमः ।।७२।।
इति ते कथिता देवि योनिमुद्रा महेश्वरि ।
वत्सरेण लभेत् सिद्धिं पूर्णकामं लभेत् पुनः ।।७३।।

इति कुब्जिकातन्त्रे पार्वती-परमेश्वर-संवादे षष्ठः पटलः ।।६।।

बिना ही आत्मसाक्षात्कार करें। इस प्रकार, जो मननशील साधक चिन्तन कर सकता है, वह योगी है—इस विषय में कोई सन्देह नहीं है ।।६७-६९।।

इस प्रकार कार्य करने पर, साधक सर्व पापों से मुक्तिलाभ करके स्वीय इष्टदेवी का साक्षात् लाभ करता है। साधक इस प्रकार कार्यों से छः महीने में सर्व प्रकार की सिद्धियों का लाभ करता है एवं उसकी समस्त दुर्गतियाँ विनष्ट हो जाती हैं ।।७०।।

एक वर्ष तक इसीप्रकार लगातार साधना करने पर वर्ष के अन्त में अष्टादश महासिद्धयों का लाभ होता है। उपर्युक्त नियम से परमात्मारूपिणी देवी का चिन्तन करें ।।७१।।

जो व्यक्ति इसप्रकार महाशक्ति का ध्यान करता है, वह व्यक्ति साक्षात् शङ्कर, साक्षात् अव्ययरूपी विष्णु, साक्षात् परमब्रह्म है एवं वह व्यक्ति देवगणों में श्रेष्ठ देवता है ।।७२।।

हे देवि! हे महेश्वरि! मैंने आपको इसप्रकार योनिमुद्रा-साधन को बताया हैं। एक वर्षकाल के मध्य ही साधक योनिमुद्रा के द्वारा पूर्णमनस्काम बनकर सिद्धिलाभ करता है ।।७३।।

कुब्जिकातन्त्र में पार्वती-परमेश्वर-संवाद में षष्ठ पटल समाप्त ।।६।।

सप्तमः पटलः

(१) दिव्य-वीर-पशु-भावकथनम् । (२) पीठस्थानकथनम् । (३) पुष्पविधान-कथनम् ।

पार्वत्युवाच—

देवदेव महादेव परमेश पुरातन ।
भावञ्च श्रोतुमिच्छामि देवताया विशेषतः ।।१।।
केन भावेन देवेश देवता च प्रसीदति ।
तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां प्राणवल्लभ ।।२।।

श्रीशिव उवाच—

भद्रं भद्रं प्रवक्ष्यामि भद्रं भद्रं शुचिस्मिते ।
तव स्नेहात् प्रवक्ष्यामि सविधानेन सुन्दरि ।।३।।
यद् यज् ज्ञात्वा विरिञ्चिश्च सृष्टिकर्त्ता न संशयः ।
पालनं कुरुते विष्णुः रुद्रश्च नाशकः पुनः ।।४।।

(इस पटल में प्रथम से सैंतालीसवें श्लोक तक दिव्यभाव, वीरभाव, एवं पशुभाव से साधना का विवरण है। ४८ से ५८ श्लोक पर्यन्त पीठस्थानों के नाम हैं एवं ५९ से ६८ श्लोक पर्यन्त कौन-कौन पुष्प, शक्ति-साधना में व्यवहृत होगा, इसका विवरण दिया गया है ।)

पार्वती ने कहा—हे चिरन्तन, देवदेव, महादेव! हे परमेश्वर! देवदेवियों के साधन के विषय में, मैं, विभिन्न भावों के सम्बन्ध में, विशदरूप से श्रवण करने की इच्छा करती हूँ ।।१।।

हे देवेश! हे प्राणवल्लभ! किस भाव से साधना करने पर देवता प्रसन्न होते हैं, उन सभी विषयों को मैं, श्रवण करने की इच्छा करती हूँ। आप उन सभी को मेरे निकट विवृत करें ।।२।।

शिव ने कहा—हे भद्रे, हे शुचिस्मिते! हे सुन्दरि! आपके प्रति स्नेहवश, विधान के साथ, विभिन्न भावों के विषय में मैं क्रमशः बता रहा हूँ, श्रवण करें ।।३।।

इस भाव-विधि का ज्ञान रहने के कारण ही ब्रह्मा सृष्टिकर्तृत्व, विष्णु पालनकर्तृत्व एवं रुद्र ने संहारकर्तृत्व का लाभ किया है। इस विषय में बिन्दुमात्र भी सन्देह नहीं है ।।४।।

जगद्वश्यञ्च कुरुते ज्ञात्वा तु साधकोत्तमः।
संक्षोभं कुरुते विश्वं सभाक्षोभं नयेद् ध्रुवम्।।५।।
स एव परमो योगी स एव साधकोत्तमः।
भावं च त्रिविधं देवि दिव्य-वीर-पशुक्रमात्।।६।।
विश्वञ्च देवतारूपं भावयेत् सुरसुन्दरि।
स्त्रीमयञ्च जगत्सर्वं पुरुषं शिवरूपिणम्।।७।।
हृदये पार्वतीं देवीं शिरसा शिवरूपिणम्।
अभेदे चिन्तयेद् यस्तु स एव देवतात्मकः।।८।।
नित्यस्नानं नित्यदानं त्रिसन्ध्यञ्च जपार्चनम्।
निर्मलं वसनं देवि परिधानं समाचरेत्।।९।।
वेदे शास्त्रे दृढ़ज्ञानं गुरौ देवे तथैव च।
मन्त्रे चैव दृढ़ज्ञानं पितृदेवार्चनं तथा।।१०।।

जो साधकश्रेष्ठ साधन-व्यापार में इस भाव-विधि को जानता है, वह त्रिजगत् को वशीभूत करने में सक्षम होता है एवं समग्र विश्व को भी वह क्षोभित (आलोड़ित एवं आन्दोलित) कर सकता है। सभास्थल को वह निश्चय ही संक्षोभित करते हैं ।।५।।

जो साधन-कार्य में भाव-विधि को अवगत होते हैं, वह परमयोगी हैं, वही साधकश्रेष्ठ हैं। हे देवि! भाव त्रिविध है। यथा—दिव्यभाव, वीरभाव एवं पशुभाव ।।६।।

(प्रथम, दिव्यभाव के लक्षण को बताया जा रहा है) —

हे सुरसुन्दरि! जो साधक समग्र विश्व को ही देवता के प्रकाशमान रूप मानकर चिन्तन करते हैं अर्थात् जो सृष्टि एवं स्रष्टा में अभेदात्मक ज्ञान रखते हैं जो जगत् के समस्त स्त्रीजाति को शक्तिस्वरूपा एवं समस्त पुरुष का शिवस्वरूप मानकर भावना करते हैं, जो हृदय में पार्वती देवी को अर्थात् महामाया आद्याशक्ति को एवं सहस्रार में परमशिव को अभेदात्मक (प्रदीप्त दृष्टिबुद्धि से)-रूप में चिन्तन करते हैं एवं अपने को भी अभिन्न देवतात्मक मानते हैं, जो दैनन्दिन कार्य के हिसाब से प्रतिदिन स्नान, दान एवं प्रतिदिन पूजा तथा जप करते हैं, जो सर्वदा निर्मल वसन परिधान करते हैं, वेद में जिनका गम्भीर ज्ञान एवं सुदृढ़ श्रद्धा विद्यमान है. जो स्वीय गुरु के प्रति भी अनुरूप श्रद्धाशील हैं, मन्त्र में जिनका दृढ़विश्वास विद्यमान है, जो पितृगणों एवं देवगणों की अर्चना करते हैं, जो विश्वदेवता को प्रतिदिन बलि-प्रदान करते हैं

वलि वैश्वदेवं तथा श्राद्धं नित्यं कार्यं शुचिस्मिते ।
शत्रौ मित्रे समं देवि चिन्तयेत्तु महेश्वरि ।।११।।
अन्नञ्चैव महेशानि सर्वेषां परिवर्जयेत् ।
गुरोरन्नं महेशानि भोक्तव्यं सर्वसिद्धये ।।१२।।
कदर्यञ्च महादेवि निष्ठुरं परिवर्जयेत् ।
देवता-निन्दकं दृष्ट्वा नालापञ्च समाचरेत् ।।१३।।
सत्यञ्च कथयेद्देवि न मिथ्या च कदाचन ।
केवलं दिव्यभावेन पूजयेत् सुरसुन्दरि ।।१४।।
गुरोराराधनं देवि प्रत्यहं चिन्तयेत् सुधीः ।
सर्वत्र दैवतं वन्द्यं परमेष्ठी च रूपकम् ।।१५।।
एकग्रामस्थितो नित्यं त्रिसन्ध्यं प्रणमेद् गुरुम् ।
गुरुतुल्यं गुरुपत्नीं नमस्कुर्याद् वरानने ।।१६।।
स्त्रीणां पादतलं दृष्ट्वा गुरुवद् भावयेत् सदा ।
श्रीखण्ड-पङ्क-रुषितं भुषितं सुमनोहरम् ।।१७।।

एवं प्रतिदिन श्राद्धकार्य सम्पन्न करते हैं, जो सतत शत्रु एवं मित्र इन उभय के प्रति समदर्शी हैं, हे शुचिस्मिते! हे महेश्वरि! हे देवि! वही दिव्यभावापन्न साधक हैं ।।७-११।।

हे महेशानि! गुरु से भिन्न अन्य किसी के भी अन्न-भोजन का वर्जन करें। केवल गुरु के अन्न का भोजन सर्वसिद्धि के लिए करें ।।१२।।

हे महादेवि! कुत्सित एवं निष्ठुर कार्य का परिहार करें। देवनिन्दाकारियों को देखने पर पंचबार निष्ठीवन का परित्याग करें ।।१३।।

हे देवि! सर्वदा सत्य बोलें। कदापि मिथ्या न बोलें। केवल दिव्यभाव के अवलम्बन से आद्याशक्ति की पूजा करें ।।१४।।

हे देवि! शुद्धबुद्धि साध प्रतिदिन गुरु की आराधना करें। इष्टदेवता की वन्दना सर्वदा परमेष्ठी-रूप में करें ।।१५।।

एक ही ग्राम में (गुरु एवं शिष्य दोनों) अवस्थान करने पर, शिष्य गुरु को त्रिसन्ध्या में प्रणाम करें। गुरुपत्नी को भी गुरु के समान नमस्कार करें ।।१६।।

स्त्रीजनों के पदतल का दर्शन करने पर सर्वदा उनकी गुरुवत् कल्पना करें। श्रीखण्ड (चन्दन)-पङ्क के परिलेपन के द्वारा, गन्धर्ववत् सुमनोहर देहश्री का

शरीरं कारयेद्देवि गन्धर्वदेव मुक्तमम्।
आलापं स्वस्त्रिया सार्द्धं परयोषां विवर्जयेत्।।१८।।
नित्यं सत्त्वगुणेनैव पूजयेत् सुरसुन्दरीम्।
वीरभावं महेशानि! शृणुष्व हरवल्लभे।।१९।।
देवोऽहञ्च महादेवि नान्योऽस्ति मम देहके।
रक्तवस्त्र परिधानं रक्तमाल्यानुलेपनम्।।२०।।
त्रिपुण्ड्रं भस्मना वापि रक्तचन्दनकेन वा।
रुद्राक्षभूषितो देवि सर्वाङ्गे च महेश्वरि।।२१।।
केवलं भैरवो भूत्वा यजेद्देवीं सनातनीम्।
प्रत्यहञ्च बलिं दद्यात् देवता भाव सिद्धये।।२२।।
समयञ्च गृहीत्वा तु पूजादौ च महेश्वरि!।
निशीथे पूजनं चैव कर्त्तव्यञ्च महेश्वरि।।२३।।
कुलवृक्षं तथा दूर्वां कर्त्तव्यञ्च महेश्वरि।
प्रणामं वन्दनञ्चैव प्रत्यहञ्च महेश्वरि।।२४।।

सम्पादन करें। केवल अपनी पत्नी के साथ वाक्यालाप करें। परस्त्री के सङ्ग आलाप का सर्वदा वर्जन करें ।।१७-१८।।

प्रतिदिन केवल सत्त्वगुण के अवलम्बन से महामाया आद्याशक्ति की अर्चना करें। (ये समस्त भाव ही 'दिव्य भाव' है)। हे महेशानि! हे हरवल्लभे! अधुना वीर भाव के लक्षण को बता रहा हूँ, श्रवण करें ।।१९।।

हे महादेवि! वीरभावाश्रित साधक अपने को ही इष्टदेव या देवी-स्वरूप कल्पना करें एवं उसके इष्टदेवस्वरूप देह में अन्य देवता का अस्तित्व नहीं है—ऐसा चिन्तन करें। वीरभाव का साधक सर्वदा रक्तवस्त्र एवं रक्तमाल्य को परिधान करें एवं रक्तवर्ण अनुलेपन को धारण करें ।।२०।।

भस्म या रक्तचन्दन के द्वारा त्रिपुण्ड्रक का अङ्कन एवं धारण करें। हे महेश्वरि! वीरभाव के साधक सर्वाङ्ग में रुद्राक्ष धारण करें ।।२१।।

वीरभाव में साधक स्वयं भैरव बनकर, देवी सनातनी की अर्चना करें। इष्टदेवता के भावसिद्धि के निमित्त प्रतिदिन बलिप्रदान करें ।।२२।।

हे महेश्वरि! पूजादि के समय सर्वदा यथाकालनिर्दिष्ट कार्यादि की तत्तत् समय में सम्पादित करें। हे महेश्वरि! वीरभान में केवल रात्रिकाल में पूजा करें। प्रतिदिन कुलवृक्ष एवं दूर्वा की वन्दना-कीर्त्तन कर प्रणाम करें ।।२३-२४।।

रात्रौ च पूजयेद्देवीं न दिवापि कदाचन ।
रात्रौ ताम्बूलपूर्णास्यो जपेन्मन्त्रं महेश्वरि ।।२५।।
सर्वञ्चैव महेशानि परदेव्यै समर्पयेत् ।
पशुभावरता ये च केवलं पशुरूपिणः ।।२६।।
रात्रौ यन्त्रञ्च मालाञ्च न स्पृशेत्तु कदाचन ।
संशयो बलिदाने च तन्त्रे च संशयः सदा ।।२७।।
मन्त्रे चाक्षरबुद्धिञ्च अविश्वासो गुरौ सदा ।
प्रतिमायां शिलाबुद्धि र्भेदको दैवते सदा ।।२८।।
निरामिषेण देवेशि देवतायाः प्रपूजनम् ।
अज्ञानेन सदा स्नानं प्रत्यहं देहताड़नम् ।।२९।।
सर्वेषाञ्चैव निन्दाञ्च यस्तु कुर्यान्महेश्वरि ।
स एव पशुभावेन चाधमः परिकीर्त्तितः ।।३०।।

हे महेश्वरि! सनातनी (नित्य निरञ्जन) महादेवी की पूजा केवल रात्रिकाल में करें। दिवाभाग में कदापि उनकी पूजा न करें। रात्रिकाल में ताम्बूल का चर्वण करते हुए इष्टमन्त्र का जप करते रहें ।।२५।।

उसके बाद जप-फल को सम्पूर्ण ही परमदेवता को अर्पण कर दें। (वीर भाव से साधन का लक्षण कहा गया। अधुना पुशभाव के लक्षण का कथन किया जा रहा है)— पशुभाव का साधक स्वयं पशुस्वरूप है ।।२६।।

पशुभाव का साधक रात्रिकाल में कदापि यन्त्र एवं माला को स्पर्श न करें अर्थात् कदापि यन्त्र में देवी की पूजा न करें या माला के द्वारा मन्त्र-जप न करें। पशुसाधक तन्त्रोल्लिखित विषयों की सत्यता एवं बलिदान के सम्बन्ध में सर्वदा संशय-परायण होता है।

वह व्यक्ति मन्त्र को अक्षर-रूपी मानता है एवं गुरु के सम्बन्ध में भी वह व्यक्ति सम्पूर्ण अविश्वासी अर्थात् आस्थाहीन होता है। प्रतिमा को वह व्यक्ति शिलारूपी अर्थात् जड़ मानता है एवं देवतागणों को भी परस्पर विभिन्न एवं पृथक् मानता है ।।२७-२८।।

हे देवेशि! पशुभाव का साधक निरामिष खाद्य प्रदान करते हुए देवता की पूजा करता है। अज्ञानता-प्रयुक्त होकर वह व्यक्ति प्रतिदिन स्नान एवं देह-मार्जन करता है ।।२९।।

हे महेश्वरि! जो व्यक्ति अन्य सभी के निन्दापरायण है, वह व्यक्ति पशु-साधकों में अधम कहा जाता है ।।३०।।

उत्तमो दिव्यभावश्च वीरभावश्च मध्यमः।
अधमः पशुभावश्च देवि सत्यं न संशयः।।३१।।
पशुभावे स्थिता मन्त्राः केवला वर्णरूपिणः।
कर्त्तव्यञ्च महेशानि देवताभाव-बोधनम्।।३२।।
दृष्ट्वा कुलस्त्रियं देवि कुलवृक्षं विशेषतः।
कुलगृहं तथा देवि नमस्कुर्याद् वरानने।।३३।।
कुलस्त्रियं महादेवि तन्त्रमन्त्र विशारदाम्।
दूतीयाग-रताञ्चैव वेश्यां वा पुंश्चलीं तथा।।३४।।
वृद्धां वा युवतीं वापि नमस्कुर्याद् वरानने।
कुमारी पूजने चैव सदा भक्तियुतो भवेत्।।३५।।
पञ्चवर्षं समारभ्य यावत् द्वादशवार्षिकी।
कुमारी सा भवेद्देवि निजरूप-प्रकाशिनी।।३६।।
षष्ठवर्षं समारभ्य यावच्च नववार्षिकी।
तावच्चैव महेशानि साधकाभीष्टसिद्धिदा।।३७।।

(मायाबद्ध अयुक्त मानव— कुलार्णव तन्त्रानुयायी-पशुभाव का साधक सुरा के दर्शन-मात्र से तीनबार सूर्य का दर्शन करते हैं एवं सुरा का घ्राण (गन्ध) प्राप्त होने पर, तीन बार प्राणायाम करते हैं। वह मादक को स्पर्श नहीं करते, कदापि आमिषादि आहार नहीं ग्रहण करते हैं।)

दिव्यभाव को सर्वोत्तम, वीरभाव को मध्यम एवं पशुभाव को अधम भाव कहा जाता है। हे देवि! इस विषय में कुछ भी सन्देह नहीं है ॥३१॥

पशुभाव में अवस्थित मन्त्र केवल वर्णरूपी है। हे महेशानि! मन्त्र में इष्टदेवता के भाव का उद्बोधन करना (जागरित करना) ही साधक का कर्त्तव्य है ॥३२॥

हे देवि! हे वरानने! कुलसाधम—कुलवृक्ष, कुलस्त्री एवं कुलगृह का दर्शन कर नमस्कार करें ॥३३॥

हे महादेवि! कुलस्त्री तन्त्र-मन्त्र-रता एवं दूतीयागरता होने पर, वह यदि वेश्या, पुंश्चली, वृद्धा या युवती—जैसी भी हो, उसे नमस्कार करें। कुल-साधक सर्वदा कुमारीपूजन में भक्तिमान् होवें ॥३४-३५॥

पञ्चम वर्ष से आरम्भ कर द्वादर्श वर्ष वयःक्रम पर्यन्त कन्या को 'कुमारी' कहा जाता है। इस समय वह निजरूप को प्रकट करती है ॥३६॥

हे महेशानि! षष्ठ वर्ष से नवम वर्ष की आयु वाली 'कुमारी' साधक के लिए अभीष्टदायिका बनती हैं ॥३७॥

अष्टवर्षं समारभ्य यावत् त्रयोदशवार्षिकी ।
कुलजां तां विजानीयात् तत्र पूजां समाचरेत् ।।३८।।
दशवर्षं समारभ्य यावत् षोडशवार्षिकी ।
युवतीं तां विजानीयात् देवीतुल्यां विचिन्तयेत् ।।३९।।
अन्नं वस्त्रं तथा नीरं कुमार्यै यो ददाति हि ।
अन्नं मेरुसमं देवि जलञ्च सागरोपमम् ।।४०।।
वस्त्रैः कोटिसहस्रैस्तु शिवलोके महीयते ।
पूजोपकरणञ्चैव कुमार्यै यो ददाति हि ।।४१।।
सन्तुष्टा देवता तस्य पुत्रत्वेनानुकल्पते ।
अशोकं विल्ववृक्षञ्च शिवाञ्चैव सुरेश्वरि ।।४२।।
दृष्ट्वा प्रणामं कुर्याच्च सर्वकामार्थसिद्धये ।
उलूकं शङ्खचिल्लञ्च गृध्रञ्चैव सुरेश्वरि ।।४३।।
नमस्कुर्यान्महाकालीं युद्धे च जयमालभेत् ।
चतुष्पथं श्मशानञ्च नमस्कुर्याद्विशेषतः ।।४४।।

आठ वर्ष से आरम्भ कर त्रयोदशवर्षीया कन्या को 'कुलजा' के ज्ञान से पूजा करें ।।३८।।

दश वर्ष से षोडशवर्षीया कन्या को 'युवती' मानकर (उसे) देवीतुल्य चिन्तन करें ।।३९।।

कुमारीपूजन के समय कुमारी को जो समस्त पूजोपकरण—अन्न, वस्त्र एवं जल—प्रदान की जाती है, वह अन्न मेरुपर्वत प्रमाण (बनकर), वह जल सागर समान (बनकर) एवं वस्त्रसमूह अनन्त कोटि प्रमाण (बनकर) तथा पूजोपकरण समूह सहस्रकोटि गुणों से गुणित होकर, शिवलोक में देवी के समीप गमन करता है ।।४०-४१।।

देवी उन सभी से सन्तुष्टा होकर साधक को स्वीय पुत्र-रूप में ग्रहण करतीं हैं। हे सुरेश्वरि! अशोक वृक्ष, बिल्ववृक्ष एवं शिवा को देखकर, सर्वकामार्थसिद्धि के लिए नमस्कार करें। हे सुरेश्वरि! उलूक, शङ्खचील एवं गृध्रिनी का दर्शन करने पर भी महाकाली-रूप में उन सभी को नमस्कार करें। वैसा करने पर, युद्ध में जयलाभ होता है। चतुष्पथ एवं श्मशान का दर्शन करने पर विशेषरूप से नमस्कार करें ।।४२-४४।।

तन्त्रज्ञमवधूतञ्च नमस्कुर्याद् वरानने।
उपासकं सदा दृष्ट्वा मधुरं भाषणं चरेत्।।४५।।
दानादनन्तपुण्यं स्यात् तस्माद्दानं समाचरेत्।
समयाञ्च विना देवि न सिद्धिः स्यात् कदाचन।।४६।।
तस्माच्चैव प्रयत्नेन गृह्णीयान्नात्र संशयः।।४७।।

पार्वत्युवाच–

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वागम-विशारद।
सिद्धपीठं महादेव कथयस्व मयि प्रभो।।४८।।

श्रीशङ्कर उवाच–

श्रूयतां सावधानेन सिद्धपीठं पतिव्रते।
यस्मिन् साधनमात्रेण सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।।४९।।
मायावती मधुपुरी काशी गोरक्षकारिणी।
हिङ्गुला च महापीठं तथा जालन्धरं पुनः।।५०।।

हे वरानने! तत्त्वज्ञ अवधूत का दर्शन करने पर, उन्हें नमस्कार करें। किन्हीं साधक व्यक्ति के साथ साक्षात्कार होने पर, सर्वदा मधुर वचनों से आलाप करें ।।४५।।

दान के द्वारा अनन्त पुण्य का लाभ होता है, अतः सर्वदा दान करें। समयाचार-विधि का प्रतिपालन न करने पर, मन्त्र-साधन में कदापि सिद्धिलाभ नहीं होता है ।।४६।।

अतः सर्वदा यथानिर्दिष्ट समयाचार-विधि के अनुसार, श्रद्धा के साथ कार्य करें ।।४७।।

(सम्प्रति सिद्धपीठ के सम्बन्ध में बताया जा रहा है)—

पार्वती ने कहा— हे भगवन्! आप सर्वधर्मज्ञ एवं सर्वागम-विशारद हैं। हे महादेव! हे प्रभो! आप मेरे समक्ष सिद्धपीठसमूह का वर्णन करें ।।४८।।

शङ्कर ने कहा—हे पतिव्रते! जिन समस्त स्थानों में मन्त्र-साधन-मन्त्र से ही सर्वसिद्धि का लाभ होता है, मैं उन समस्त सिद्धपीठों के विषय में बता रहा हूँ। अवहित चित्त से उसे श्रवण करें ।।४९।।

मायावती, मधुपुरी, काशी, गोरक्षकारिणी, हिङ्गुला एवं जालन्धर नामक महापीठद्वय, महापीठ ज्वालामुखी, नागरसम्भव नामक पीठ, कामगिरि (रामगिरि) एवं गोदावरी नामक महापीठद्वय, नेपाल, कर्णसूत्र, महाकर्ण, अयोध्या, कुरुक्षेत्र,

ज्वालामुखी महापीठं पीठं नागर सम्भवम् ।
काम गिरि महापीठं तथा गोदावरी प्रिये ।।५१।।
नेपालं कर्णसूत्रञ्च महाकर्णं तथा प्रिये ।
अयोध्याञ्च कुरुक्षेत्रं सिंहनादं मनोहरम् ।।५२।।
मणिपुरं हृषीकृशं प्रयागञ्च तपोवनम् ।
बदरीञ्च महापीठं अम्बिका-मूर्ध्वमानकम् ।।५३।।
त्रिवेणीञ्च महापीठं गङ्गासागर-संभवम् ।
नारिकेलञ्च विरजां उड्डीयानं महेश्वरि ।
कमलां विमलाञ्चैव तथा माहेश्वरीं पुरीम् ।
वाराहीं त्रिपुराञ्चैव वाग्वतीं नीलवाहिनीम् ।।५४।।
गोवर्द्धनं विन्ध्यगिरिं कामरूपं कलौयुगे ।
घण्टाकर्णं हयग्रीवं माधवञ्च महेश्वरि ।।५५।।
कुरु-ग्रामं वैद्यनाथं जानीयाद्वामलोचने ।
कामरूपं महापीठं सर्वकाम-फलप्रदम् ।।५६।।
कलौ शीघ्रफलं देवि कामरूपे जपं स्मृतम् ।
कामाख्या वस्त्रमादाय जपपूजां समाचरेत् ।।५७।।
पूर्णकामं लभेद् देवि सत्यं सत्यं न संशयः ।
इत्येतत् कथितं देवि संक्षेपाद्वरवर्णिनि ।
तव स्नेहात् प्रवक्ष्यामि भक्तिभावे सनातनि ।।५८।।

सिंहनाद, मणिपुर, हृषीकेश, प्रयाग, तपोवन, बदरीका, महापीठ, अम्बिका, ऊर्ध्वमानक, महापीठ त्रिवेणी, गङ्गासागर, नारिकेल, विरजा, उड्डीयान, कमलापुरी, विमलापुरी, माहेश्वरी, वाराही पुरी, त्रिपुरा पुरी, वाग्वती पुरी, नीलवाहिनी पुरी, गोवर्द्धन, विन्ध्यगिरि, कलियुग में कामरूप, घण्टाकर्ण एवं हयग्रीव, माधवगिरि एवं कुरुग्राम तथा वैद्यनाथधाम—हे वामलोचने! हे महेश्वरि! इन समस्त स्थानों को पीठस्थान जानें। उक्त पीठों में महापीठ कामरूप सर्वकाम-फलप्रद है ।।५०-५६।।

कलियुग में कामरूप में किया गया जप अतिशीघ्र फलदान करता है। हे देवि! कामाख्या का वस्त्र ग्रहण कर जप एवं पूजा कार्य सम्पन्न करें ।।५७।।

हे देवि! इन समस्त पीठस्थानों में साधना करने पर, मनस्कामना सिद्ध होती है। यह ध्रुव सत्य है। इस विषय में कोई सन्देह नहीं है। हे देवि! हे वरवर्णिनि! हे सनातनि! केवल आपके प्रति स्नेहवश मैंने संक्षेप में पीठस्थानों को आपसे बताया हूँ ।।५८।।

पार्वत्युवाच–

इदानीं श्रोतुमिच्छामि वदस्व प्राणवल्लभ ।
पुष्पस्य नियमं देव जगतां प्राणकारक ।।५९।।

श्रीशङ्कर उवाच–

पुष्पस्य नियमं देवि शृणुष्व हरवल्लभे ।
यस्य दानेन देवेशि सन्तुष्टा वामिका ध्रुवम ।।६०।।
अशोकं पद्मपुष्पञ्च चम्पकं नागकेशरम् ।
धुस्तूरं मालतीपुष्पं जातिं च यूथिकां तथा ।।६१।।
वकुलं तगरञ्चैव मधुपुष्पं वसन्तिका ।
कह्लारं करवीरञ्च बन्धुकञ्च लवङ्गकम् ।।६२।।
जवापुष्पञ्च देवेशि रक्तपुष्पं विशेषतः ।
अपरायाश्च माहात्म्यं वक्तुं नैव च शक्यते ।।६३।।
बिल्वपत्रं महेशानि ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।
स्वर्णस्य पुष्पभारस्य प्रदाने यत् फलं भवेत् ।।६४।।
एकेन बिल्वपत्रेण तत् फलं लभते ध्रुवम् ।
जवापुष्पप्रदानेन पट्टवस्त्रफलं लभेत् ।।६५।।

पार्वती ने कहा—हे देव! हे प्राणवल्लभ! आप जगत् के त्राण-कर्त्ता हैं। अधुना, 'कौन-सा पुष्प साधनकार्य के लिए विहित है, आप मेरे निकट इसी का वर्णन करें ।।५९।।

शङ्कर ने कहा—हे हरवल्लभे, हे देवेशि! जिन पुष्पों के प्रदान करने से महामाया निश्चय ही सन्तुष्ट होतीं हैं, उन सभी पुष्पों के विषय में आपके निकट कह रहा हूँ ।।६०।।

अशोक, पद्म, चम्पक, नागकेशर, धतूरा, मालतीपुष्प, जातिपुष्प, यूथिका, बकुल, तगर, मधुपुष्प, वसन्तिका, कह्लार, करबी, बन्धूक, लवङ्ग, जवा, कोई भी रक्त पुष्प एवं अतुल माहात्म्ययुक्त अपराजिता की उत्कर्षता का वर्णन नहीं किया जा सकता है। हे महेशानि! बिल्वपत्र ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवात्मक है। विपुल परिमाण में स्वर्णपुष्प को प्रदान करने पर जो फल होता है, मात्र एक बिल्वपत्र के प्रदान से निश्चय ही उस फल का लाभ होता है। जवापुष्प प्रदान के द्वारा पट्टवस्त्र दान के फल का लाभ होता है ।।६१-६५।।

पद्मपुष्पप्रदानेन गौरीलोके महीयते ।
पद्मतपुष्पै र्जवापुष्पै र्होमं कुर्याद्विचक्षणः ।।६६।।
रक्तचन्दनसंमिश्रं रक्तपुष्पं सुरेश्वरि ।
दद्याद् भक्तया सदा देव्यै वाजिमेधफलं फलेत् ।।६७।।
जलजं स्थलजं वापि यच्च पुष्पं मनोहरम् ।
दद्याच्चैव महेशानि सर्वकामफलप्रदम् ।।६८।।

इति कुब्जिकातन्त्रे पार्वती-परमेश्वर-संवादे सप्तमः पटलः ।।७।।

पद्म पुष्प प्रदान के द्वारा गौरीलोक का लाभ होता है। विचक्षण साधक सर्वदा पद्मपुष्प एवं जवा पुष्प के द्वारा होम करें ।।६६।।

हे सुरेश्वरि! रक्तपुष्प के साथ रक्तचन्दन को मिश्रित कर, सर्वदा भक्ति के साथ इसे देवी को प्रदान करने पर, उसके द्वारा अश्वमेधयज्ञ के फल का लाभ होता है ।।६७।।

हे महेशानि! पुष्प जलज हो या स्थलज ही हो, यदि वह मनोहर होता है, तब उस पुष्प के प्रदान से सर्वाभीष्ट-सिद्धि का लाभ होता है ।।६८।।

कुब्जिकातन्त्र में पार्वती-परमेश्वर-संवाद
में सप्तम पटल समाप्त ।।७।।

अष्टमः पटलः

(मारणोच्चाटन-मोहन-कामसिद्धि-कथनम् ।।)

श्रीपार्वत्युवाच—

महादेव जगन्नाथ प्राणेश परमेश्वर ।
साधकानां हितार्थाय साधनं मे प्रकाशय ।।१।।

श्रीशङ्कर उवाच–

साधनं बहुविधं देवि कलौ पूर्ण फलप्रदम् ।
केवलं वीरभावेन साधनञ्च समाचरेत् ।।२।।
कुजवारे महादेवि कृष्णाष्टम्यां महानिशि ।
चतुष्पथे महाघोरे अयुतं प्रजपेत् सुधीः ।।३।।
दशाक्षरं महामन्त्रं उग्रायाश्च सुरेश्वरि ।
पूजनं कृष्णपुष्पेण श्मशान कुसुमेन वा ।।४।।
महाचीन क्रमेणैव सर्वं कुर्यात् सुरेश्वरि ।
जुहुयान्नील पुष्पेण चाष्टोत्तरशतं पुनः ।।५।।

इसके अनन्तर उच्चाटन, मोहन एवं काम्यसिद्धि के विषय में कहा जा रहा है) –

पार्वती ने कहा—हे महादेव! आप ही जगन्नाथ हैं, आप ही प्राणशक्ति के ईश्वर हैं एवं आप ही परमेश्वर हैं। आप साधकगणों के लिए मङ्गलजनक साधन को मेरे निकट प्रकाशित करें ॥१॥

शङ्कर ने कहा—हे देवि! कलि (युग) में विविध प्रकार के साधन ही पूर्ण फल प्रदान करते हैं। किन्तु केवल वीरभाव से उन समस्त मन्त्रों की साधना करें ॥२॥

हे महादेवि! मङ्गलवार को कृष्णाष्टमी तिथि में महानिशा में, महाघोर चतुष्पथ में सुधी साधक दशाक्षर, उग्रा के महामन्त्र का दशसहस्र जप करें। हे सुरेश्वरि! उसके बाद कृष्णवर्णपुष्प या श्मशानकुसुम के द्वारा उग्रादेवी की पूजा करें ॥३-४॥

हे सुरेश्वरि! महाचीनाचार क्रमपद्धति से इस साधना के समस्त कार्यों को करें। पूजा के अन्त में, नीलपुष्प के द्वारा अष्टोत्तर-शत संख्यक का होम करें ॥५॥

तद्भस्मानि च तन्मन्त्रै र्निःक्षिपेद्वैरिवेश्मनि ।
दशाहाभ्यन्तरे वैरी विनाशो जायते ध्रुवम् ।।६।।
मायापदं समुच्चार्य क्ष-कारं तदनन्तरम् ।
पुटितञ्च महेशानि शताभिमन्त्रितं पुनः ।।७।।
जपित्वा प्रक्षिपेद्देवि पशुहोमं समाचरेत् ।
कुलवारे महेशानि कुलद्रव्यै र्महेश्वरि ।।८।।
पञ्चमुण्डै-र्महेशानि निःक्षिप्य वटमूलके ।
आसनं तत्र संकल्प्य पूजां चैव समाचरेत् ।।९।।
अष्टसहस्रं जपित्वा होमं कुर्याद्विचक्षणः ।
कृष्णपुष्पैर्जवापुष्पै र्विशेषेण सुरेश्वरि ।।१०।।
अतिचीन क्रमेणैव पूजां कुर्यात् कुलेश्वरि ।
निशीथे नग्नकेशस्तु व्याघ्रचर्मधरो नरः ।।११।।
शिवबीजं विष्णुबीजं तारेण पुटितं मनुम् ।
शताभिमन्त्रितं मुण्डं निःक्षिपेत् वैरिवेश्मनि ।।१२।।

उसके बाद उस यज्ञ-भस्म को मूलमन्त्र के उच्चारण के साथ-साथ शत्रुगृह में निःक्षेप करने पर, दस दिनों के अन्दर वह शत्रु निश्चय ही विनाश को प्राप्त होता है ।।६।।

"ह्रीं क्षं" के द्वारा पूर्वोक्त दशाक्षर उग्रा-मन्त्र को पुटित कर, अष्टोत्तर शतवार जप के द्वारा उस भस्म को अभिमन्त्रित कर, उसे शवगृह में निःक्षेप करें। उसके बाद पुनः पशुभाव से होम करें। (इस प्रकार कार्य करने पर भी, वह पूर्वोक्त कार्य के समान ही फलदायक होता है।) हे महेशानि! हे महेश्वरि! कुलवार में, कुलद्रव्य के साथ, वटवृक्ष के मूल में, पञ्चमुण्ड के द्वारा आसन की रचना कर, उसके ऊपर उपपवेशन कर, साधक उग्रादेवी की पूजा करें ।।७-९।।

हे सुरेश्वरि! उसके बाद अष्टोत्तर सहस्र मन्त्र-जप करके, कृष्णपुष्प या विशेष-रूप से जवापुष्प के द्वारा विचक्षण साधक, चीनाचार-क्रम से, रात्रिकाल में, नग्नकेश होकर एवं व्याघ्रचर्म को परिधान कर, उग्रादेवी की पूजा करें एवं होमादि समस्त कार्यों को करें ।।१०-११।।

"ॐ हं क्लीं" इन बीजत्रय के द्वारा उग्रादेवी के मन्त्र को पुटित कर, उस पुटित मन्त्र के द्वारा पूर्वोक्त मुण्डों में से किसी भी एक (मुण्ड) को अष्टोत्तर शतबार अभिमन्त्रित कर, उसे शत्रुगृह में निःक्षेप करें ।।१२।।

सप्ताहाभ्यन्तरे देवि नाशमाप्नोति निश्चितम् ।
अष्टम्यां च महादेवि शनिवारे तथा निशि ।।१३।।
पिष्टकं पुरुषाकारं रचयेत् परमेश्वरि ।
आसनं तत्र संकल्य विहितं पूजनं चरेत् ।।१४।।
अश्वत्थमूलमास्थाय सहस्रं प्रजपेत् सुधीः ।
पिष्टकैः शतहोमन्तु कुर्याच्च परमेश्वरि ।।१५।।
होमशेषं समादाय श्रूयतां परमेश्वरि ।
रक्तवस्त्रेण संवेष्ट्य वध्नीयात् रक्ततन्तुना ।।१६।।
निक्षिपेद् वैरिगेहे च विनाशं च भवेद् ध्रुवम् ।
कुलवारे महेशानि चितायामप्य-संस्कृतौ ।।१७।।
कवचन्तु पुरा कृत्वा तत्र पूजां समाचरेत् ।
षट्सहस्रं जपं कृत्वा शतमष्टोत्तरं जपेत् ।।१८।।
महाकाल्या महामन्त्रं जपेत्तु परमेश्वरि ।
कृष्णपुष्पेण संपूज्य जुहुयादाद्रकेन तु ।।१९।।

हे देवि! इस प्रक्रिया के द्वारा एक सप्ताहकाल के मध्य में निश्चय ही शत्रु विनष्ट हो जाता है। हे महादेवि! अष्टमी तिथि में, शनिवार को महानिशा में, पिष्टक के द्वारा एक पुरुष-मूर्ति की रचना करें। हे परमेश्वरि! उसके बाद, अश्वत्थ वृक्ष के मूल में आसन की रचना कर, उग्रादेवी की पूजा करें एवं अष्टोत्तर सहस्र मन्त्र-जप करें। हे परमेश्वरि! उसके बाद सुधी साधक उस पुरुष मूर्ति के अष्टोत्तर शत खण्ड करके, उसके द्वारा अष्टोत्तर शत होम करें ॥१३-१५॥

हे परमेश्वरि! श्रवण करें। उसके वाद होम के अन्त में भस्म का ग्रहण कर, उसे रक्तवस्त्र के द्वारा वेष्टन कर, रक्तसूत्र के द्वारा उसका बन्धन करें ॥१६॥

उसके बाद, उस पोटली को शत्रु-गृह में निःक्षेप करने पर, शत्रु निश्चय ही विनाश को प्राप्त होता है। हे महेशानि! पहले महाकाली के कवच का जप करें। उसके बाद, कुलवार में, अ-संस्कृत चिता में महाकाली की पूजा करें। हे परमेश्वरि! उसके बाद, ६१०८ बार महाकाली के महामन्त्र का जप करें। कृष्णपुष्प के द्वारा देवी की पूजा करें एवं आद्रक के द्वारा देवी का होम करें ॥१७-१९॥

तदस्थि च समादाय शताभिमन्त्रितं पुनः ।
प्रक्षिपेद् वैरिगेहे च तस्योच्चाटन मुत्तमम् ।।२०।।
श्मशानकाष्ठमादाय आसनं तत्र कल्पयेत् ।
आसने च जपेन्मन्त्रं शतमष्टोत्तरं पुनः ।।२१।।
विहितञ्च चितास्थानं योषिद्-ब्राह्मण वर्जितम् ।
आसनं कल्पयित्वा तु तत्र पूजां समाचरेत् ।२२।।
वैरिणां नाम संलिख्य आसनं तत्र कल्पयेत् ।
षट्सहस्रं जपेन्मन्त्रं वैरिणं मोहयेद् ध्रुवम् ।।२३।।
कुलवारे महेशानि चतुर्दश्यां सुरेश्वरि ।
निशीथे च महादेवि कृष्णपुष्पेण होमयेत् ।।२४।।
होमं कृत्वा वरारोहे वैरिणं मोहयेद् ध्रुवम् ।
कुलपुष्पेण देवेशि होमं कुर्याद् विचक्षणः ।।२५।।
श्मशानकालिका मन्त्रं जपेदष्टाक्षरं बुधः ।
अष्टोत्तरसहस्रेण वैरिं मोहयते ध्रुवम् ।।२६।।

उसके बाद, उस अ-संस्कृत चितास्थित अस्थि को ग्रहण कर, उसे महाकाली मन्त्र के द्वारा एकशत आठ बार अभिमन्त्रित कर, उसे शत्रुगृह में नि:क्षेप करने पर, वह शत्रु उन्मत्तता-ग्रस्त हो जाता है ॥२०॥

श्मशान-काष्ठोपरि उपवेशन कर, अष्टोत्तर शतबार महाकाली के मन्त्र का जप करें ॥२१॥

जो चितास्थान नारी एवं ब्राह्मण-वर्जित है, उस चितास्थान में उपवेशन कर, महाकाली की पूजा करें ॥२२॥

आसन ग्रहण करने से पहले, उस स्थान पर शत्रु का नाम लिखकर, उसके ऊपर आसन का परिग्रहण कर, छ: हजार महाकाली के मन्त्र का जप करें। इसके फलस्वरूप शत्रु निश्चय ही मूर्च्छित हो जाता है ॥२३॥

हे सुरेश्वरि! हे महेशानि! कुलवार में, चतुर्दशी तिथि में, महानिशा में, कृष्णपुष्प के द्वारा महाकाली का होम करें। हे वरारोहे! इसप्रकार होम करने पर शत्रु निश्चय ही मूर्च्छित हो जाता है। हे देवेशि! विचक्षण साधक कुलपुष्प के द्वारा होम करके अष्टोत्तर सहस्रबार श्मशान कालिका के अष्टाक्षर महामन्त्र का जप करें। इसके फलस्वरूप शत्रु निश्चय ही मूर्च्छित हो जाता है ॥२४-२६॥

शनिवारे महेशानि मुण्डमादाय यत्नतः ।
अष्टाक्षरं महामन्त्रं द्विसहस्रं जपेत् सुधीः ।।२७।।
वैरिं मोहयते देवि त्रिमासात् परतो ध्रुवम् ।
गोमुण्डञ्च समादाय नाममन्त्रं लिखेत्ततः ।।२८।।
अष्टसहस्रं जपेद्देवि वैरिं नाशयते ध्रुवम् ।
जुहुयान्नीलपुष्पेण अष्टोत्तरशतं पुनः ।।२९।।
अथवान्य प्रकारेण श्रूयतां वरवर्णिनि ।
सूर्योदयं समारभ्य यावत् सूर्यान्तरं भवेत् ।।३०।।
तनमन्त्रैः पुटितं कृत्वा वैरिं मर्दयते क्षणात् ।
सन्ध्याकालं समारभ्य यावत् सूर्योदयं भवेत् ।।३१।।
तावन्मन्त्रं जपं कुर्यात् अनुलोम-विलोमतः ।
कृष्णपुष्पेण होतव्यं यावदुच्चाटनं भवेत् ।।३२।।
अष्टभ्यान्तरे वैरिविनाशो जायते ध्रुवम ।
मातृका पुटितं कृत्वा जपेत् सुरसुन्दरि ।।३३।।

हे महेशानि! शनिवार को नरमुण्ड ग्रहण कर, यत्न के साथ उसके ऊपर श्मशान-कालिका के अष्टाक्षर महामन्त्र का द्विसहस्र (२०००)-संख्यक जप करें ॥२७॥

इस प्रकार कार्य करने पर तीन महीने के बाद शत्रु मूर्च्छित हो जाता है। गोमुण्ड को ग्रहण कर, उस पर शत्रु-नाम-विदर्भित श्मशानकालिका के मन्त्र को लिखे। उसके बाद अष्टसहस्र (८०००) मन्त्र-जप कर, पुनः नील पुष्प के द्वारा अष्टोत्तर शत-संख्यक होम करने पर, शत्रु निश्चय ही विनाश-प्राप्त हो जाता है ॥२८-२९॥

हे वरवर्णिनि! प्रकारान्तर से शत्रु-विमर्दन पद्धति को बता रहा हूँ, श्रवण करें। एकदिन सूर्योदय से आरम्भ कर परवर्त्ती दिवस के सूर्योदय पर्यान्त शत्रुनाम-विदर्भित (अभिसम्पातग्रस्त) मन्त्र का अविश्रान्त (अनवरत) रूप से जप करते हरें। वैसा रहने पर, शत्रु विमर्दित हो जाता है। अथवा सन्ध्याकाल (सूर्यास्त) से आरम्भ कर परवर्त्ती दिवस के सूर्योदय पर्यन्त अनुलोम-विलोम-क्रम से लगातार (अनवरत) मन्त्र-जप करते रहें। उसके बाद कृष्ण पुष्प के द्वारा अनवरत तब तक होम करते रहें, तब तक शत्रु उन्मत्त न हो जाय ॥३०-३२॥

इस प्रकार कार्य करने पर, अष्टम दिवस के मध्य में शत्रु निश्चय ही विनाश को प्राप्त हो जाता है। हे सुरसुन्दरि! शत्रु-नाम-विदर्भित मन्त्र को

अनुलोमविलोमेन तन्नाम्ना प्रजपेत् सुधीः ।
दशाहाभ्यन्तरे वैरिविनाशो जायते ध्रुवम् ।।३४।।
कुजवारे महेशानि चितामध्ये समागतः ।
योगिनीं तत्र संपूज्य भैरवं पूजयेत्ततः ।।३५।।
देवेशीं तत्र संपूज्य तारिणीं तत्र पूजयेत् ।
क्षेत्रपालञ्च संपूज्य तारिणीं तत्र पूजयेत् ।।३६।।
दशदिक्षु कीलञ्च कर्त्तव्यञ्च सुरेश्वरि ।
विंशत्यक्षर मुच्चार्य नाम्नामध्ये सनातनि ।।३७।।
पञ्चसहस्रं जपेन्मन्त्रं यावच्चैव महानिशिम् ।
तावज्जपं प्रकुर्वीत शत्रूणां नाशनाय च ।।३८।।
जहुयात् रक्तपुष्पेण शत्रून् मर्दयते क्षणात् ।
होतव्यं तत्र देवेशि देवेशञ्च यजेत् सुधीः ।।३९।।
कुजवारे महेशानि शवमादाय यत्नतः ।
कीलकं तत्र बद्धा च मूलमन्त्रैर्महेश्वरि ।।४०।।

मातृका-पुटित कर, अनुलोम, एवं विलोम क्रम से अनवरत जप करते रहें। इस प्रकार कार्य करने पर, दश दिनों के मध्य शत्रु निश्चय ही विनाश को प्राप्त हो जाता है ।।३३-३४।।

हे महेशानि! मङ्गलवार को अपरिष्कृत चिता के मध्य में, पहले योगिनी की पूजा कर, उसके बाद भैरव की पूजा करें। उसके बाद वहाँ पर, यथाक्रम से क्षेत्रपाल एवं तारिणी की पूजा करें ।।३५-३६।।

हे सुरेश्वरि! पूजास्थान के चारों ओर सर्वप्रथम कीलों को प्रोथित करें। हे सनातनि! उसके बाद विंशत्यक्षर तारिणी मन्त्र का उच्चारण कर, मध्य में शत्रु-नाम का योग कर, पञ्चसहस्र (५०००) संख्यक जप करें। उसके बाद जब तक महानिशि का समय नहीं होता है, उस समय पर्यन्त मन्त्र-जप करते रहें। उसके परिणामस्वरूप शत्रु निश्चय ही विनाश को प्राप्त होता है ।।३७-३८।।

हे देवेशि! पहले भैरव की पूजा कर, उसके बाद रक्तपुष्प के द्वारा होम करने पर, शत्रु विमर्दित (दलित, पिष्ट) हो जाता है ।।३९।।

हे महेशानि! मङ्गलवार को यत्न के साथ एक शव को ग्रहण कर, मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए उस शव को एक कीलक के साथ बन्धनं करें ।।४०।।

तत्र संचिन्तयेद्देवीं दैत्यदर्पनिसूदिनीम् ।
भैरवं तत्र संपूज्य शवस्नानं समाचरेत् ।।४१।।
चत्वारः कीलकास्तत्र पूजनञ्च समाचरेत् ।
बटुकं क्षेत्रपालञ्च योगिनीं भैरवीं तथा ।।४२।।
स्त्रियं विना महेशानि ब्राह्मणं यवनं यथा ।
यवनीञ्च विना देवी शवं संचिन्तयेत् सुधीः ।
अन्त्यजश्च शवश्रेष्ठः प्रशस्तो यद्धकर्मणि ।।४३।।
शवरूपं शिवं तत्र चिन्तयेत् परमेश्वरि ।
कार्यं देहि महादेव सिद्धिं देहि महाविभो ।।४४।।
मन्त्रसिद्धिं तथा देहि रक्ष मां शरणागतम् ।
शवरूप महादेव सर्वदेव नमोऽस्तु ते ।।४५।।
पठित्वैवं महादेवि शवपृष्ठे समास्थितः ।
जपं तत्र प्रकुर्वीत सर्वकामार्थसिद्धये ।।४६।।

उसके बाद वहाँ पर दैत्यदर्पनिसूदिनी चामुण्डा का ध्यान करते हुए भैरव की पूजा करें। उसके बाद शव को स्नान करावें ।।४१।।

उसके बाद शव के चारों ओर प्रोथित (भूगर्भ में निहित) चार कीलकों की पूजा करें। उसके बाद वहाँ बटुक, क्षेत्रपाल, योगिनी एवं भैरवी की पूजा करें ।।४२।।

हे महेशानि! स्त्री या यवनी (यवन-स्त्री) से भिन्न, ब्राह्मण या यवन के शव को इस साधन-कार्य में ग्रहण करें। युद्धकार्य में शत्रु-विनाश के लिए अन्त्यज जाति का शव ही श्रेष्ठ है ।।४३।।

हे परमेश्वरि! उस शव को शिव-रूप में चिन्तन करें। उसके बाद उस शव के निकट निम्नोक्त वाक्य से प्रार्थना करें—"हे महादेव! हे महाविभो! आप मुझे कार्य एवं सिद्धि दान करें। आप मुझे मन्त्रसिद्धि दान करें एवं मैं आपका शरणागत हूँ। आप इस शरणागत की रक्षा करें। हे महादेव! आप शवरूपी एवं सर्वदेवरूपी हैं। आपको नमस्कार ।।४४-४५।।

हे महादेवि! इस प्रकार प्रार्थना कर, उसके बाद साधक शवपृष्ठ पर आसन को परिग्रहण कर, समस्त प्रकार के कामार्थ-सिद्धि के लिए केवल मन्त्र-जप करते रहें ।।४६।।

करालीं तत्र संपूज्य होमं कुर्याद्विचक्षणः।
सर्वकामार्थसिद्धिः स्याद् यद् यद् मनसि वर्त्तते ।।४७।।
उज्जटे महादेवि कृष्णाष्टम्यां कुलेश्वरि।
रक्तवस्त्रं समादाय कुलद्रव्यै र्महेश्वरि ।।४८।।
नग्नः शक्तिसमायुक्तो स्वयं च भैरवोत्तमः।
क्ष-कारं पूर्वमुद्धृत्य नादबिन्दु समन्वितम् ।।४९।।
दक्षिणे कालिके देवि कामबीजं ततः परम्।
इति मन्त्रेण देवेशि पूजां कुर्यात् विशेषतः ।।५०।।
गजान्तकसहस्त्रन्तु जपं कुर्याद्वरानने।
रक्तपुष्पेण होमस्तु कर्त्तव्यः वरवर्णिनि ।।५१।।
सर्वकामार्थसिद्धिः स्यात् स एव भैरवोत्तमः ।।५२।।

इति कुब्जिकातन्त्रे पार्वती-परमेश्वर-संवादे अष्टमः पटलः ।।८।।

उसके बाद विचक्षण साधक वहाँ पर कराली (काली) की पूजा कर, उसके बाद होम करें। इस प्रकार कार्य करने पर साधक उसके आकाङ्क्षित सर्वकामार्थ-सिद्धि का लाभ करता है ।।४७।।

हे कुलेश्वरि! हे महादेवि! कृष्णाष्टमी तिथि में रक्तवस्त्र परिधानपूर्वक कुलद्रव्य एवं नग्नशक्ति से समायुक्त होकर साधक स्वयं भैरवरूपी बन जावें। उसके बाद, 'क्षं दक्षिणे कालिके क्रीं'—इस मन्त्र के द्वारा विशेष रूप से देवी की पूजा करें ।।४८-५०।।

हे वरानने! हे वरवर्णिनि! उसके बाद अष्टोत्तर सहस्र मन्त्र का जप कर रक्तपुष्प के द्वारा होम करें। इस प्रकार कार्य करने पर, सर्वकामार्थसिद्धि का लाभ होता है एवं साधक स्वयं भैरवरूपी बन जाता है ।।५१-५२।।

कुब्जिकातन्त्र में पार्वती-परमेश्वर-संवाद में
अष्टम पटल समाप्त ।।८।।

नवमः पटलः

(मन्त्रसिद्धेर्लक्षणं, मन्त्रसिद्धेरूपायः, पञ्चाङ्गपुरश्चरण-विधिश्च ।)

श्रीपार्वत्युवाच—

भगवन् प्राणनाथेश सर्वतत्त्व विशारद ।
लक्षणं मन्त्रसिद्धेश्च कथ्यतां भूतभावन ।।१।।

श्रीशिवउवाच—

श्रृणु भद्रे पवक्ष्यामि श्रूयतां सावधानतः ।
हृदयग्रन्थिभेदश्च रोमाञ्चो हर्षणं तथा ।।२।।
तन्नाम्ना गद्गदं वाक्यं उन्मत्त इव लक्ष्यते ।
नित्यहर्षो नित्यश्रद्धः सर्वदा वेदभूषितः ।।३।।
वासनाबद्धो देवै च स्व प्रेताञ्च प्रपश्यति ।
अज्ञानेनानुसन्धानात् पश्चात् ज्ञानं प्रपश्यति ।।४।।
तज् ज्ञानं स्थिरतामेति दृढ़ञ्च जायते पुनः।
देवता प्रतिसन्धानात् करुणोक्तिः प्रजायते ।।५।।

(मन्त्रसिद्ध का लक्षण ; मन्त्रसिद्धि का उपाय एवं पञ्चाङ्ग पुरश्चरणविधि कही जा रही है) —

पार्वती ने कहा– हे प्राणनाथ! आप सभी के ईश्वर एवं सर्वतत्त्वविशारद हैं। हे भूतभावन! आप मेरे निकट मन्त्रसिद्धि के लक्षणों का वर्णन करें ।।१।।

शङ्कर ने कहा—हे भद्रे! मैं मन्त्रसिद्धि के लक्षण को बता रहा हूँ। मनोयोग के साथ श्रवण करें। मन्त्रसिद्धि होने पर, षट्‌चक्र में हृदयग्रन्थि का भेद हो जाता है एवं देह में रोमाञ्चकारी पुलक का सञ्चार होता है ।।२।।

उससमय साधक उन्मत्तवत् दिखायी देता है एवं उसके मुख से सर्वदा इष्टदेवता के उद्देश्य से गद्‌गद–वाक्य निर्गत होता है। वह व्यक्ति प्रतिनियत हर्षयुक्त, श्रद्धान्वित एवं वेद–परायण हो जाता है ।।३।।

वह व्यक्ति अज्ञानता-प्रयुक्त वासनावद्ध होकर देवता-की आराधना में तत्पर होने पर भी, परवर्त्तीकाल में ज्ञान के प्रभाव से वह व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार का लाभ करता है ।।४।।

उसके बाद वह आत्म-साक्षात्कार-जनित ज्ञान क्रमशः स्थिरता को प्राप्त होकर, बाद में वह (ज्ञान) साधक के हृदय में बद्धमूल हो जाता है । देवतानुसन्धान में तत्पर साधक सर्वदा देवताओं के उद्देश्य से प्रार्थना परायण होकर कातर (कारुण्यपूर्ण, दयार्द्र) वाक्यों का उच्चारण करता रहता है ।।५।।

सर्वदा देवतां पश्यन् देवता भाव सिद्धये ।
दिव्यज्ञानं शरीरे च सर्वदा देवतर्पणम् ।।६।।
निराबिलं समानञ्च यः पश्यति स बुद्धिमान् ।
लोष्ट्रे च काञ्चने चैव समज्ञानञ्च पश्यति ।।७।।
स एव साधकः श्रेष्ठः जीवन्मुक्तो न संशयः ।
साकार भावने देवि पुत्रवत् स्नेह माचरेत् ।।८।।
आत्मीयत्वं समादाय हस्तपादादि संयुतम् ।
आत्मीयतुल्या सर्वा च भावेन च निरन्तरम् ।।९।।
मम देहे च नान्योऽस्ति देवता चैव तिष्ठति ।
नान्यत् देवं कदाचित्तु सर्वदा मूर्द्धिर्न तिष्ठति ।।१०।।
त्रिशूलधारिणी देवि सर्वदा परिरक्षति ।
सर्वास्त्रधारिणी देवि सर्वदा परिरक्षति ।।११।।
एवं च ध्यानयोगेन ज्ञानयोगेन वा पुनः ।
सर्वदानन्दहृदये महाज्ञानं दिने दिने ।।१२।।

देवभाव-सिद्धि के कारण वह व्यक्ति सर्वदा देवता का दर्शन करता है। वह व्यक्ति दिव्यज्ञान का लाभ करता है एवं देह के मध्य में सर्वदा देवताओं का तर्पण करता है ।।६।।

जो व्यक्ति सर्वभूतों में समदर्शी हैं एवं सर्वत्र ही पवित्रता का दर्शन करते हैं, वही प्रकृत बुद्धिमान् है। जो व्यक्ति लोष्ट्र एवं काञ्चन को सममूल्य मानते हैं, वही साधकों में श्रेष्ठ हैं एवं वही जीवन्मुक्त हैं। इस विषय में बिन्दुमात्र भी संशय नहीं है। वह व्यक्ति समस्त साकार जीव या वस्तु को पुत्रवत् स्नेह करते हैं ।।७-८।।

हस्तपादादि-युक्त समस्त जीवकुल उनके निकट आत्मीयवत् हैं एवं स्त्री-मात्र ही सर्वदा उसके आत्मीय-तुल्या हैं ।।९।।

मेरे देह में केवल इष्ट देवता ही विद्यमान हैं एवं मैं भी इष्ट देवता-स्वरूप हूँ। मैं इष्टदेवता से भिन्न अन्य कोई नहीं हूँ एवं इष्टदेवता सर्वदा सहस्रार में वास कर रहे हैं—मन्त्रसिद्ध साधक सर्वदा इसी भाव से अवस्थान करते हैं ।।१०।।

त्रिशूलधारिणी एवं सर्वास्त्रधारिणी देवी सर्वदा साधक की रक्षा करती हैं ।।११।।

इसप्रकार, ध्यानयोग में या ज्ञानयोग में मन्त्रसिद्ध साधक सर्वदा आनन्दपूर्ण हृदय से अवस्थान करता है एवं दिनों-दिन वह व्यक्ति उत्तरोत्तर महाज्ञान लाभ करता है ।।१२।।

एवमभ्यस्यमानेन अहन्यहनि साधकः ।
साकारेण महेशानि निराकारञ्च भावयेत् ।।१३।।
साकारेण बिना देवि निराकारं न पश्यति ।
साकारं मूलकं सर्वं साकारञ्च प्रपश्यति ।।१४।।
अभ्यासेन सदा देवि निराकारं प्रपद्यते ।
निराकारं समासाद्य निरञ्जनपदं लभेत् ।।१५।।
निराकारेण देवेशि कृतकृत्यश्च साधकः ।
एवं सदात्मना देवि कामरूपो न संशयः ।।१६।।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन भवेद् देवयजी नरः ।
देवताध्यान मात्रेण देवता भावमालभेत् ।।१७।।
सर्वं कुर्यान्महेशानि देवतायै समर्पणम् ।
वासनाभावरूपेण मनसि यत् प्रतिष्ठितम् ।।१८।।
तत् सर्वं च भवत्येव देवि सत्यं न संशयः ।।१९।।

निरन्तर प्रतिदिन इस प्रकार ध्यान एवं ज्ञानाभ्यास के फलस्वरूप साधक साकार को भी निराकार स्वरूप में चिन्तन करने लगता है। हे महेशानि! उस अवस्था में साधक साकार के मध्य में सर्वत्र निराकार से भिन्न अन्य कुछ भी दर्शन नहीं करता है। साकार ही समस्त वस्तुओं का मूल है एवं जो साधारण दृष्टि में साकार-रूप में परिदृश्यमान होता है, अभ्यासयोग के द्वारा वही साधक के निकट निराकारत्व को प्राप्त होता है। मन्त्रसिद्ध साधक इस निराकार दृष्टि या ज्ञान-लाभ के बाद निर्वाण लाभ करता है ॥१३-१५॥

हे देवेशि! निराकार ज्ञान-लाभ के फलस्वरूप साधक कृतकृत्य (कृतकार्य) हो जाता है। हे देवि! समस्त जीवात्माओं को भी, साधक, निराकाररूप में ही दर्शन करता है एवं वह साधक ही तब स्वयं कामरूपी बन जाता है। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ॥१६॥

अतः सर्वदा सर्वप्रयत्न से देवताराधनतत्पर बनें। देवता को ध्यान-मात्र से ही साधक देवता के भाव को प्राप्त हो जाता है । १७॥

हे महेशानि! सर्वदा साधन-जनित समस्त कार्य-फल को इष्ट-देवता को समर्पण करें। वैसा करने पर, चित्त में वासनारूप में जितने प्रकार के सङ्कल्प विद्यमान हैं, वे सभी सिद्ध हो जाते हैं। हे देवि! यह ध्रुवसत्य है एवं इस विषय में बिन्दुमात्र सन्देह नहीं है ॥१८-१९॥

(अथ मन्त्रसिद्धेरूपाय–कथनम्)—

श्रीपार्वत्युवाच—

हृदयेश महादेव परमेश पुरातन ।
केनोपायेन देवेश मन्त्रसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।
पुरश्चरणविधानञ्च कथ्यतां प्राणवल्लभे ।।२०।।

श्रीशङ्कर उवाच—

साधु साधु त्वया पृष्टं श्रूयतां वरवर्णिनि ।
अनायासेन मन्त्रस्य सिद्धिर्भवति सुन्दरि ।।२१।।
तत् सर्वं कथयिष्यामि सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् ।
रमाबीजं विश्वबीजं वधूबीजं महेश्वरि ।।२२।।
पुटितैकजटामन्त्रं प्रजपेत् साधकोत्तमः ।
अष्टसहस्रं महेशानि जपेत्तु साधकोत्तमः ।।२३।।
गद्यपद्यमयी वीणा भवेत्तस्य न संशयः ।
कूर्चबीजं शक्तिबीजं क्षकारं तदनन्तरम् ।।२४।।
पुटितं दक्षिणामन्त्रं षट्सहस्रक्रमेण तु ।
सर्वराज्येश्वरो भूत्वा विचरन्ति महीतले ।।२५।।

(मन्त्रसिद्धि के उपाय का कथन)—

पार्वती ने कहा—हे हृदयेश महादेव! हे परमेश! आप ही एकमात्र पुरातन सत्ता हैं। हे देवेश! किस पद्धति से कार्य करने पर, सुनिश्चितरूप से मन्त्रसिद्धि का लाभ होता है एवं पुरश्चरण की पद्धति क्या है? हे प्राणवल्लभ! उसे आप मेरे निकट व्यक्त करें ॥२०॥

शङ्कर ने कहा— हे वरवर्णिनि! आपने अति उत्तम प्रश्न किया है। आपके कथित विषय का उत्तर दे रहा हूँ, श्रवण करें। जिससे अनायास ही मन्त्रसिद्धि का लाभ होता है, हे सुन्दरि! उन सभी को मैं बता रहा हूँ। सत्य ही ये पद्धतियाँ मन्त्रसाधन के लिए अतिशय सुनिश्चित मार्ग हैं। हे महेश्वरि! एकजटा-मन्त्र को ॐ (विश्वबीज), स्त्रीं (वधूबींज) एवं श्रीं (रमाबीज) बीज के द्वारा पुटित करके, अष्टोत्तर सहस्र (मतान्तर में अष्टसहस्र) जप करें ॥२१-२३॥

इसके फलस्वरूप साधक गद्यपद्यमयी वाक्यों का अधीश्वर बन जाता है। कूर्चबीच (हूं), शक्तिबीज (ह्रीं; क्लीं) एवं 'क्षं'—इन बीजत्रय के द्वारा पुटित करके, दक्षिण कालिका के मन्त्र का छः हजार जप करने पर, साधक समग्र राज्य का अधीश्वर बनकर पृथिवी पर विचरण करता है ॥२४-२५॥

कुलस्त्रीयोनिमध्ये तु धूमामन्त्रं समालिखेत् ।
शक्त्या तु पुटितं कृत्वा नवलक्षं जपेत् सुधीः ।।२६।।
युद्धे विजयमाप्नोति स एव साधकोत्तमः ।
कुलस्त्रीयोनिमध्ये तु धूमामन्त्रं लिखेत् पुनः ।।२७।।
अष्टसहस्रं जपेद्धीमान विचरेद्धि महीतले ।
युद्धे विजयमाप्नोति शत्रून् नाशयते क्षणात् ।।२८।।
कुलस्त्री भालमूले च लिखेन्मन्त्रं सुलक्षणम् ।
तं दृष्ट्वा साधकः श्रेष्ठः पञ्चलक्षं जपेत् पुनः ।।२९।।
स भवेद्देवतातुल्यो नरेन्द्रश्च न संशयः ।
मातृकापुटितं कृत्वा धनदामन्त्र मुत्तमम् ।।३०।।
द्विसहस्रं जपेत् सुधीः सर्वराज्येश्वरो भवेत् ।
विचरन्ति यथा देवास्तथैव साधकोत्तमः ।।३१।।
महापद्मस्य मध्ये तु अष्टपत्रं लिखेत्ततः ।
अष्टपत्रस्य मध्ये तु बगलामन्त्रकं पुनः ।।३२।।

कुलस्त्री के योनि के मध्य धूमावती-मन्त्र को लिखकर, उसके बाद उस मन्त्र को शक्तिबीज (ह्रीं; क्लीं) के द्वारा पुटित कर, सुधी साधक नव लक्ष मन्त्र-जप करें ।।२६।।

इस प्रकार कार्य करने पर, साधक युद्ध में जय-लाभ करता है। कुल-स्त्री के योनि के मध्य धूमावतीमन्त्र को लिखकर, धीमान साधक अष्टोत्तर सहस्र (मतान्तर में अष्ट सहस्र) धूमावती-मन्त्र का जप करें। इस प्रकार जप करने पर, युद्ध में जयलाभ करता है एवं शत्रुओं को अत्यल्प-काल में ही विनष्ट कर, पृथिवी पर विचरण करता है ।।२७-२८।।

कुलस्त्री के कपाल-मूल में सुलक्षण-मन्त्र को लिखें। उसके बाद उस मन्त्र के प्रति दृष्टि को निबद्ध कर, उस मन्त्र को पञ्च लक्ष संख्यक वार जप करें। वैसा करने पर, वह व्यक्ति देवतातुल्य एवं नृपति बन जाता है। इस विषय में कोई सन्देह नहीं है। मातृकावर्ण से पुटित पर द्विसहस्र (२०००) संख्यक धनदा-मन्त्र का जप करने पर, साधक राज्येश्वर बनकर देवता के समान पृथिवी पर विचरण करता है ।।२९-३१।।

महापद्म के मध्य में अष्टदल को अंकित करें एवं उस अष्टदल के मध्य में बगलामुखी के मन्त्र को लिखें ।।३२।।

हृदये स्थापयित्वा तु जपेत्तु साधकोत्तमः।
सभाक्षोभं नयत्येवमरीन् मर्दयते क्षणात् ।।३३।।
अष्टसहस्त्रं द्विसहस्त्रं नवसहस्त्रं जपेत् सुधी;।
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव सत्यं सत्यं न संशयः ।।३४।।
कामबीजं रमाबीजं हरबीजं महेश्वरि ।
धनदापुटितं कृत्वा दशसहस्त्रं जपेत् सुधीः ।।३५।।
वातस्तम्भं जलस्तम्भं वह्ने; शैत्यं नयेद् ध्रुवम् ।
सुरसुन्दरी महामन्त्रं कलौ पूर्ण फलप्रदम् ।।३६।।
पुटितं शक्तिबीजेन त्रिमासात् परतो ध्रुवम् ।
स्त्रीरूपा सुन्दरी देवी निकटे व्रजति ध्रुवम् ।।३७।।
अनायासेन देवेशि कलौ पूर्णफलप्रदा ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कर्त्तव्यञ्च महेश्वरि ।।३८।।

उसके बाद उस महापद्म को हृदय में स्थापित कर, साधक बगलामुखी-मन्त्र का जप करते रहें। इसप्रकार कार्य करने पर, सभा क्षोभित होता है एवं अत्यल्प काल में ही शत्रु विमर्दित (चूर्णित) हो जाता है ।।३३।।

सुधी साधक बगलामुखी मन्त्र का उक्तरूप से, द्विसहस्त्र, अष्टसहस्त्र या नव सहस्त्र संख्यक बार जप करने पर, निश्चय ही त्रैलोक्य क्षोभित (त्रासित) हो जाता है। यह ध्रुव सत्य है। इस विषय में बिन्दु मात्र भी सन्देह नहीं है ।।३४।।

हे महेश्वरि! कामबीज (क्लीं), रमाबीज (श्रीं), एवं हरबीज (स्वाहा; ह्रां; फट्)—इन बीजत्रय के द्वारा धनदा-मन्त्र को पुटित करके, जप करने पर, सुधी साधक वायु, जल, अग्नि एवं शैत्य को स्तम्भन करने में सक्षम हो जाता है। यह ध्रुव सत्य है। कलियुग में सुर-सुन्दरी महामन्त्र पूर्णफल प्रदान करता है ।।३५-३६।।

तीन महीने पर्यन्त शक्तिबीज (ह्रीं; क्लीं) से पुटित कर सुरसुन्दरी-मन्त्र का जप करने पर, सुरसन्दरी निश्चय ही स्त्री-रूप में साधक के समीप आगमन करती है ।।३७।।

कलियुग में सुरसुन्दरी अनायास फल प्रदान करती है। हे महेश्वरि! इसीलिए सर्वप्रयत्न से सुरसुन्दरी का साधन करें ।।३८।।

रतिसुन्दरी महादेवी रतिबीज-समन्विता ।
अष्टसहस्रं जपेद्देवि तत; सिद्धिं समालभेत् ।।३९।।

(पुरश्चरणकथनम्)—

प्राणहीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः ।
पुरश्चरणहीनस्तु तथा मन्त्रः प्रकीर्त्तितः ।।४०।।
पञ्चाङ्गो पासनञ्चैव पुरश्चरण कर्मणि ।
जपहोमौ तर्पणञ्चाभिषेको ब्राह्मणभोजनम् ।।४१।।
पञ्चाङ्गानि महेशानि साधकानां सुखावहम् ।
महाभिषेकात् पुरुषः सर्वकर्मसु च क्षमः ।।४२।।
महाभिषेकं विना देवि न कुर्यान्मन्त्र चिन्तमम् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन महाभिषेको भवेन्नरः ।।४३।।
शरत्काले महादेवि कर्त्तव्यं मन्त्र चिन्तनम् ।
नवम्यान्तु समारभ्य यावच्च नवमी भवेत् ।।४४।।

हे देवि! रतिवीज (क्रीं; स्त्रीं) के द्वारा रतिसुन्दरि मन्त्र को पुटित करके अष्टोत्तर सहस्र (मतान्तर में अष्ट सहस्र)–संख्यक जप करने पर, साधक मन्त्रसिद्धि-लाभ करता है ॥३९॥

(अनन्तर पुरश्चरण-विधि का कथन कहा जा रहा है)—

जिस प्रकार प्राणहीन देह कोई भी कर्म को करने में सक्षम नहीं होता है, उसी प्रकार पुरश्चरणहीन मन्त्र भी प्राणहीन है—ऐसा कहा जाता है ॥४०॥

पुरश्चरण-कार्य में 'उपासना' पाँच अंगों या अंशों में विभक्त है। यथा—जप, होम, तर्पण, अभिषेक एवं ब्राह्मण भोजन ॥४१॥

हे महेशानि! यह पञ्चाङ्ग-साधन साधक के लिए सुखावह होता है। महाभिषेक सम्पन्न होने पर, साधक सभी प्रकार के कार्य-सम्पादन का अधिकार लाभ करता है ॥४२॥

हे देवि ! महाभिषेक के बिना कदापि मन्त्र-साधना की बात सोचें भी नहीं अतः साधक सर्वप्रयत्न से महाभिषेक-कार्य को सम्पन्न करावें अर्थात गुरु के निकट से महाभिषेक को ग्रहण करें ॥४३॥

हे देवि! शरतकाल में मन्त्र का पुरश्चकरण-कार्य करें। एक नवमी से आरम्भ कर परवर्त्ती नवमी तिथि पर्यन्त अनवरत मन्त्र-जप करते रहें। इसे 'पुरश्चरण' कहते हैं।।४४॥

तावज्जपः प्रकर्त्तव्यः पुरश्चरण मिष्यते ।
चतुर्थ्यान्तु समारभ्य यावच्च नवमी भवेत् ।।४५।।
तावज्जपः प्रकर्त्तव्यः स खण्डः परिकीर्त्तितः ।
सप्तम्यान्तु समारभ्य यावच्च नवमी भवेत् ।।४६।।
अष्टम्यान्तु समारभ्य यावच्च नवमी भवेत् ।
तावज्जपादिकं कुर्यात् सर्वकामार्थसिद्धये ।।४७।।
शुभकाले समारभ्य मन्त्र साधन माचरेत् ।
चन्द्रसूर्यग्रहे चैव कर्त्तव्यं मन्त्र चिन्तनम् ।।४८।।
ग्रासाद्विमुक्ति पर्यन्तं जपेन्मन्त्र मनन्यधीः ।
सूर्योदयं समारभ्य यावत् सूर्योदयं भवेत् ।।४९।।
तावज्जपं प्रकुर्वीत सर्वकामार्थ सिद्धये ।
सूर्योदयं समारभ्य यावदस्तो भवेत् पुनः ।।५०।।
तावज्जपं प्रकुर्वीत मन्त्र साधन माचरेत् ।
चन्द्रोदयं समारभ्य यावच्चन्द्रान्तरं भवेत् ।।५१।।
तावज्जपं प्रकुर्वीत मन्त्र साधन माचरेत् ।
रात्रौ ताम्बूलपूरास्यो जपेन्मन्त्रमनन्यधीः ।।५२।।

चतुर्थी तिथि से आरम्भ कर परवर्त्ती नवमी तिथि पर्यन्त अनवरत किये जाने वाले जप को 'खण्डजप' नाम से अभिहित किया जाता है। सप्तमी तिथि से (पाठान्तर-मत में सप्तमी या अष्टमी तिथि से) आरम्भ कर परवर्त्ती नवमी तिथि पर्यन्त अनवरत किये गये जप के द्वारा पुरश्चरण करने पर, सर्वकामार्थ की सिद्धि होती है। ।।४५-४७।।

सर्वदा शुभ काल में मन्त्र के पुरश्चरण का सम्पादन करें। चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण के समय मन्त्र-जप करके ग्रहण-पुरश्चरण करें। ।।४८।।

ग्रहण के आरम्भकाल से ग्रहण-मुक्ति पर्यन्त अनन्यमना होकर मन्त्र-जप करें। यहीं ग्रहण-पुरश्चरण है। एक दिवस के सूर्योदयकाल से आरम्भ कर परवर्ती दिवस के सूर्योदयकाल पर्यन्त किये गये जप के द्वारा पुरश्चरण करने पर, समस्त कामार्थसिद्धि का लाभ होता है। सूर्योदयकाल से आरम्भ कर सूर्यास्तकाल पर्यन्त जप कर, मन्त्र का पुरश्चरण-साधन करें। अथवा चन्द्र के उदयकाल से आरम्भ कर, चन्द्र के अस्तगमनकाल पर्यन्त अनवरत मन्त्र-जप कर, मन्त्र का पुरश्चरण करें। साधक रात्रिकाल में ताम्बूलपूर्ण-मुख होकर, अनन्यचित्त होकर जप करते रहें।।४९-५२।।

हविष्याशी जपेल्लक्षं दिवा चैव सुरेश्वरि ।
रहस्यञ्च महेशानि कलौ पूर्ण फलप्रदम् ।।५३।।
शक्तिं गृहीत्वा देवेशि जपं कुर्यात् समाहितः ।
रहस्यं कथितं देवि त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।।५४।।
शोधनं शक्तिमन्त्रेण शक्तिश्चैव महेश्वरि ।
समयाञ्च गृहीत्वादौ जपं कुर्यात् समाहितः ।।५५।।

इति कुब्जिकातन्त्रे पार्वती - परमेश्वर संवादे नवमः पटलः ।।९।।

।।ग्रन्थः समाप्तः।।

हे सुरेश्वरि! दिवाभाग में हविष्याशी होकर एक लक्ष मन्त्र-जप करें। हे महेशानि ! कलियुग में ये समस्त गुप्त अनुष्ठान पूर्णफल को प्रदान करता है।।५३।।

हे देवेशि! साधक शक्ति को ग्रहण कर समाहित-चित्त से जप करते रहें। हे देवि! आपको मैंने त्रिलोक में दुर्लभ रहस्य को बताया है।।५४।।

हे महेश्वरि! जिस शक्ति को ग्रहण करके जप करें, सर्वाग्र में उसे शक्तिमन्त्र के द्वारा शोधन करें। उसके बाद समयाचार पद्धति के अनुसार जप करें।५५।।

कुब्जिकातन्त्र में पार्वती-परमेश्वर संवाद में नवम पटल समाप्त ।।९।।

।।ग्रन्थ समाप्त।।

हमारे प्रमुख प्रकाशन

1.	मन्त्रमहोदधिः (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 435/-
2.	मन्त्रमहोदधि (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) भाग - 1 मूल्य 1000/- भाग -2 मूल्य 1000/-	
3.	हिन्दी मन्त्रमहार्णव (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) देवी खण्ड 500/-, देवता खण्ड 450/-, मिश्र खण्ड 250/-	
4.	श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् (मूलमात्र) पूर्वार्द्धम् 400/- उत्तरा0 प्रथम 300/- उत्तरा0 द्वितीय 300/-	
5.	कुलार्णव तन्त्र (मूल एवं अंगेजी अनुवाद)	मूल्य 275/-
6.	नारदपञ्चरात्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 400/-
7.	श्रीकृष्णयामलमहातन्त्रम् (मूलमात्र)	मूल्य 200/-
8.	धनदारतिप्रिया तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 10/-
9.	मंत्रयोग संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 100/-
10.	श्यामा रहस्यम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 250/-
11.	बृहत तन्त्रसार (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) कृष्णानन्द आगम वागीश कृत भाग -1 मूल्य 500/- भाग - 2 मूल्य 600/-	
12.	सप्तशतीसर्वस्वम्	मूल्य 150/-
13.	श्रीनीलतंत्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 150/-
14.	भूतडामर महातन्त्रम् (पाताल खण्ड) मूलमात्र	मूल्य 100/-
15.	शिवस्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित)	मूल्य 75/-
16.	शाक्तानंद तरङ्गिणी	मूल्य 200/-
17.	वाकेश्वरीमतम् (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित)	मूल्य 100/-
18.	कौलज्ञाननिर्णय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित)	मूल्य 200/-
19.	डामर तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद)	मूल्य 100/-
20.	डामर मन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 75/-
21.	मन्त्र रामायण (मूल एवं हिन्दी अनुवाद	मूल्य 75/-
22.	कामरत्नतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 100/-
23.	अद्भुत रामायण (महर्षि वाल्मीकि कृत)	मूल्य 75/-
24.	वङ्गसेन संहिता (मूल हिन्दी अनुवार एवं परिशिष्ट सहित)	मूल्य 750/-
25.	हारीत संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 300/-
26.	भूतडामर तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 75/-
27.	आगम तत्वविलास (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	शीघ्र
28.	योनितन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)	मूल्य 75/-

हमारे प्रमुख प्रकाशन

1. मन्त्र महोदधि (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 435/-
2. हिन्दी मन्त्र महार्णव (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)
   मूल्य : देवी खण्ड 500/-, मूल्य देवता खण्ड 450/-, मूल्य : मिश्र खण्ड 250/-
3. कुलार्णव तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) मूल्य : 200/-
4. सप्तशतीसर्वस्वम् (नानाविधिसप्तशतीरहस्यसंग्रहः)
   पण्डितसरयू प्रसादेन संगृहीतः मूल्य : 150
5. शिवस्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 75/-
6. वामकेश्वरीमतम् (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 75/-
7. कौलज्ञाननिर्णय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 200/-
8. डामर तंत्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 100/-
9. डामर तंत्र (मूल [illegible] अनुवाद) मूल्य : 75/-
10. मन्त्र रामायण (मूल [illegible] हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 75/-
11. कामरत्नतंत्रम् (मू[illegible] अनुवाद) मूल्य : 100/-
12. अद्भुत रामायण [illegible] कृत) मूल्य : 50/-
13. भूत डामर तंत्र [illegible] हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 75/-
14. शाक्तानन्द[illegible] हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 200/-
15. गणेशसहस्र[illegible] मूल्य : 50/-
16. सामुद्रिक शास्त्रम् [illegible] भावार्थबोधिनी टीका सहित) मूल्य : 50/-
17. श्यामारहस्यम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 250/-
18. श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् (मूलमात्र) तीन खण्डों में
   पूर्वार्द्ध मूल्य : 300/-, उत्तरार्द्ध प्रथम मूल्य : 300/- उत्तरार्द्ध द्वितीय मूल्य : 300/-
19. श्री नीलतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 150/-
20. मन्त्रयोग संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 100/-
21. भूत डामर महातन्त्रम् (पाताल खण्ड) मूलमात्र मूल्य : 100/-
22. योनितन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 75/-
23. नारद पंचरात्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 300/-
24. वृहत् तन्त्रसार (मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित) दो खण्डों में
   प्रथम खण्ड मूल्य : 500/-, द्वितीय खण्ड मूल्य : 500/-
25. Mantra Mahodhadhi (Text in Nagari Script & Text in Roman with English Translation)
   Price : Vol. I Rs. 900/-, Price : Vol. II Rs. 900/-
26. Encyclopedia of Yoga Rs. 300/-
27. Encyclopedia of Indian Erotices Rs. 250/-
28. Dictionaries of Tantrasastra Rs. 150/-
29. आगम तत्त्व विलास (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) शीघ्र
30. श्रीकृष्ण यामल महातन्त्रम् (मूल मात्र) मूल्य : 200/-
31. शनि स्तोत्रावली मूल्य : 5/-